कर्मभूमि

वर्ष ८ अंक १९

मई २०१५

चौदहवें हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

शिक्षक/शिक्षिका विशेषांक

WE COULDN'T BE MORE EXCITED ABOUT THIS MESSAGE

Yes, WE ARE GROWING

Yes, WE ARE HIRING

Even in this economy

To Find Out How You Can Bring Your Career to LIFE Contact me Today

Thevan Theivakumar, CLF®

Sr. PARTNER, New Jersey Sales Office

(732) 744-3763

ntheivakuma@ft.newyorklife.com

www.ThevanTheivakumar.com

EOE.M/F/D/V

WE STAND STRONG

JOIN OUR TEAM

NEW YORK LIFE

454352 CV

8/19/2013

The Company You Keep®

New York Life Insurance Company 399 Thornall Street, 7th Floor Edison, NJ 08837

www.hindiusa.org 1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335

रचिता सिंह (शिक्षण तथा प्रशिक्षण संयोजिका) - 609-248-5966

राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619

अर्चना कुमार (सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजिका) - 732-372-1911

माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429

सुशील अग्रवाल (पत्रिका 'कर्मभूमि' संयोजक) - 908-361-0220

शिक्षण समिति

रचिता सिंह - कनिष्ठा १ स्तर

जयश्री कलवचवाला - कनिष्ठा २ स्तर

मोनिका गुप्ता, भाविका चुग - प्रथमा १ स्तर

कविता प्रसाद, सन्जोत ताटके - प्रथमा २ स्तर

अनुभा अग्रवाल, चेतना मालारप्पू - मध्यमा १ स्तर

पुनीता वोहरा - मध्यमा २ स्तर

अर्चना कुमार - मध्यमा ३ स्तर

सुशील अग्रवाल - उच्च स्तर १

अनुजा काबरा - उच्च स्तर २

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429)

शिवा आर्य (908-812-1253) सुनील दुबे (732-570-3258)

साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)

मॉन्टगोमरी: अद्वैत/अरुणधति तारे (609-651-8775)

पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535)

दीपक लाल (732-428-7340)

ईस्ट ब्रंस्विक: मायनो मुर्मु (732-698-0118)

वुडब्रिज: अर्चना कुमार (732-372-1911)

जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)

प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)

लॉरेंसविल: योगिता मोदी (609-785-1604)

ब्रिजवॉटर: सुरुचि नायर (908-393-5259)

चैरी हिल: देवेंद्र सिंह (609-248-5966)

चैस्टरफील्ड: शिप्रा सूद (609-920-0177)

होमडेल: (877-HINDIUSA)

मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)

नॉरवॉक: बलराज सुनेजा (203-613-9257)

नॉर्थ ब्रंस्विक: गीता टंडन (732-789-8036)

स्टैमफर्ड: पंकज झा (732-930-3162)

अन्य समितियाँ

अमित खरे – वेब साइट

अद्वैत तारे – वीडियो

सुनीता गुलाटी – पुस्तक वितरण

हम को सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

संपादकीय

किसी भी राष्ट्र की भाषा एक अत्यंत प्रभावशाली वाहक बनकर उस राष्ट्र की सभ्यता तथा संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी संजोए रखने में सदैव ही सहायक सिद्ध हुई है। जब भी कोई समाज भाषा से दूरियाँ बनाता है तो अंततः उस समाज की सभ्यता और संस्कृति भी कहीं खो जाती है। भले ही आधुनिकता ने हमें अंग्रेज़ी में अनुवादित ग्रंथ, पुराण दे दिए हों परंतु अपनी मातृभाषा के बिना प्रतिपल भाव का अभाव रहता है और रहेगा। अपनी संस्कृति के संरक्षण हेतु सर्वप्रथम अपनी भाषा से जुड़े रहना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी महत्व को समझते हुए तथा हिन्दी भाषा के प्रति अथाह, अत्यंत प्रेम ने ही हिन्दी यू.एस.ए. संस्था को सदैव प्रेरित किया है। अमेरिका में हिन्दी भाषा केवल बोलने तथा पढ़ने तक ही सीमित न रह जाए इसीलिए हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने सदा ही हिन्दी भाषी और अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों को हिन्दी में सोचने तथा लिखने के लिए प्रेरित किया है और समय-समय पर दृढ़ निर्णय लेते हुए विशिष्ट, सबल तथा प्रशंसनीय कदम उठाए हैं।

कर्मभूमि पत्रिका इन्हीं दृढ़ निर्णयों का परिणाम है जो हिन्दी भाषा सीखने वाले बच्चों को अपनी छोटी और पावन लेखनी द्वारा अपने विचार और सोच को सभी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने का एक स्रोत है। यदि हम केवल समाज के प्रतिष्ठित हिन्दीविद् कवियों या लेखकों की कविताओं अथवा लेखों का संकलन करें तो हिन्दी भाषा की किसी भी पत्रिका को प्रकाशित करना बहुत ही सरल कार्य है परंतु हमारा उद्देश्य अमेरिका में हिन्दी सीख रहे विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना है ताकि उन्हें भाषा से जुड़े रहने की निरंतर प्रेरणा मिलती रहे। इसी प्रयास के अभियान को बिना कोई विराम देते हुए कर्मभूमि पत्रिका के इस अंक को हमने शिक्षक विशेषांक के रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत किया है।

इस पत्रिका की विशेषता को ध्यान में रखते हुए अधिकतर लेख हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं में पढ़ रहे बच्चों, शिक्षकों तथा युवक कार्यकर्ताओं (जो हिन्दी यू.एस.ए. से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं और अब सहायक शिक्षक के रूप में अपनी स्वयंसेवाएँ प्रदान कर रहे हैं) द्वारा रचित हैं।

पत्रिका पढ़ते समय आप "हिन्दी यू.एस.ए. की शिक्षिकाएँ" लेख के माध्यम से भलिभाँति जान पाएँगे कि इस संस्था की सभी स्वयंसेवी शिक्षिकाएँ किस प्रकार तन-मन से अपनी निःस्वार्थ, निष्काम सेवाएँ अपनी भाषा को समर्पित करते हुए कार्य कर रही हैं। "शिक्षक कैसे हों" लेख हमें अपने अंतर्मन का मंथन करने पर बाध्य कर देता है तथा हमें समाज के उत्थान के लिए प्रेरित करता है। "एक साक्षात्कार" लेख युवा कार्यकर्ताओं की क्षमताओं का साक्षात् उदाहरण प्रस्तुत करता है। "प्रणम्य शिक्षक" लेख अद्भुत सुंदरता से शिक्षक के गुणों और उतरदायित्वों को दर्शाता है। अमेरिका में हिन्दी भाषा की शिक्षा के महत्व को विभिन्न प्रकार से अलग-अलग लेखों द्वारा अपने विचार प्रकट करते हुए स्वयंसेवियों ने व्यक्त किया है और "बुराई" जैसे संक्रमण की पीड़ा भी प्रस्तुत की है। युवा कार्यकर्ताओं ने अपने हिन्दी कक्षा के अनुभव, विद्यार्थी से शिक्षक तक की यात्रा, भारतीय संस्कृति इत्यादि को बहुत अच्छे से अपनी नन्ही लेखनी में उतारा है। कहीं होनहार छात्रों की उपलब्धियाँ, कहीं बच्चों की कक्षा परियोजनाएँ, कविता का महत्व लेखों द्वारा अपने मन के भावों को प्रस्तुत किया है।

"हिन्दी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रमों", कविता प्रतियोगिता, दीपावली मेला इत्यादि नामक लेखों से आपको भलीभाँति आभास होगा कि किस प्रकार यह संस्था निरंतर बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों में आत्मविश्वास, भाषा-संस्कृति के प्रति कर्तव्यनिष्ठा, उतरदायित्व और प्रेम के भाव को निरंतर जगाए रखने के लिए अपने अथक् प्रयासों से वर्ष भर कार्यक्रमों का आयोजन करती रहती है।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप पत्रिका को पढ़ने के उपरांत अपनी प्रतिक्रियाएँ नीचे लिखे पते पर अवश्य भेजिए, ये बच्चों के लिए बहुत ही प्रेरक सिद्ध होंगी। आपके द्वारा भेजी गई आलोचनाओं तथा समालोचनाओं की हिन्दी यू.एस.ए. को सदैव प्रतीक्षा रहेगी, परंतु आपसे आशा है कि आप अपनी क्षमतानुसार भाषा, संस्कृति और समाज के उत्थान को समर्पित अथक् प्रयासों के दैवीय कार्य में अपना योगदान अवश्य दीजिए। इस यज्ञ की सम्पूर्णता में आपका सहयोग अतुलनीय तथा सराहनीय होगा।

धन्यवाद

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर १४ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अतिसुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। न्यूजर्सी में हिन्दी यू.एस.ए. की १७ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। विभिन्न ९ स्तरों में हिन्दी की कक्षाएँ चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

कर्मभूमि

लेख–सूची

१४ - शिक्षक कैसे हों? १६ - वुडब्रिज दीपावली मेला - एक झलक
१७ - एडिसन पाठशाला कविता प्रतियोगिता
१८ - प्रणम्य शिक्षक १९ - बुराई २० - हमारी मातृभाषा हिन्दी
२१ - कविताएँ, दोस्त और आदमी २२ - शिक्षा का महत्व
२४ - रेत भरी मुट्ठी २५ - शिक्षक
२६ - वैश्विक नागरिकता - चित्रकला एक माध्यम
२७ - भारत यात्रा - एक अनुभव २८ - एक साक्षात्कार
३२ - क्षणिकाएँ ३३ - क्यों आवश्यक है हिन्दी की शिक्षा अमेरिका में
३४ - जिसका काम उसी को साजे ३५ - लौट आया है मेरा बचपन
३६ - हिन्दी की मेरे जीवन में वापसी, गुरु और मार्गदर्शक
३७ - एक इंच मुस्कान ३८ - गुरु ३९ - होली के उपलक्ष्य में
४१ - ब्रह्म ऋषि गुरुवानंद स्वामी जी
४२ - एक अभिभावक के विचार
४३ - साउथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला
४४ - हिन्दी यू.एस.ए. में मेरा अनुभव तथा हिन्दी सीखने के लाभ
४५ - मेरा हिन्दी अनुभव ४६ - भारतीय संस्कृति
४८ - हमारे होनहार विद्यार्थी
५० - हिन्दी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम
५३ - हिन्दी यू.एस.ए. की शिक्षिकाएँ
५४ - कविता पाठ प्रतियोगिता
५६ - युवा स्वयंसेवक सम्मान समारोह ५७ - आज़ादी
६२ - एडिसन मध्यमा-२ पाठशाला ६४ - पिस्कैटवे पाठशाला प्रथमा–१
६८ - एडिसन पाठशाला उच्च स्तर-१ ७२ - त्रिमूर्ति, भाषा
७३ - अगर मेरे पंख होते ७४ - जीवन: मनुष्य का सबसे बड़ा गुरु
७५ - अमेरिका में भारत ७७ - दिवाली और रंगोली
७८ - विद्यार्थियों के विचार
८० - स्टीव जॉब्स की भारत यात्रा
८१ - भारत का महत्व, भारतीय संस्कृति
८२ - हमारे त्योहार
८३ - विद्यार्थी, स्वयंसेवक, शिक्षक - एक अनुभव
८४ - गणतंत्र दिवस समारोह
८५ - दिवाली का भव्य उत्सव
८६ - मोन्टगोमेरी पाठशाला - दीवाली २०१४
८७ - बसंत, एक शहीद की दीवाली
८८ - मिनयन और मनुष्य
९० - कविता पाठ के लाभ
९२-११० पाठशालाओं के लेख

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

अर्चना कुमार

रचिता सिंह

माणक काबरा

राज मित्तल

मुख्य पृष्ठ रचना

सोंधायनी मुर्मू - स्नातक २०१०

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

Hindi USA
70 Homestead Drive
Pemberton, NJ 08068

NEW JERSEY GENERAL ASSEMBLY

ASSEMBLYMAN RAJ MUKHERJI
33RD LEGISLATIVE DISTRICT (HUDSON COUNTY)

COMMITTEES:
BUDGET
COMMERCE AND ECONOMIC DEVELOPMENT
LABOR

Mailing:
PO BOX 1, JERSEY CITY, NJ 07303

District Offices (reply to Jersey City):
433 PALISADE AVENUE, JERSEY CITY, NJ 07307
80 RIVER STREET, 2ND FLOOR, HOBOKEN, NJ 07030

TEL: (201) 626-4000
FAX: (201) 626-4001

E-MAIL: ASMMUKHERJI@NJLEG.ORG
FACEBOOK.COM/MUKHERJI
TWITTER.COM/RAJMUKHERJI

March 12, 2015

Dear Volunteers of HindiUSA,

नमस्ते ।

I write to offer my most heartfelt congratulations on the fourteenth year of your Hindi Mahotsav. As we are a nation defined by our beautifully diverse population, the work performed by your selfless volunteers in sharing the Hindi language and Indian Bhartiya culture is essential and laudable. Through your efforts and outreach, more than 4,000 students in New Jersey now have access to the educational and cultural enrichment provided by HindiUSA.

As the only South Asian legislator in our state and the second in state history, I am proud to witness regularly the significant contributions made by the Indian American community in every aspect of life in the United States, economically, culturally, academically, and otherwise. Given the impact of Indian Americans on New Jersey and the entire country, it is unsurprising to learn that the Hindi language is rapidly growing in popularity in New Jersey and surrounding states. By providing access to multifaceted educational programs, HindiUSA is quickly closing the cultural gap between the world's oldest and largest democracies—the United States and India. Indeed, it is said that volunteers aren't paid not because they are worthless, but because they are priceless. HindiUSA is proving that adage every day.

Thank you for your unwavering commitment to language education and enrichment in New Jersey and throughout the United States. Your work encourages students to become more globally conscious citizens. It is only with the continued dedication of volunteers like yourselves that we are able to say New Jersey is not only one of the most diverse states in the nation, but that it is a state that harnesses and embraces its diversity. May your hard work, perseverance, and devotion to the expansion of cultural awareness continue long into the future.

Respectfully yours,

Raj Mukherji

RAJ MUKHERJI
Assemblyman, New Jersey State Legislature

विदेश मंत्री एवं
प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री
भारत

Minister of External Affairs &
Overseas Indian Affairs
India

सत्यमेव जयते

सुषमा स्वराज
Sushma Swaraj

19 मार्च, 2015

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हिन्दी यू.एस.ए संस्था द्वारा चौदहवें हिंन्दी महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही इस शुभ अवसर पर "कर्मभूमि" पत्रिका का प्रकाशन का भी किया जाएगा। विदेश में इस प्रकार के आयोजनों के माध्यम से प्रवासी भारतीयों में भारतीय संस्कृति सहित संस्कारों का समावेश, आपसी एकता एवं प्रेम का भाव सुदृढ़ होगा।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री वहां रहने वाली हमारी नयी पीढ़ी को भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं सभ्यता से अवगत कराने में सहायक सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

सुषमा स्वराज
सुषमा स्वराज

Ministry of External Affairs : 172, South Block, New Delhi-110011 Tel : 91-11-23011127, 23011165 Fax : 91-11-23011463
Ministry of Overseas Indian Affairs : 1001, Akbar Bhawan, Chanakyapuri, New Delhi-110021
Tel : 91-11-26876836, 24676840 Fax : 91-11-24197985

भारत का प्रधान कौंसल
न्यू यार्क

सत्यमेव जयते

CONSUL GENERAL OF INDIA
NEW YORK

संदेश

यूनान-व-मिस्र-व-रूमा सब मिट गए जहाँ से
अब तक मगर है बाक़ी नाम-व-निशाँ हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-ज़माँ हमारा
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोसिताँ हमारा

इक़बाल साहेब ने शायद उन दिनों यह नहीं सोचा होगा कि उनका यह तराना देश के बाहर भी उतना ही कामयाबी हासिल करेगा जितना की आजादी की जंग के वक़्त हर लब पर मौजूद था।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता है कि भारत से हजारों किलोमीटर दूर हमवतन न्यू जर्सी राज्य में अमरीकी बंधुओं के साथ "हिंदी यू एस ए" गत चौदह वर्षो से "हिंदी महोत्सव" का आयोजन कर अमरीका और कनाडा के कई शहरों को हिंदी के माध्यम से भारत और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से लोगों को परिचित करा रहा है।

हिंदी हमारी आत्मा है और जहाँ हम हैं, वहां हमारी आत्मा है, वहां आत्मा की आवाज़ है - वहां वतन से चिट्ठियां आती हैं, वहां से भी हमारे अमरीकी भारतीय अपनों से मिलने, अपनी माता की खोज खबर लेने जाते हैं, देश की चिंता करते हैं और गाते हैं, गुनगुनाते हैं, और यह सब हिंदी में ही होता है।

मैं "हिंदी यू एस ए" के सभी सदस्यों का हिंदी के प्रति आदर देखकर बहुत उत्साहित हूँ और सभी का सम्मान करता हूँ। आशा है कि आप सभी हिंदी के मशाल को सदा प्रज्वलित रखेंगे।

शुभ-कामनाओं सहित।

ज्ञानेश्वर एम मुले
कौंसल जनरल

3 East 64th Street • New York, N.Y. 10065
Tel: General (212) 774-0600 • Consul General's Office (212) 879-9473 • Direct: (212) 879-7888
E-mail: cg@indiacgny.org Fax: (212) 988-6423

जनरल (डा.) विजय कुमार सिंह
पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम (से.नि.)
GEN. (DR) VIJAY KUMAR SINGH
PVSM, AVSM, YSM (Retd)

सत्यमेव जयते

विदेश एवं प्रवासी भारतीय कार्य राज्य मंत्री
सांख्यिकी एवं कार्यक्रम
कार्यान्वयन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
भारत सरकार, नई दिल्ली
Minister of State for External Affairs &
Overseas Indian Affairs
Minister of State (Independent Charge)
for Statistics and Programme Implementation
Government of India, New Delhi

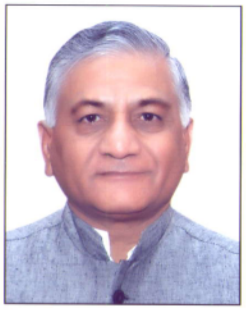

संदेश

हम सभी भारतीयों के लिए यह अत्यंत गर्व का विषय है कि अमेरिका में कार्यरत संस्था हिंदी यू.एस.ए. अपनी सफलता के 14 वर्ष पूर्ण कर रही है तथा 16 और 17 मई, 2015 को अपना चौदहवां हिंदी महोत्सव मनाने जा रही है।

मैं हिंदी यू.एस.ए. के सभी स्वयंसेवकों को इस महोत्सव के लिए अनेकानेक शुभकामनाएं तथा बधाई देता हूं और हिंदी यू.एस.ए. के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए हिंदी यू.एस.ए. के स्वयसेवक जो कार्य कर रहे हैं उस पर प्रत्येक भारतवासी को गर्व होना चाहिए।

शुभकामनाओं सहित

[जनरल (डॉ.) वी. के. सिंह]

विश्व हिंदी सचिवालय
WORLD HINDI SECRETARIAT
भारत सरकार व मॉरीशस सरकार की द्विपक्षीय संस्था

A bilateral organization of the Government of India and the Government of Mauritius.

संदेश

अमेरिका स्थित स्वयंसेवी संस्था हिंदी यू.एस.ए. के चौदहवें हिंदी महोत्सव के अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से हार्दिक बधाई। इस उपलक्ष्य में हिंदी यू.एस.ए. की पत्रिका 'कर्मभूमि' द्वारा संदेश पहुँचाने का अवसर प्राप्त कर विश्व हिंदी सचिवालय गौरवांवित हो रहा है।

विश्व भर में स्थापित स्वयंसेवी हिंदी शैक्षणिक व प्रचारक संस्थाओं ने पूरी मेहनत और लगन के साथ भाषा-प्रचार और शिक्षण में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान दिया है जिससे एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी की पहचान सुदृढ़ हो पाई है। ये स्वयंसेवी हिंदी संस्थाएँ वैश्विक स्तर पर हिंदी के सर्वाधिक समर्पित राजदूत सिद्ध हुई हैं। विगत कई वर्षों के अपने समर्पित योगदान से हिंदी यू.एस.ए. भी विश्व स्तर पर इस प्रकार की संस्थाओं की अग्रणी पंक्ति में अपना स्थान बनाने में सफल हुई है। इसके लिए हिंदी यू.एस.ए. के संस्थापकों, संचालकों और इसके प्रत्येक अभियान की सफलता में योगदान देने वाले सभी हिंदी प्रेमियों को साधुवाद।

भारतीय मूल के लोगों की लगातार बढ़ती संख्या के साथ-साथ व्यापार, राजनीति, मनोरंजन, शिक्षा, साहित्य आदि के क्षेत्र में भारत व हिंदी भाषा के बढ़ते वैश्विक महत्व के चलते अमेरीकी महाद्वीप हिंदी की वैश्विक सम्भावनाओं के लिए अत्यंत ही उर्वरा 'कर्मभूमि' है। परंतु यह उर्वरता अपनी सम्भावनाओं के अनुपात में ही मेहनत, उद्यम, सृजनात्मकता, नवीनीकरण व गतिशीलता आदि की अनिवार्यता बढ़ा देती है। पूर्व प्रकाशनों, पाठ्य पुस्तकों, बच्चों को रामायण की कथा सिखाने के अनूठे प्रयोगों, शिक्षण से लेकर महोत्सव व कवि सम्मेलन आदि के आयोजन आदि में हिंदी यू.एस.ए. इन अनिवार्यताओं की पूर्ति करती हुई दिखाई देती है। यह पूर्णतः सराहनीय है।

हिंदी यू.एस.ए. के कार्यों को देखकर यह विश्वास सुदृढ़ होता है कि विश्व हिंदी सचिवालय व विश्व हिंदी समुदाय के प्रत्येक सदस्य की आशाओं की पूर्ति में साथ देने के लिए एक अत्यंत ही विश्वसनीय सहयोगी उपस्थित है। प्रार्थना है कि आपकी संस्था इसी प्रकार सफलता और सार्थकता की नई ऊँचाइयों को छूती रहे।

चौदहवें हिंदी महोत्सव तथा 'कर्मभूमि' के प्रकाशन के लिए पुनः हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ।

गंगाधरसिंह सुखलाल
कार्यवाहक महसचिव

31 मार्च, 2015, मॉरीशस

स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड, मॉरीशस/Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius • वेबसाइट/Website : www.vishwahindi.com

दूरभाष : (230) 676-1196 •• फ़ैक्स / Fax : (230) 676 – 1224 •• ईमेल/email: info@vishwahindi.com

TOWNSHIP OF LAWRENCE

Office of the Mayor
clewis@lawrencetwp.com

2207 LAWRENCE ROAD

Tel. No. 609.844.7000
Fax No. 609.844.0984

LAWRENCE TOWNSHIP, NEW JERSEY 08648

April 13, 2015

Dear Hindi USA,

It is with great pleasure that I congratulate your organization and all of its volunteers for 8 years of continued community service and outreach programs to spread the Hindi language and culture to the Lawrence Township community.

With your seventeen schools and 4000 volunteers offering immersion programs through classes and festivals throughout the Tri-State area, I know that your organization is working hard to build strong leaders of your students and to bridge the gap between our two cultures.

There is no doubt that your future goals will be met with great success.

Sincerely,

Cathleen M. Lewis
Mayor

CML/ksn

Summer Tutoring Programs 2015

(Starting from July 13)

Scholar Tutorials® …. A trusted name in Summer Programs

SAT® 20 SESSION PROGRAM

For students of Grades 10, 11 & 12 who want to full coverage of Math, Critical Reading & Writing Sections of the SAT® – Focus on Strategies for Score Improvement.

SAT® 2400 PROGRAM

For students of Grades 10, 11 & 12 who are targeting near perfect scores with Focus on Strategies for Score Improvement.

MATH SUMMER PROGRAMS

For students of Grades 2 to12 who want to get a Jump-Start on the next year's math program and be steps ahead of the competition – Special Programs for Pre-Algebra, Algebra 1, Geometry, Algebra 2, Trigonometry, Pre-Calculus, Calculus, Statistics – Regular, Honors & AP (Advanced Placement) levels.

ENGLISH SUMMER PROGRAMS

For students of Grades 2 to12 who want to sharpen their vocabulary and reading comprehension skills with Weekly Tests. Understanding Parts of Speech, improving Sentence Structure, Essay Writing Practice, tips and strategies on how to improve Persuasive Writing, Speculative Writing & Expository Writing Skills.

SCIENCE SUMMER PROGRAMS

For students of Grades 2 to 12 who want to improve their understanding of Science Content and build their Science Vocabulary – Special One-on-One tutoring for SAT® Subject Tests for Physics, Chemistry & Biology.

SCHOLAR® TUTORIALS

Try it. Solve it. MASTER IT.

"We Teach. We Explain."

Two Convenient Locations!

Fairfield Center:
124 Little Falls Road, 2nd Floor Suite 201
Fairfield, NJ 07004 • **973-808-0085**

Edison Center:
1628 Oak Tree Road, 2nd Floor Suite 6,
Edison, NJ 08820 • **732-744-9555**

Dr. Baldev is actively involved in educational research projects in New Jersey. His research interests are students' transition from arithmetic to algebra and professional development programs for math teachers. The title of his dissertation thesis was "Urban Students Developing Algebraic Ideas in an Informal After-School Program" which helped him to understand the learning needs of students outside of school. He has over 28 years of teaching experience and has taught 15,000+ students worldwide.

All tutoring programs formulated by

Prashant Baldev

(Ed.D., Doctor of Education, Rutgers University)

® Test names and other trademarks are the property of the respective trademark holders. None of the trademark holders are affiliated with Scholar Tutorials.

e-mail: pbaldev@scholartutorials.com • Website: www.scholartutorials.com

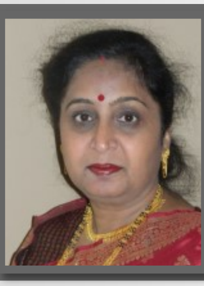

शिक्षक कैसे हों?

रचिता सिंह

भारतीय संस्कृति में शिक्षक को आदर की दृष्टि से देखा जाता है तथा अभिभावक और विद्यार्थी ये मानकर चलते हैं कि हमारा शिक्षक एक मृदुल स्वभाव वाला, अच्छे चरित्र वाला और ज्ञानी व्यक्ति है जो विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा देगा। इस बात से यह ज्ञात होता है कि शिक्षण का कार्य एक अत्यधिक जिम्मेदारी का है। समाज, शिक्षकों से अनेकानेक अपेक्षाएँ रखता है और विद्यार्थी शिक्षकों को अपना आदर्श मानते हैं। शिक्षक भविष्य के निर्माता होते हैं।

इस लेख में मैं उन शिक्षक-शिक्षिकाओं के बारे में बात करना चाहूँगी जो पेशे से नहीं अपितु आवश्यकतानुसार समाजसेवा की दृष्टि से संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिए स्वयंसेवी शिक्षक बन गए हैं। यह सत्य है कि ये शिक्षक कोई वेतन नहीं लेते और विद्यार्थियों के साथ सप्ताह में केवल कुछ ही समय बिताते हैं, परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि इनका महत्व और जिम्मेदारी कुछ कम है। कुछ लोग स्वयंसेवी कार्यों को बहुत गंभीरता से नहीं लेते और न ही उसे लंबे समय तक कर पाते हैं, परंतु कुछ लोग छोटे-छोटे कार्यों में तन-मन-धन से लगकर उसे सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचा देते हैं तथा अनेक परिवारों को लाभ पहुँचाते हैं। आइये देखें कि एक अच्छे स्वयंसेवी शिक्षक बनने के लिए शिक्षक में किन बातों का होना आवश्यक है।

- सर्वप्रथम जो कार्य आप कर रहे हैं उसके प्रति आपकी निष्ठा होनी चाहिए। जिस संस्था से आप जुड़े हैं उससे और उसके उद्देश्य में आपकी निष्ठा और आस्था होनी चाहिए।
- जो विषय आप पढ़ा रहे हैं आपको उसका सही ज्ञान होना चाहिए तथा समय-समय पर पुस्तकें पढ़कर, आख्यान सुनकर, प्रशिक्षण द्वारा अपने ज्ञान को बढ़ाते रहना चाहिए। ऐसा करने से आपका आत्मविश्वास बढ़ता है।
- अपने अनुभवों के साथ-साथ दूसरों के अनुभवों से सीखें, गलतियाँ करने से बचें और अपने कार्य को बेहतर बनाएँ।
- अपने अनुभव तथा ज्ञान को छुपाकर न रखें। उन्हें दूसरों के साथ अवश्य बाँटें। आपस में बात करने से बड़ी-बड़ी समस्याओं के हल ढूँढे जा सकते हैं।
- शिक्षकों को लकीर का फकीर नहीं होना चाहिए। उन्हें सदैव ही नई-नई और अलग-अलग पद्धतियों से पढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने से विद्यार्थियों की रुचि बनी रहती है।
- स्वयंसेवी शिक्षकों का व्यवहार विद्यार्थियों और अभिभावकों के साथ नम्रता, प्रेम, सद्भावना, निष्पक्षता तथा सहनशीलता से भरा हुआ होना चाहिए।
- यदि शिक्षकों को बाल-मनोविज्ञान और शिक्षा-मनोविज्ञान जैसे विषय पढ़ने और समझने का अवसर मिले तो चूकना नहीं चाहिए। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण शिक्षक के विद्यार्थी से सम्बंध, व्यवहार

कुशलता और क्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है।

- एक अनुशासित शिक्षक ही अनुशासित विद्यार्थियों को तैयार कर सकता है। इसके लिए शिक्षक का अपने कार्य पर सदैव समय पर नियमित पहुँचना बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।
- एक अच्छा शिक्षक वह है जो विषय में कमजोर या विषय में रुचि न रखने वाले विद्यार्थी को भी विषय में पारंगत कर दे तथा उस विषय में उसकी रुचि को जाग्रत कर दे।
- अच्छे शिक्षक मेहनत करने से नहीं घबराते। कई बार विद्यार्थियों को अच्छी बातें, अच्छे काम, अच्छी आदतें तथा अच्छे संस्कार देने और सिखाने के लिए आपको अतिरिक्त मानसिक और शारीरिक मेहनत करनी पड़ती है, परंतु मेहनत का फल सदैव मीठा होता है, अत: फल की चिंता न करें। सदैव ही कुछ नया और अलग करने का प्रयास करें।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से आप विद्यार्थियों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं। अत: जब भी आपको अवसर मिले इसका लाभ उठाएँ। अपने अंदर की छुपी हुई या सुप्त पड़ी क्षमता को जानें। प्रयोग करने से या हारने से कभी न डरें।
- शिक्षक नैतिक शिक्षा की धुरी होते हैं। जो शिक्षक अपने शिक्षण में नैतिक शिक्षा और विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण को सम्मिलित रखते हैं। ऐसे शिक्षकों के साथ विद्यार्थी चुंबक की तरह जुड़कर कार्य करते हैं। ऐसे शिक्षकों के लिए विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के दिल में अत्यधिक आदर की भावना होती है।

आइये इन बातों को पढ़कर हम अपना आत्म-अवलोकन करें तथा अपने अंदर शिक्षक के गुणों को बढ़ाने का प्रयास करें।

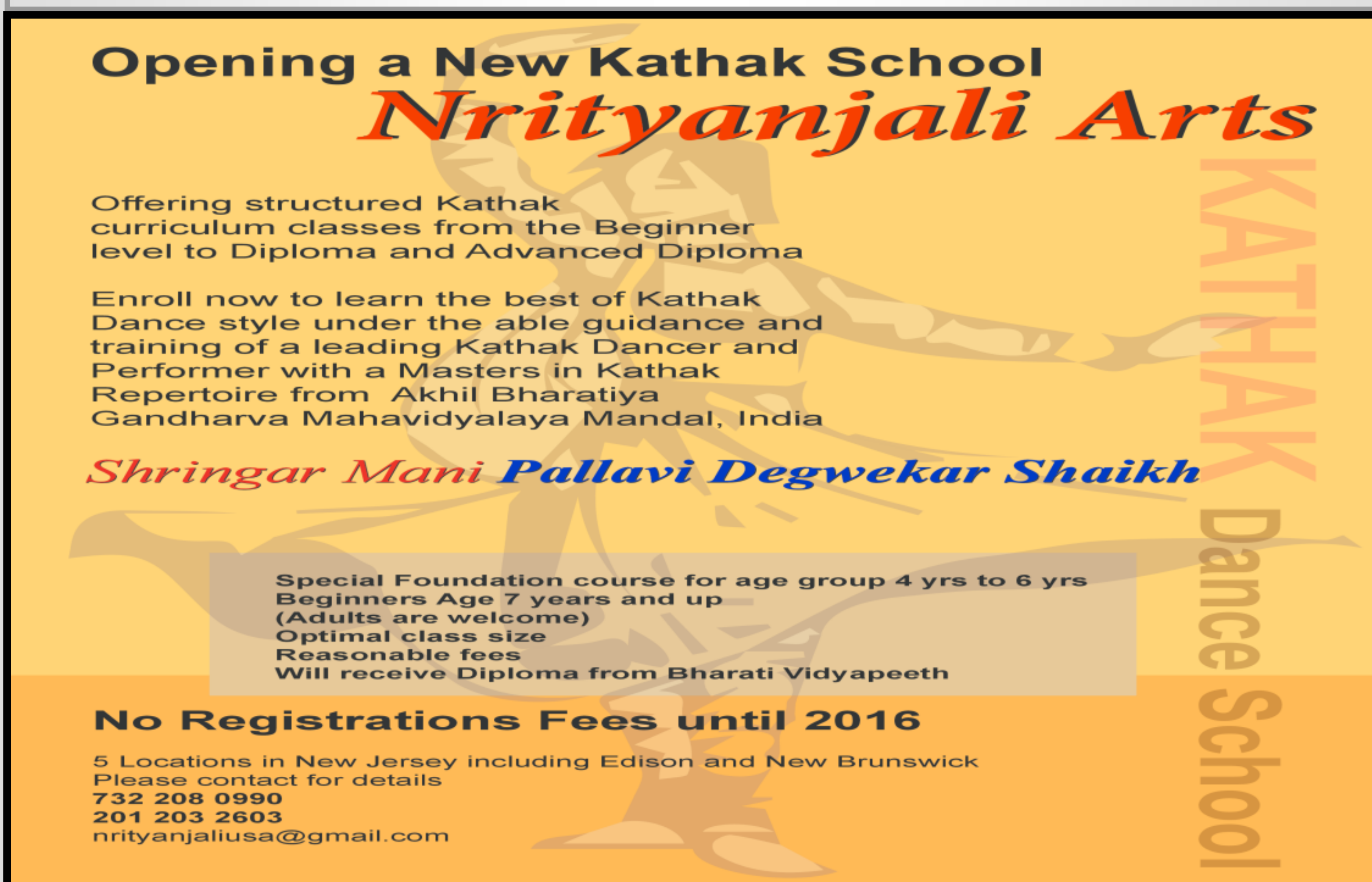

वुडब्रिज दीपावली मेला - एक झलक

वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला अपने स्वयंसेवी शिक्षकों और कार्यकर्ताओं के साथ पिछले ९ वर्षों से विभिन्न ९ स्तरों में हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति की सेवा में अपना सहयोग देती आ रही है। प्रतिवर्ष नए-नए अभिभावकों का जुड़ना उनका सहयोग ही इस पाठशाला में प्राण फूंके हुए है, तथा इस पाठशाला की प्राण वायु हैं। सभी शिक्षिकाएँ हिन्दी यू.एस.ए. के सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहभागी बनती आ रही हैं। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी सत्र २०१४-२०१५ में भी सभी शिक्षिकाओं ने दिवाली त्योहार मनाने का निश्चय किया किंतु बिल्कुल नए तरीके से। यदि इस उत्सव को दीपावली मेला कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। सभी शिक्षिकाओं ने अपने-अपने स्तर के बच्चों के साथ मिलकर विभिन्न परियोजनाएँ बनाईं। सभी ने अपने-अपने स्तरानुसार दुकानें सजाईं। दुकानों में बच्चों द्वारा बनाए गए दिये, शुभकामना पत्र, रंगोली के थाल, नकली पटाखे सजाए। सभी दुकानों में विभिन्न खेलों का आयोजन करना भी सभी शिक्षिकाओं की योजना में सम्मिलित रहा। कहीं गोल्फ, कहीं रिंग डालकर अपने मनपसंद इनाम जीतना। सभी बच्चों और अभिभावकों ने बहुत ही उत्साह से इस उत्सव में भाग लिया। बच्चों को प्रेरणा स्वरूप उपहार भी भेंट किए गए। इन दुकानों की मुख्य रूप से विशेषता थी कि वे बच्चों द्वारा बनाए गए सामान से सजाई गईं थीं, तथा बच्चों द्वारा ही चलाई जा रही थीं। वुडब्रिज पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चों ने बहुत ही उत्साहित होकर दुकानदार होने का काम सम्हाला। बच्चों को अधिक से अधिक हिन्दी भाषा व्यावहारिक रूप से बोलने के लिए यह बहुत ही सफल तथा अच्छा प्रयोग रहा। उच्च स्तर के बच्चों ने हिन्दी की कहानियों की दुकान लगाई। विभिन्न खेल खेलने के लिए बहुत ही कम पैसे रखे गए जो बच्चों को उपहार के रूप में भेट कर दिए गए। दिवाली मेला में रौनक देखते ही बनती थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो आज वुडब्रिज पाठशाला में ही दिवाली है। खेल खेलने और दुकानों के बाद दीप प्रज्ज्वलन और गणेश वन्दना से सांस्कृतिक कार्यक्रम आरम्भ हुए। ये कार्यक्रम शिक्षिकाओं के सहयोग से बच्चों द्वारा तथा बच्चों के लिए ही आयोजित किए गए थे। कार्यक्रमों की उद्घोषणा का उतरदायित्व भी शिक्षिकाओं के निर्देशन में बच्चों को सौंपा गया। इसीलिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए भी बच्चों को अपने आप कार्यक्रम तैयार करने का सुझाव दिया गया था। बच्चों ने नृत्य, श्लोक, गीत प्रस्तुत करते हुए अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के उपरांत अब बारी थी रात्रि भोज की, जी हाँ अब रात्रि भोज के बिना हमारा मेला कैसे सम्पूर्ण हो सकता था। भोजन की व्यवस्था सभी अभिभावकों के आर्थिक सहयोग से की गई थी। अभिभावकों, बच्चों और शिक्षकों का एकत्रित सफल प्रयास रहा यह दीपावली मेला, जिसमें एक परिवार की भाँति सभी ने अपना-अपना सहयोग दिया। ऐसी आशा है कि वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला इसी प्रकार अनवरत रूप से हिन्दी भाषा और संस्कृति के प्रसार में अपना सहयोग देती रहेगी।

माणक काबरा

एडिसन पाठशाला कविता प्रतियोगिता

फरवरी १५, २०१५

एडिसन में रात से ही बर्फ गिर रही थी और मेरी नींद उड़ी हुई थी कि कहीं एडिसन पाठशाला की हिंदी कविता प्रतियोगिता स्थगित न करनी पड़े। हिम्मत करके सभी को विपत्र कर दिया कि एडिसन पाठशाला की कविता प्रतियोगिता अपने निर्धारित समय अनुसार होगी और एक लाइन भी लिखी "कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती" (आप सभी पहुँचने की पूरी कोशिश करिये)।

मंदिर के बाहर सड़क पर ३-४ इंच बर्फ गिरी होने के बाद भी कार्यक्रम अपने निर्धारित समय सवेरे ११ बजे आरंभ हुआ और १९० बच्चों ने इसमें

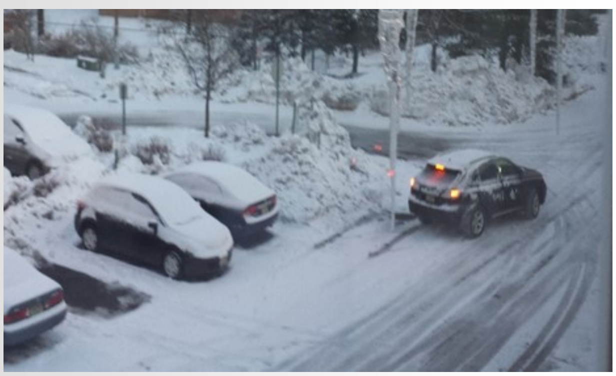

भाग लिया, जो संख्या पिछले वर्ष की तुलना में अधिक थी। उच्च स्तर की व्यवस्था के साथ हलके-फुलके नाश्ते और गरमा-गरम चाय की भी व्यवस्था थी। हर वर्ष की तरह कार्यक्रम का आरम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं मंत्रोच्चारण से हुआ। मंदिर में होने के कारण मंत्रोच्चारण पुजारी जी ने करा। इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी। सभी स्वयंसेवक और शिक्षक-शिक्षिकाएँ कार्य स्थल पर अपना उतरदायित्व सम्भाले हुए थे।

इस बार कार्यक्रम में सहयोग देने के लिए कुछ अभिभावक भी आगे आए। उनके सहयोग से पूरा कार्यक्रम सुचारू रूप से चलता रहा। हम उनका बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं। पहले चरण में कनिष्ठ-१, कनिष्ठ-२ और प्रथमा-१ को रखा जिसमें ३ निर्णायक गण थे, और दूसरे चरण में बाकी के स्तर जिसमें भी निर्णय करने के लिए ३ निर्णायक गण निर्धारित किए गए। सभी प्रतियोगियों ने बहुत ही अच्छी कविताएँ सुनाईं और विशेषकर हमारे बड़े स्तर के बच्चों ने अपनी कविताओं से तो सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

प्रणम्य शिक्षक

वागीशा शर्मा

वागीशा शर्मा (१६ वर्ष), इंदौर, पर जैसे साक्षात माँ सरस्वती की कृपा बरसती है। मात्र ५ वर्ष की आयु से वागीशा ने विभिन्न मंचों पर अपने व्याख्यानों एवं हास्य कविताओं की प्रस्तुतियों का जो अनवरत सिलसिला आरंभ किया, वह आज तक कायम है। संस्कृत, उर्दू, अंग्रेज़ी के शब्दों, मुहावरों एवं काव्यंशों को हिन्दी भाषा के साथ पिरोकर वागीशा जब मंचों पर अपनी वाणी कला की प्रस्तुति देती है तो हज़ारों मंत्रमुग्ध श्रोतागण तालियाँ बजाने पर विवश हो जाते हैं।

जो महत्त्व किसी वृक्ष के निर्माण में उसके बीज का है। जो महत्त्व दीपक के आलोक के निर्माण में उसकी लौ का है। जो महत्त्व सागर के निर्माण में पानी की एक-एक बूंद का है, वही महत्त्व एक उत्तम इंसान के निर्माण में उसके शिक्षक का है। शिक्षक वह है जो अपने शिष्य में सर्वस्व गुणों का ख़ज़ाना उड़ेल देता है। इसीलिए तो शिक्षक को भारत की संस्कृति में साक्षात् परब्रह्म कहा गया है।

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वराः।
गुरूर्साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवै नमः।।

गोस्वामी तुलसीदास जी अपने अमृत ग्रंथ रामचरितमानस में चौपाई के माध्यम से गुरु अर्थात् शिक्षक के संदर्भ में लिखते हैं-

गुरु बिनु भवनिधि तरई न कोई।
जो बिरंची शंकर सम होई॥

यानी शिक्षक के बिना तो ब्रह्मा और शिवजी के समान शक्तिशाली भी इस संसार सागर के पार नहीं जा सकते हैं। हालाँकि प्राचीन गुरु और आधुनिक शिक्षक में अंतर है परंतु मूल कर्म तो दोनों का एक ही है, अपने विद्यार्थी का सर्वतोमुखी विकास करना। उन्हें बेहतर मनुष्य बनाना जो उच्च नैतिक भावनाओं से भरा हुआ हो।

शिक्षक शब्द जिन तीन अक्षरों से मिलकर बना है उसमें "शि" शिक्षा का बोध कराता है। "क्ष" क्षमा का और "क" कर्तव्य का बोध कराता है। मतलब स्पष्ट है कि शिक्षा वही श्रेष्ठ है जो क्षमा अर्थात् विनय तथा कर्तव्य दोनों में छात्रों को निपुण कर देती है। विश्व गुरु अर्थात् Teacher of the World का खिताब भारत देश को प्राप्त है। विश्व को पहला अक्षर ॐ भारत ने दिया। पहली भाषा संस्कृत भारत ने दी। गणित का शून्य भारत ने दिया। दशमलव भारत की देन है। नक्षत्रों की गणना करना भारत के आर्यभट्ट ने सिखलाई। संगीत की सरगम भारत ने दी। दुनिया की पहली किताब "ऋग्वेद" भारत में लिखी गई।

कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय संस्कृति में शिक्षकों का योगदान और उनका सम्मान सूर्य की रोशनी की तरह उज्ज्वल है। आज के मोबाइल, इंटरनेट और टैब के समय में भी शिक्षकों की उपयोगिता कतई कम नहीं हुई है बल्कि पहले से अधिक बढ़ गई है, क्योंकि आधुनिक संचार की ये मशीनें मानव को भावनाएँ और संवेदनाएँ नहीं दे सकती हैं। किसी मासूम की मौत पर ये मशीनें आँसू नहीं बहा सकती हैं। पर एक सच्चा शिक्षक अपने शिक्षार्थी को दयावान बनाता है।
ऐसा इंसान किसी दूसरे के दुख-दर्द में उसकी सहायता के लिये दौड़ पड़ता है। लोग कहते हैं भला एक शिक्षक क्या कर सकता है? मैं कहती हूँ एक शिक्षक अपने विद्यार्थी के विचारों को बदल सकता है और जो विचारों को बदल सकता है

शेष पृष्ठ २८ पर...

बुराई

मुक्ता कापसे जी मोनरो हिन्दी पाठशाला में प्रथमा-२ की शिक्षिका हैं तथा इन्होंने इलैक्ट्रोनिक्स में इंजीनियरिंग की हुई है।

एक बार ढूँढने निकली मैं बुराई
क्यूँ बिखरी है हर तरफ दुखों की सियाही
मुझको है आस उजालों की
क्यूँ जंजीर बनी है सवालों की
"उसने यह कहा तो मैं क्यूँ नहीं?"
"उसने वो किया तो मैं क्यूँ नहीं?"
आख़िर कब टूटेगी यह श्रृंखला?
मिल जाए कहीं मुझको अगर ये कहीं
घोंट दूँ मैं इस बुराई का गला
पता नहीं किस धरम की है ये
जाने कौन जात की है ये बला
कैसे ढूँढू पर मैं इस बुराई को
कौन है आखिर यह बुराई... मर्द या औरत?
नाम से तो जनाना लगती है...नहीं है लेकिन कोई गैरत
तब तो औरत नहीं.. हो न हो वो है मर्द
क्या जाने उसका दूसरा नाम भी तो है दर्द
रूप रंग का अंदाज़ा लगाना तो है मुश्किल
हर पेशे में नज़र आती है शिक्षक, वैद्य या हो वकील
सोचा किसी से पूछ लूँ मैं उसका पता
हर कोई था जानता उसको पर फिर भी थी वो लापता
फिर थक हार कर नज़र मैंने उठाई
पूछा, "भगवान जी ,क्या आपसे भी खास है बुराई?"
तभी शांत सुरीली आवाज़ ये आई ...
"बेटा , वो तो है एक काली परछाई,
बुराई ना तो मर्द है ना औरत..
ये है उसमें जिसने बेच खाई हो गैरत!!!
उसका ना कोई धरम है ना कोई जात
वो है उसमें जिसने किया किसी का घात
सोती है वो हर किसी में
पर जाग उठती है जब आए कठिनाई
यूँ तो कोई बुरा नहीं
पर घिर गया वो नियत जिसकी ललचाई
ख़त्म करनी हो गर तुम्हें बुराई
ज्ञान और धैर्य का दीप जलाओ हर कोई
उजाले हो वहाँ, जहाँ मान में हो सच्चाई
फिर ना टिक पाएगी किसी बुराई की परछाई
तो आओ मिटा के जाती, वर्ण और भेदभाव की लड़ाई
द्वेष, हिंसा छोड़ के बनाए सुंदर सी एक दुनिया नई..

प्रणम्य शिक्षक...

वह दुनिया में कुछ भी कर सकता है। क्योंकि वे विचार ही होते हैं जो संसार को बनाते-बिगाड़ते हैं। शिक्षक विचार क्रांति का वाहक है। शिक्षक चतुर्दिक निर्माण की नींव है, शिक्षक प्रेरणा है, उसका प्रणेता भी है। तभी तो चाणक्य को कहना पड़ता है– शिक्षक सामान्य नहीं है बन्धुओं, इसकी गोद में निर्माण और प्रलय दोनों पलते हैं।

रोशन करें जीवन को वो दिनमान है शिक्षक, सब अलंकारों से बढ़कर एक सम्मान है शिक्षक,
शिक्षक नहीं है किसी मौसम की रिमझिम, सारा आलम बदल दे वो सैलाब है शिक्षक ||

मैं यू.एस.ए की हिन्दी की ई-पत्रिका कर्मभूमि के माध्यम से दुनिया के हर शिक्षक को प्रणाम करती हूँ।

सुनीता कलापटापू

हमारी मातृभाषा हिन्दी

प्रभा अग्रवाल

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा" जब मोहम्मद इक़बाल ने लिखा तो कुछ सोच कर ही लिखा होगा। बचपन में जब यह गीत हम पाठशाला में गाते थे तो हिन्दुस्तान व हिन्दी का महत्व नहीं समझते थे। पर अब बड़े होकर न्यू जर्सी में रहते हुए इसका महत्व अच्छी तरह समझते हैं और इस सोच के साथ जी भी रहे हैं।

हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा होने के साथ-साथ एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा भी है। विभिन्न देशों में भी हिन्दी बोली जाती है जैसे कि फिजी, सूरीनाम, मॉरिशस इत्यादि। संख्या बल के हिसाब से हिन्दी विश्व में दूसरे स्थान पर है। वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी, चीनी भाषा को पीछे छोड़, संसार की सबसे अधिक बोले जाने वाली अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय भाषा होगी। गांधीजी ने भी हिन्दी की गरिमा को पहचान, स्वतंत्रता आन्दोलन के समय पर कहा था कि कांग्रेस की सारी कार्यवाही हिन्दी में होगी ताकी वह भारत के कोने-कोने में लोगों तक पहुँच सके।

समय चाहे जितनी भी तेज़ी से बदले, पर हिन्दी का ज्ञान होना ज़रूरी है। हिन्दी सीखने से हम भारत से जुड़ सकते हैं और अपनी संस्कृति को भी सरलता से समझ सकते हैं। हमारे मुख्य ग्रंथ रामायण, महाभारत, गीता इत्यादि हिन्दी में पढ़ सकते हैं और वेदों की महिमा समझ सकते हैं। हिन्दी भाषा ने सभी भारतीयों को एक सूत्र में बाँधा है और आपस में प्रेम की भावना जागृत की है।

हिन्दी सीखनी कितनी आवश्यक है, इस पर अन्तहीन व्याख्यान किया जा सकता है, किन्तु हम संक्षेप में यही कहेंगे कि हमें बहुत गर्व है कि हम हिन्दी की शिक्षिकाएँ हैं, हमारे बच्चे हिन्दी पढ़ना-लिखना जानते हैं, और इसी कारण हमारा न जाने कितने देशवासियों से परिचय हुआ है और आज हमारा उनके साथ उठना-बैठना है। यह लेख हम इस पंक्ति से समाप्त करेंगे–

"हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा"

प्रभा और सुनीता

शिक्षिकाएँ उच्चस्तर -१

लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला

शिक्षा जैसा दान नहीं, शिक्षा से बड़ा कोई काम नहीं

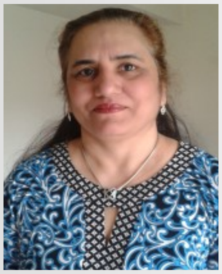

कविताएँ

मेरा नाम कविता ठाकुर है। हिन्दी यू.एस.ए. में शिक्षिका के रूप में यह मेरा प्रथम वर्ष है। हिन्दी के अलावा मैं संगीत और कला में रुचि रखती हूँ। आशा करती हूँ कि आगे भी हिन्दी यू.एस.ए. में अपना योगदान देते रहूँगी।

प्रेरणा

फूलों को महकते देखा
चिड़िया को चहकते देखा

चंदा को चमकते देखा
सूरज को दमकते देखा

झरना बहता, बहती नदियाँ
लहलहाती रहती खेतियाँ

देते प्रेरणा हमको सारे
करुणा में है जीवन प्यारे

माता-पिता

उँगली पकड़ के चलना सिखाया
गिरने उन्हें देना ना कभी

जीवन में हँसना सिखाया
रोने उन्हें देना ना कभी

बोलना हमें सिखाया
कड़वे बोल ना बोले कभी

हम पर राखी अपनी छत्रछाया हमेशा
माता-पिता के चरणों में है स्वर्ग हमेशा

दोस्त और आदमी

मेरा नाम अमित अग्रवाल है। मैं विल्टन कनेक्टिकट में अपनी पत्नी गरिमा और २ प्यारे बच्चों के साथ रहता हूँ। कविताओं और ग़ज़लों में मुझे काफी समय से रुचि है और कभी-कभी कुछ लिख कर भी अपना शौक़ पूरा करता हूँ। हम हिन्दी यू.एस.ए. से पिछले ५ वर्षों से जुड़े हुए हैं और पहली बार मैं अपनी स्वरचित कविता कर्मभूमि में प्रकाशित होने हेतु भेज रहा हूँ।

रोज सुबह दोस्त की तरह मिलते हैं ,
शाम होते-होते फिर आदमी से क्यों बन जाते हैं।
समझता सब है यह दिल, फिर भी,
सुबह होते ही फिर दोस्त से क्यों बन जाते हैं।

कुछ तो असर है दुनियादारी का,
कुछ रहता होगा फिर नादानी का,
कि तनहाई का साथ देने को,
फिर हम आदमी से क्यों बन जाते हैं।

जबान की गर्मी अभी तक ठंडी नहीं हुई है,
आँखों का गुबार भी अभी तक बुझा नहीं है,
कि अपने मन की सुनाने को,
फिर हम दोस्त से क्यों बन जाते हैं।

शिक्षा का महत्त्व

श्वेता सीकरी

सुश्री श्वेता सीकरी एडिसन, न्यू-जर्सी में रहती हैं तथा भारत में हरियाणा प्रान्त की रहने वाली हैं। श्वेता जी, मर्क फारमेसुएटीकल, औषध निर्माण करने वाले बहुराष्ट्रीय संस्थान में कंप्यूटर विश्लेषक के पद पर कार्यरत हैं। कार्य में व्यस्त होने के उपरांत भी लेखन कार्यों में काफी रुचि रखती हैं। कर्मभूमि के पूर्वांकों में भी इनकी सुन्दर कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

क्या शिक्षा देना केवल बड़ों का काम है? नहीं ऐसा नहीं है। शिक्षा लेने और देने की कोई आयु नहीं होती। याद रखिये कि एक नवजात शिशु जो अपने माँ बाप को सिखा सकता है, वह कोई स्कूल नहीं सिखा सकता, और जो माँ बाप अपने बच्चों को संस्कार दे सकते हैं, वह कोई स्कूल नहीं दे सकता। बच्चा चाहे कितना भी बड़ा हो जाए, अपने माँ बाप से सारी उम्र सीखता रहता है। ऐसी ही कहानी है एक ऐसी लड़की की जिसने बताया कि हम कहीं से कुछ भी सीख सकते हैं।

काव्या नाम की एक लड़की थी। वह बहुत ही सीधी-सादी थी। किसी से बात नहीं करती थी। बस अपने काम से काम रखती थी। स्कूल जाती, अपना काम करती, वापस घर आ कर स्कूल का काम समाप्त करती। उसकी ज़्यादा सहेलियाँ भी नहीं थी। वह स्कूल में केवल एक, दो लड़कियों से बात करती थी। उसके माता-पिता ने कई बार उसे कहा कि बात किया करो, लेकिन वह तो अपनी दुनिया में रहती थी। ऐसा नहीं था कि अपनी दुनिया में रह कर काव्या अच्छे संस्कारों वाली नहीं थी। बड़ों का आदर करना, उनका कहना मानना सब करती थी। किसी को उससे कोई शिकायत नहीं थी। पर हाँ वह सबसे बात नहीं करती थी। अच्छे संस्कारों के साथ-साथ उसे चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता था। सारा दिन अपने कमरे में बैठ कर चित्र बनाती या उनमें रंग भरती रहती थी।

स्कूल में उसके अध्यापकों को उसके बारे में पता था, इसलिये वे उससे कुछ ज़्यादा नहीं पूछते थे। एक बार काव्या के स्कूल में गणित का एक नया अध्यापक आया। उसे काव्या की कक्षा भी पढ़ानी थी। यह अध्यापक बहुत सख्त था। पहले ही दिन उसने सबसे सवाल पूछने शुरू कर दिये। बच्चों को अध्यापक ज़्यादा अच्छा नहीं लगा। सारे बच्चे उससे डर रहे थे। पहले दिन तो काव्या की बारी नहीं आई, लेकिन अगले दिन ही उस अध्यापक ने काव्या से गणित के प्रश्न पूछे। अपने न बोलने वाली आदत से मशहूर काव्या परेशान हो गयी कि क्या करे? वह चुपचाप खड़ी हुई और अध्यापक को देखने लगी। लेकिन अध्यापक ने भी ठान ली थी कि वह काव्या से सवाल का जवाब पूछ कर रहेगा। जब काव्या को लगा कि आज अध्यापक उससे सवाल पूछ कर रहेगा, तो वह चुपचाप आगे गयी और श्यामपट पर अपने सवाल का जवाब लिख आई। जवाब सही था। अध्यापक ने उसे धन्यवाद किया और दूसरे बच्चे से सवाल पूछने लगा।

उस दिन अध्यापक जब अपने घर गया तो यही सोचता रहा कि काव्या बोली क्यों नहीं? अपने विचारों में खोया हुआ अध्यापक बैठा ही था कि

उसकी १० वर्षीय बेटी आई। अपने पिता को इस तरह खोया हुआ देख कर उसने पूछा कि क्या बात है? उसके पिता ने अपनी बेटी को सारी बात बताई। उसकी बेटी ने ज़्यादा न सोचते हुए सलाह दी की उसके पिता को बाकी अध्यापकों से भी पूछना चाहिए कि वह क्यों नहीं बोलती? अध्यापक को अपनी पुत्री की बात अच्छी लगी।

दूसरे दिन अध्यापक ने बाकी अध्यापकों से उसके बारे में पूछा। एक ने उत्तर दिया कि उसको बोलने में परेशानी होती है इसलिये वह कम बोलती है। हर शब्द को बोलने में काव्या को बहुत मेहनत करनी पड़ती है इसी कारण से वह सब के सामने बोलने में शरमाती थी। यह सुन कर अध्यापक को बहुत बुरा लगा। घर जा कर अध्यापक ने अपनी बेटी को इस बारे में बताया तो उसने अपने पिता से कहा कि क्या वह हर रोज काव्या के साथ समय बिता सकती है? अध्यापक ने कहा कि वह काव्या के माता -पिता से इस बारे में बात करेगा ।

काव्या के माता-पिता ने अध्यापक को इस बात की अनुमति दे दी कि काव्या अध्यापक के घर उसकी बेटी के साथ खेलने जा सकती है। पहले तो काव्या ने आनाकानी की, फिर माता-पिता के समझाने से एक दिन वह उस अध्यापक के घर गयी। उसे अध्यापक की बेटी के साथ खेलने में बहुत आनंद आया। अब तो हर रोज स्कूल से आने के बाद काव्या को अपनी नई सहेली के घर जाने का मन करता। धीरे-धीरे काव्या में बदलाव आने लगा। उसके माता-पिता भी देख कर बहुत खुश थे कि अब काव्या अपने कमरे में पूरा दिन नहीं रहती। अब वह अपना समय अपनी सहेली और अपने माता-पिता के साथ भी व्यतीत करती है। न केवल माता-पिता बल्कि स्कूल के बाकी अध्यापकों और काव्या की कक्षा के विद्यार्थियों ने भी उसमें बदलाव देखा।

सब सोच में पड़े थे कि ऐसा क्या हो गया कि काव्या इतनी बदल गयी है? एक दिन उनके स्कूल में एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सभी बच्चों को अपने जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं को ऐसे सब के सामने रखना था कि बाकी विद्यार्थी उन घटनाओं से कुछ सीख सकें। काव्या ने भी इसमें भाग लिया। यह पहली बार था कि काव्या किसी प्रतियोगिता में भाग ले रही थी। काव्या के मित्र और अध्यापक बहुत खुश थे। काव्या ने अपनी नई सहेली को ले कर अपने जीवन की घटना सुनाई। उसने सबको बताया कि किस तरह से उसे लगता था कि वह कभी भी किसी से बात नहीं कर सकेगी, और न ही कोई उसको अपनी सहेली बना सकेगा, परंतु उसकी नई सहेली ने उसके इस अंधविश्वास को तोड़ दिया था। जब सबको पता चला कि काव्या में यह बदलाव एक छोटी लड़की के कारण हुआ है तो सब हैरान रह गए। अंत में काव्या ने सबको बस यही कहा कि अध्यापक हमें स्कूल में जो सिखाते हैं उसका उपयोग हम अपनी आने वाली ज़िंदगी में करते हैं, पर जो हम अपने घर-परिवार, अपने मित्रों से सीखते हैं, उसका उपयोग हम हर रोज की ज़िंदगी में करते हैं, इसलिए हमें अपने आप को किताबों के बीच में सीमित हो कर नहीं रखना चाहिए। ज़िंदगी का आनंद लेने के लिए अच्छे दोस्तों का ज़िंदगी में होना बहुत ज़रूरी है। उनसे आप बहुत कुछ सीख सकते हैं और बहुत कुछ सिखा सकते हैं।

ज़िंदगी का आनंद लेने के लिए अच्छे दोस्तों का ज़िंदगी में होना बहुत ज़रूरी है। उनसे आप बहुत कुछ सीख सकते हैं और बहुत कुछ सिखा सकते हैं

सब काव्या की बातें सुन कर बहुत खुश थे। सारे अध्यापक यही सोच रहे थे कि हमने ऐसा क्यों नहीं सोचा। उस दिन के बाद से सभी बच्चे एक दूसरे के साथ ज़्यादा समय व्यतीत करने लगे। अब काव्या को सब जानते थे और काव्या भी सबके साथ हँस-बोल कर रहती थी।

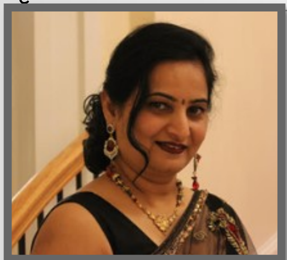

रेत भरी मुट्ठी

मैं, रचना दुबे, एडिसन पाठशाला में मध्यमा-३ की अध्यापिका हूँ। मेरी यह कविता मेरे पापा को समर्पित है। यह कविता उन सबकी भावनाओं का प्रदर्शन है जो अपने माता या पिता को या तो खो चुके हैं या हर समय उन्हें खोने के डर में जीते हैं। सुमित्रा नंदन पंत जी ने सच ही कहा है:

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान,
निकल कर नैनों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान।

जिंदगी उस रेत की तरह
जिसे मुट्ठी में बाँधे रखना नामुमकिन
ये कब हाथ से फिसली पता ही नहीं।
सभी ने अपने हाथ पसार इसे रोकना चाहा
पर कब इसने रुकना चाहा
चल पड़ी कभी नदिया की धार
तो कभी हवा की फ़ुहार
या तो बह गयी
या फिर उड़ गयी।
न जाने कहाँ जा ऊँचे टीले बनाएगी
या घाटों पर जा नित नये घरोंदे सजाएगी।
क्या कभी इसे हमारी याद आएगी
याद आई भी तो क्या हमें पहचान पायेगी?
अब तो बस रेगिस्तान में एक अजीब सी बदहवासी है
मृगतृष्णा सी जज़ीरे की तलाशी है
आँखों में एक अनकही खामोशी है
तन्हाई में उदासी की सरगोशी है
दिल बेबसी से ढूंढ़ता है खता
ऐ जिंदगी रुक तो ज़रा, जीने की वजह तो बता....

सभी कठिन कार्यों में , एक जो सबसे कठिन है वह है एक अच्छा शिक्षक बनना

शिक्षक

शोभा मेहता जी प्रमाणित पंडिता हैं। शोभा जी बहुत सी स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं। अमेरिका में विवेकानंद कैम्प लगाने में भी अपना सहयोग देती हैं। स्त्रियों व बच्चों की सुरक्षा, उनकी शिक्षा तथा स्थापत्य में बहुत ही प्रबलता से सहायता करती हैं।

शिक्षक, शिष्य और शिक्षा का गूढ़ सम्बन्ध है। विद्यादान अति उत्तम कर्म है। शिक्षा, ज्ञान, विद्या, तीन प्रकार की होती है -

१. अदिति व प्रकृति

इस का ज्ञान सर्वज्ञ है। इस संसार में पेड़ हैं, सूर्य है, धरती, समुद्र आदि प्रभु की रचनाएँ हैं। ये हमारे पहले गुरु हैं। सूर्य हमें अंधकार से प्रकाश की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है, निर्पक्षता व समयानुसार चलना, अचल रास्ता ग्रहण करना सिखाता है। पेड़ तत्पर पथिकों को छाया, फल-फूल देकर निष्काम भाव से दूसरों की सेवा करना दर्शाता है। जल शीतलता, स्वच्छता, समतल रहना बताता है। इसलिए उत्सुक, जिज्ञासु शिष्य बन कर प्रकृति से शिक्षा ग्रहण करो।

२. अनुमति - आज्ञा

अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनो। चौकन्ने रहो। स्वयं को अपना पथ प्रदर्शक बनाओ। दुष्टता को त्यागो और भद्रता को अपने जीवन में अपनाओ। आपका शीश आपके कंधों पर स्थित है और इसमें मन व बुद्धि विराजमान है। इन्हें सन्मार्ग पर चलाओ, सुकर्मों में लीन रहो। अपने आपको अच्छाई, भलाई, प्रेम, उदारता, निडरता व साहस की ही अनुमति दो।

३. सरस्वती

शिक्षक, अध्यापक, आचार्य, वैज्ञानिक, योगी, धर्मात्मा, खेलकूद में दक्ष, सब कलाओं के ज्ञानी सद्गुण संपन्न गुरु व शिक्षक का अनुसरण करो। एक इच्छुक, परिश्रमी, आदरणीय, उत्साही विद्यार्थी बनकर, तन, मन, धन, व बुद्धि से एकाग्रचित्त होकर, ज्ञान की प्राप्ति करो।

ज्ञानवान, स्वस्तिपथ के पथिक, अनुशासनबद्ध, अहिंसक अध्यापक की संगति व शरण से, शिष्य की जीवनयात्रा सफल एवं संपूर्ण होगी। वह सतत् कल्याण के मार्ग पर चलता रहेगा। गुरु बिना गति नहीं। वह मार्ग दर्शक है। वह उचित दिशा दिखाता है। ज्ञान की उच्च से उच्च कोटि या शिखर पर पहुँचने के लिए शिक्षक व शिष्य का गंभीर, विश्वसनीय, आदरणीय व सच्चाई का संपर्क अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

अतः शिक्षक, शिष्य व शिक्षा की त्रिवेणी को मान-सम्मान से संभालो। परिणाम में एक उज्ज्वल, उन्नत, सुख कारक, तथा आध्यात्मिक भविष्य का निर्माण होगा।

रचनात्मक अभिव्यक्ति और ज्ञान में प्रसन्नता जगाना शिक्षक की सर्वोच्च कला है

ऐल्बर्ट आइन्स्टीन

वैश्विक नागरिकता - चित्रकला एक माध्यम

प्रतिभा. पी. राजू

मैं एक कलाकार और कला शिक्षक हूँ। मैंने भारत से १९९८ में ललित कला (पेंटिंग) की डिग्री प्राप्त की है। तब से मैंने विभिन्न शैलियों में चित्रकला का अभ्यास किया है। मैंने कई स्कूलों में एक शिक्षिका के तौर पर काम किया है और अब तक कई छात्रों को ड्राइंग और पेंटिंग का अध्यापन दिया है। मैंने भारतीय पारंपरिक चित्रकला का भी अभ्यास किया है।

एक वैश्विक नागरिक होने के नाते हमें हमारी और दूसरों की संस्कृति का सम्मान करना चाहिए और इसका अर्थ है कि हमें खुले विचारों का होने की जरूरत है। वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लिए यह और भी आवश्यक है, क्योंकि वर्तमान पीढ़ी नौकरी के चलते संसार के हर कोने में जाने के लिए तैयार है और वहाँ की जीवनशैली अपनाने में समर्थ होना सफलता की कुंजी है।

एक चित्रकला (visual art) की शिक्षिका होने के नाते मैं मानती हूँ कि हमें आजकल के विद्यार्थियों में बचपन से ही वैश्विक नागरिकता के गुणों का विकास करने की आवश्यकता है। कोई भी कला नई बातें सीखने का एक मजेदार साधन हो सकती है और नए विचारों के विकास में सहायता करती है। चित्रकला ड्राइंग और पेंटिंग के माध्यम से हम अपने विचारों और अनुभवों की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर दुनिया के देशों के विभिन्न त्योहारों और संस्कृतियों की थीम पर पोस्टर बनाना, नई चीजें सीखने का एक रोमांचक तरीका है।

मैंने आई. बी. (IB - International Baccalaureates) स्कूल में एक शिक्षिका के तौर पर काम किया है, जिस की वजह से मुझे आई. बी. स्कूल की नीतियों को निकटता से समझने का अवसर मिला है। ये नीतियाँ छात्रों और शिक्षकों को एक वैश्विक नागरिक बनने के लिए सहायता करता है। स्कूल की गतिविधियाँ, परियोजनाएँ, संस्कृति, बातचीत और विचारों का आदान-प्रदान विद्यार्थियों को एक दूसरे के प्रति खुले विचारों का होने में बढ़ावा देते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया और भी दिलचस्प हो जाती है। उदाहरण के तौर पर, यदि हम कोई कला और संस्कृति जुड़ी हुई गतिविधि सामूहिक तौर पर कर रहे हैं तो हम बातचीत, ईमेल और स्काइप (Skype) के माध्यम से एक दूसरे के साथ विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। ऐसी गतिविधियों से हमें दूसरों के प्रति परस्पर निर्भरता और जुड़ाव की आवश्यकता का पता चलेगा जो कि स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से परे है। वर्तमान और भविष्य के छात्रों को वैश्विक नागरिकता के गुणों की आवश्यकता है।

वैश्विक नागरिकता को अपनाने की प्रक्रिया भविष्य की चुनौती है। यदि हम वैश्विक नागरिकता की अवधारणा को ठीक रूप से समझ लें तो यह हमारे लिए कई नए मार्ग खोल सकता है। किन्तु नई संस्कृति को अपनाना और साथ ही साथ विरासत का संरक्षण (preserving the heritage) अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती है।

मेरे विचार में निष्पक्षता और समानता हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। हमारी गतिविधियाँ, हमारे विचार और हमारे क्रिया कलाप निष्पक्षता और समानता के नियमों का पालन करें। अधिकारों और

जिम्मेदारियों के बीच सम्बन्ध यह है कि हम अपने अधिकारों का जिम्मेदारी से प्रयोग करें और दूसरों की भावनाओं का भी सम्मान करें। निष्पक्षता और समानता के नियमों का पालन करके हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सबको समान अवसर और हिस्सा मिले। एक दूसरे के अधिकारों और जिम्मेदारियों का सम्मान करके हम इस संसार को जीने के लिए एक बेहतर जगह बना सकते हैं।

मैं मानती हूँ कि एक वैश्विक नागरिकता भविष्य की जरूरत है। सभी क्षेत्रों में रोजगार वैश्विक बन गया है और इसकी वजह से हमें विश्व स्तर पर लोगों से पारस्परिक व्यवहार (interact) करना पड़ता है। एक वैश्विक नागरिक होने के नाते हमें रचनात्मक सोच और सकारात्मक सहयोग की आवश्यकता है।

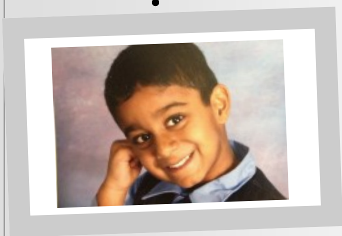

भारत यात्रा
एक अनुभव

मैं केशव माने ईस्ट ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला में प्रथमा-२ में पढ़ता हूँ। कुछ दिन पहले छुट्टियों में मैं भारत यात्रा कर के आया। उधर अपनी बड़ी बहन कपिला और मौसेला भाई आर्यन के साथ पुणे शहर में चित्रकारिता का अध्ययन किया। तरह-तरह के चित्र बनाए। मेरे मामाजी ने वे अखबार में छपवाए। बहुत अच्छा लगा। उन के साथ बहुत से त्योहार भी मनाए, जैसे कि रक्षाबंधन और कृष्ण जन्माष्टमी जोर शोर से मनाई। कुछ अलग सा अनुभव मिला। कुछ बातें मन में घर कर गईं।

१५ अगस्त का दिन कैसे मनाते हैं, ये पहली बार आँखों से देखा। वह क्या होता है ये भी जाना। सुबह-सुबह मैं और मेरी बहन मेरे नानाजी के साथ झंडा वंदन करने के लिए पास की पाठशाला में गए। सारे बच्चे वन्दे मातरम एक सुर में गा रहे थे। फिर बच्चों ने कसरत और कुछ नए कारनामे कर के दिखाए। कई बच्चों को इनाम भी मिले। मेरे लिए ऐसा अनुभव पहली बार था। बच्चों, अध्यापकों और वहाँ जमा हुए सभी लोगों ने धूमधाम से जलसा निकाला। हम हाथ में भारतीय झंडा और छाती पर झंडे का पिन लगाकर घर आये। यह बाते घण्टों फोन पर पापा को बताते मैं थका नहीं।

ऐसे ही गणेश जी का त्योहार मनाया। हर्षोल्लाष से गणेशजी का आगमन, हर दिन मोदक का नैवेद्य हमारे लिए वे दिन ही अलग थे। उसी दिन "इको गणपती" कह के एक कंपनी ने गणेश मूर्ति बनाने की प्रतियोगिता रखी थी।

हम थोड़े सहमे से चले गए और गणेशजी की मूर्ति बनाई। और क्या मैंने सच में मूर्ति बनाई! मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा। बहुत चित्र बनाए थे पर मूर्ति, अहा! पहली बार बनाई। वह मूर्ति लेकर मैं अमेरिका वापिस आया। उसे रंग दिया। हर दिन उसे देखकर मेरा दिन शुरू होता है। गणपति बाप्पा मोरया।

एक साक्षात्कार

मायानो मुर्मू

इस वर्ष २७ फ़रवरी, २०१५ को जब देवेन्द्र जी और रचिता जी के ईस्ट ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला के दौरे पर आने की बात हो रही थी तो मैंने सोचा कि जब वे आएँ तो उनसे बात-चीत करने का कुछ नया तरीका अपनाया जाए, और तब हमें सूझा कि क्यों न हमारे युवा स्वयंसेवक उनसे हिन्दी में कुछ बात-चीत करें और इसको एक साक्षात्कार का रूप दिया जाए। प्रथमा -१ की शिक्षिका उषा पार्थसारथी, युवा स्वयंसेवक आदित्य पार्थसारथी और अभिसार मुर्मू ने ये प्रश्न बनाए। आशा है आप सबको यह पसंद आयेगा।
ईस्ट ब्रंस्विक के युवा स्वयंसेवक [अभिसार मुर्मू और आदित्या पार्थसारथी] ने किया एक साक्षात्कार - देवेन्द्र जी और रचिता जी के साथ।

अभिसार और आदित्य - नमस्ते देवेन्द्र जी और रचिता जी। [देवेन्द्र जी और रचिता जी भी नमस्ते कहते हैं]

अभिसार - क्या आपने कभी सोचा था कि हिन्दी यू.एस.ए. इतनी बड़ी संस्था बनेगी?

देवेन्द्र जी - नहीं, हमने कभी ऐसा नहीं सोचा था कि हिन्दी यू.एस.ए. इतनी बड़ी संस्था बनेगी। हमने कभी नहीं सोचा था कि हमारे पास इतने कर्मठ मित्र जुड़ेंगे और इतने अच्छे अभिभावक गण हमारे साथ जुड़ेंगे। हमें लगता है कि हमने पिछले जन्म में या कभी अच्छा काम किया होगा तभी हम को इतने अच्छे साथी और अच्छी शिक्षिकाएँ मिलीं। हमने सोचा भी नहीं था कि हमने कभी अच्छा काम किया होगा। लेकिन कर्म का फल कब मिलता है यह हमें पता नहीं होता है। आपको भी नहीं मालूम कि आपने पिछले जन्म में कैसा कार्य किया होगा। महाभारत की कहानी आपको याद होगी। भीष्म पितामह जब बाणों की शैय्या पर पड़े हुए थे, वह उनके कई जन्म पहले की सजा, जब उन्होंने किसी को कोई सुई चुभोई होगी। उसकी सजा उनको कितने जन्मों के बाद मिली। उनकी मृत्यु हुई, बाणों की शैय्या पर लेटे हुए।

अभिसार - आपकी सबसे बड़ी ताकत और कमजोरी क्या है?

देवेन्द्र जी और रचिता जी - [हँसते हुऐ] - ताकत तो साफ है। वह हैं हिन्दी यू.एस.ए. के शिक्षक और स्वयंसेवक। कभी-कभी यह ताकत ही कमजोरी बन जाती है। आपके साथी जो अच्छा काम कर रहे हैं, और भी अच्छा कर सकते हैं, पर अगर वे आपकी कमजोरी बन जाएँ तो आप उनसे और अच्छा काम नहीं करवा सकते। जितने प्रियगण होते हैं जैसे आपके माँ-बाप। आप उनकी ताकत हैं, लेकिन कभी-कभी आप

उनकी कमजोरी भी बन सकते हैं।

रचिता जी - मेरी ताकत है मेरी सृजनात्मकता - मेरी रचना करने की ताकत। वह अपने आप अंदर से आती है। कभी-कभी जब ऐसा लगता है कि अब बहुत हो गया अब और नहीं करना है, लेकिन यह अंदर की ताकत अपने आप फिर से आती है और काम करने में सहायता देती है। कमजोरी यह है कि मुझे लगता है कि दूसरे लोगों का काम मेरे जैसा क्यों नहीं है? मैं दूसरों के काम पसंद नहीं करती थी। फिर सोचा कि सभी अपनी शैली से काम करते हैं, जिसकी जितनी क्षमता है उतना ही काम करते हैं।

आदित्य - आज सुबह उठते ही आपके मन में सबसे पहले क्या ख्याल आया?

रचिता जी - उठते समय यह ख्याल आया कि आज ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला जायेंगे और बहुत सारे लोगों से मिलेंगे और जब हम पिछली बार यहाँ आये थे वह सब याद आ रहा था। किस-किस से मिले थे, कैसा हुआ था। मैं बहुत सारी शिक्षिकाओं से मिली थी। मैं सब शिक्षिकाओं को जानती हूँ। मुझे लग रहा था कि आज फिर से सब से मिलूँगी।

देवेन्द्र जी - मुझे बिलकुल भी ख्याल नहीं आया था कि आप सब हमारा इंटरव्यू लेंगे।

अभिसार - वह क्या है जिससे आप तुरंत प्रसन्न हो जाते हैं?

देवेन्द्र जी - मेरे बच्चे या किसी और के बच्चे जब कोई सफलता प्राप्त करते हैं तो मुझे बहुत प्रसन्नता होती है, विशेषकर हिन्दी यू.एस.ए. के बच्चे।

रचिता जी - विशेषकर जब भारतीय समाज का कोई बच्चा कुछ अच्छा काम करता है तो मुझे बहुत प्रसन्नता होती है।

आदित्य - आप का रोल मॉडल कौन है?

देवेन्द्र जी - मेरा कोई सेट रोल मॉडल नहीं है। मुझे जिसकी चीज अच्छी लगती है मैं उसको ग्रहण करने की सोचता हूँ, उस पर चलने की कोशिश करता हूँ।

आप भी मेरे रोल मॉडल हो सकते हैं। वैसे कृष्ण भगवान को मेरा रोल मॉडल कह सकते हैं। उन्होंने जो कुछ किया मुझे बहुत अच्छा लगता है, लेकिन मेरे स्तर से उन्हें रोल मॉडल मानना कुछ अच्छी बात नहीं होगी क्योंकि वे हम से बहुत ऊपर हैं।

रचिता जी - मेरे लिए मेरी माँ मेरी रोल मॉडल हैं। उनके बहुत सारे गुण ऐसे हैं जो आज भी मैं किसी और में नहीं पाती हूँ और शायद कभी पा भी नहीं सकती। मुझे लगता है कि मैं भी अगर उनके बराबर सीख सकूँ तो बहुत अच्छा होगा।

अभिसार - क्या आप चाहते हैं की हिन्दी यू.एस.ए. दूसरे राज्यों में भी फैले?

रचिता जी - बिलकुल, और फैल भी रहा है। कितने राज्यों में है वह ठीक-ठीक नहीं बता सकती, पर कम से कम दस राज्यों में होगा। भले एक ही क्लास हो किसी राज्य में, लेकिन है।

देवेन्द्र जी - हमारा ऐसा कोई प्लान या गोल नहीं है। हम चाहतें हैं कि जितने भी बच्चे आएँ हम उन्हें अच्छी तरह से पढ़ाएँ। क्वालिटी से ज्यादा क्वांटिटी पर जोर नहीं देना चाहते। अभी हम सौ स्कूल खोल दें लेकिन क्वालिटी को न संभाल पाएँ तो वह अच्छा नहीं रहेगा। हम चाहते हैं कि स्कूल अगर खुलें भी तो क्वालिटी सुरक्षित रहे।

रचिता जी - दूसरे राज्यों में जो स्कूल हैं वे पूरे हिन्दी यू.एस.ए. के नहीं हैं, वे सम्बद्ध स्कूल हैं। वे पहले से चल रहे हिन्दी स्कूल हैं या नये शुरू किये हुए। वे हमसे सहायता माँगते हैं और हम उन्हें पुस्तकें, थोड़ा प्रशिक्षण और हमारा परीक्षा पत्र देते हैं ताकि वे अपना स्कूल ठीक से चला सकें। इन सम्बद्ध पाठशालाओं को महोत्सव में सम्मिलित नहीं करते क्योंकि हमारे ही इतने सारे बच्चे होते हैं कि इतने कम समय में और अधिक बच्चों को शामिल करना मुश्किल है।

आदित्य - समझ लीजिये कि आपको इतिहास में किसी प्रमुख व्यक्ति से मिलने का मौका मिले तो आप किससे मिलना चाहेंगे और क्या सवाल पूछेंगे?

देवेन्द्र जी - मैं इतिहास में विश्वास तो रखता हूँ लेकिन बहुत ज्यादा बंधा हुआ नहीं हूँ। मुझे जो सीखना है वह मैं वर्तमान परिस्तिथियों से सीखने का प्रयास करता हूँ। मुझे लगता है कि सारी चीजें व्यक्ति के अंदर होती हैं, अगर व्यक्ति अपने आप को पहचाने। अपने को पहचानने के लिए व्यक्ति को अपने अंदर झाँकना होता है, ध्यान या पूजा करके, इत्यादि।

मुझे नहीं लगता है कि मैं किसी से प्रश्न पूछूँगा और सीखूँगा। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि मुझे सब मालूम है। ऐसा कोई हो जिसने कुछ किया है तो मैं अवश्य सीखूँगा। लेकिन मुझे लगता है कि अगर मैं अपने अंदर झाँकूँगा और सच्चे मन से प्रश्न का उत्तर ढूंढूंगा तो वह मिल जाएगा।

रचिता जी - में राणा प्रताप से मिलना चाहूँगी। राणा प्रताप के आदर्श थे राम चन्द्र जी। उन्होंने अपनी जिंदगी में जो भी काम किये वे इसलिए किये क्योंकि राम चन्द्र जी ने भी वे किये थे। उनकी सबसे अच्छी बात ये थी कि वे धर्म के लिए उस हद तक लड़ते रहे, जब उनके सारे साथी भी साथ छोड़ चुके थे और उनके विरोधी हो गए थे। फिर भी आखिरी साँस तक लड़ते रहे। जब आप सही हैं तो अकेले भी लड़ सकते हैं,

यही सच्चा गुण है।

अभिसार - अगर कोई समस्या हो तो आप किसके पास सलाह के लिए जाते हैं?

देवेन्द्र जी - मैं तो किसी के पास नहीं जाता। लेकिन जब मुझे लगता है कि समस्या मायनो जी सुलझा सकती हैं तो मायनो जी के पास चला जाता हूँ। बी. जे. पी. के कार्यक्रम की टिकट लेनी हैं तो अरुण अय्यागरी जी के पास चला जाऊँगा। जो भी समस्या का हल दे - आपके पास अगर हल हो तो आपके पास भी जाऊँगा। यह समस्या पर निर्भर करता है।

रचिता जी - मैं भगवान के पास जाती हूँ। मैं भगवान के मंदिर में बैठती हूँ, थोड़ा ध्यान लगाती हूँ और एक ही चीज़ माँगती हूँ कि जो भी समस्या आई है उसको सुलझाने की शक्ति देना और समस्या सहन करने की शक्ति देना। मैंने देखा है कि बहुत जल्दी मुझे सब कुछ मिल जाता है, आशा भी, ताकत भी और सहायता भी।

आदित्य - आपको क्या प्रोत्साहित करते हैं?

रचिता जी - आपकी पीली शर्ट हमें बहुत प्रोत्साहित करती हैं। आप लोग जब यह पीली शर्ट पहनकर आते हैं, विशेषकर जब ग्रेजुएशन का दिन होता है तो हमें बहुत ख़ुशी होती है कि इतने सारे बच्चे आज ग्रेजुएट हो रहे हैं और लगता है कि जो मेहनत की है वह सफल हो रही है और बच्चे अच्छा कर रहे हैं। हम सबको अपनी शुभकामनाएँ देते हैं कि आगे जाकर आप सभी और अच्छा करें।

देवेन्द्र जी - जो काम हमने लिया है जब वह पूरा होता है तो हमें प्रोत्साहन मिलता है। जब भी कोई काम पूरा होता है तो प्रोत्साहन मिलता है। हिन्दी यू.एस.ए. इसका एक उदहारण है। दो बच्चों से हमने शुरू की थी अब करीब चार हजार बच्चे हिन्दी यू.एस.ए. में हिन्दी सीखते हैं।

रचिता जी - इसके साथ ही हमारे अभिभावक जो हमारा हाथ बँटाते हैं और हर मुसीबत में साथ देते हैं तो यह भी हमें बहुत प्रोत्साहित करता है।

आदित्य - आप हिन्दी यू.एस.ए. के बच्चों से क्या उम्मीद करते हैं?

देवेन्द्र जी - हम बच्चों से वही उम्मीद करते हैं जो बच्चे अपने आप से करते हैं। जो आपके लक्ष्य हैं, अगर आप उन लक्ष्य में सफल होते हैं तो वह हमारे लिए ख़ुशी की बात है। लक्ष्य जो कठिन हों, पर जिन्हें प्राप्त किया जा सके और मिड कोर्स में जरुरत पड़ने पर आप उन्हें बदल सकें।

अभिसार - [आज का आखिरी सवाल] हिन्दी यू.एस.ए. के बच्चों के लिए आपका क्या सन्देश है?

देवेन्द्र जी - हिन्दी यू.एस.ए. के बच्चों के लिए यह सन्देश है कि जो आपके लक्ष्य हैं उनमें आप लोग सफल हों और एकाग्र मन से आप चलें। महाभारत के अर्जुन की तरह बनें। हम नहीं चाहते कि हमारे लक्ष्य आपके लक्ष्य बनें। हम चाहते हैं कि आप अपने लक्ष्य में सफल हों और कोई भी चीज़ आपको विचलित न कर पाए।

आदित्य और अभिसार - धन्यवाद देवेन्द्र जी और रचिता जी।

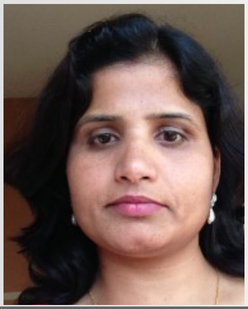

क्षणिकाएँ

मेरा नाम मनीषा श्रीवास्तव है। मेरा जन्म इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ है। मैंने हिन्दी माध्यम से शिक्षा ली है। इस वर्ष ही हिन्दी यू.एस.ए. में पढ़ाना आरम्भ किया है, और मुझे बच्चों को पढ़ाने में बहुत आनन्द आ रहा है।

चंदा

दूर गगन में रहने वाले

साथ मुझे भी लेले चंदा

साथ-साथ ही खेलेंगे

बादल के आंचल में छिपकर,

छुपा छुपी हम खेलेंगे

हवा के रथ पर हो सवार हम

सारा अम्बर घूमेंगे

पीछे-पीछे होंगे बादल

हम आगे-आगे दौड़ेंगे,

मैं तेरे घर आ जाऊँगी

या तुम खुद ही आ जाना चंदा

एक दूसरे के बाँट के गम

हम खुशी-खुशी रह लेंगे चंदा

जीवन का पहिया

एक बचपन छोटा नाटा सा

पर बड़ा खुराफाती

आँखों का तारा, बड़ा ही दुलारा

जैसे चमकता हुआ, आसमान का तारा;

बढ़ता है पग-पग जवानी के खाते में

उड़ जाता है, पवन की गति से भी तेज

साहस समन्दर लहरों के जैसा

उन्मुक्त ऐसा जैसे उड़ते हो पंछी

चंचल ऐसा जैसे कि चित हो;

उन्मुक्त घोड़े को लगा हो लगाम जैसे

पानी के बोझ से दबा बादल जैसा

मेहनत की आग से तपकर निखरा

प्रौढ़ अवस्था

ढलते सूरज के संग आता है बुढ़ापा

अनुभवों का हो जैसे कोई खजाना

जब दोहराता है बचपन अपने आप को

डूबता है सूरज फिर एक नयी सुबह के लिए।

माता-पिता जीवन देते हैं, लेकिन जीने की कला तो शिक्षक ही सिखाते हैं।

अरस्तु

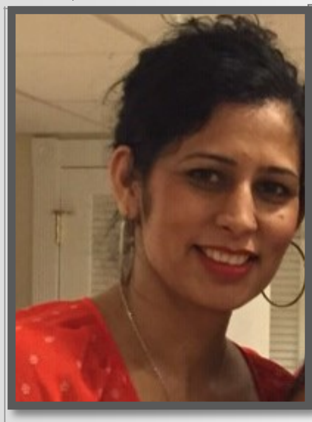

क्यों आवश्यक है हिन्दी की शिक्षा अमेरिका में

मेरा नाम पूजा नय्यैर है। मेरा बचपन पंजाब और हरियाणा की गोद में खेलकर बीता है। स्नातकोत्तर की शिक्षा हिमाचल विश्वविद्यालय से पूरी करने के उपरांत मैंने स्वयंसेवी शिक्षिका बनकर कुछ समय बच्चों को पढ़ाया, अब उसी अधूरे कार्य को हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ कर पूरा करना चाहती हूँ।

इतनी व्यस्त ज़िंदगी में कहीं हम सब भूल रहे हैं कि कहाँ से आए थे, क्या हैं?, हमारी संस्कृति, हमारे त्योहार और हमारी अपनी मातृ भाषा। जब हम अपना देश छोड़ कर यहाँ आए थे तो कभी नहीं सोचा होगा यहीं के हो कर रह जायेंगे और हमारे बच्चे यहाँ की संस्कृति और भाषा का इतना अनुसरण करेंगे। पर अब हमें सोचना होगा, संभालना होगा, अपनी संस्कृति को जो कहीं न कहीं जुड़ी है अपनी भाषा से। हमारी जड़ें जो कि दूर भारत में कहीं हैं, उन्हें जीवित रखना है, अपने बच्चों को बुज़ुर्गों से जोड़ना है। उसके लिये भाषा -शिक्षा एक ठोस स्तंभ है, और इस स्तंभ को मज़बूती देने के लिये आवश्यक है बच्चों में जागृति लाना, प्रोत्साहन देना, जनप्रियता बढ़ाना। उसके लिये हम माता-पिता को ही प्रथम प्रयास की आवश्यकता है। हमारी कोशिश से ही बच्चे भाषा और संस्कृति को समझ पाएँगे, जुड़ पायेंगे। हम सभी का एक छोटा सा कदम व परिवर्तन हमारी बढ़ती दूरियों को नजदीकियों में बदल सकता है और अपनों के निकट ला सकता है। हिन्दी यू.एस.ए. का इस दिशा में बढ़ाया कदम प्रशंसनीय है। आइये आप और हम मिलकर कुछ कदम बढ़ाएँ और अपनी भाषा को महत्वपूर्ण बनाएँ।

मेरे हिन्दी यू.एस.ए. के अनुभव

मैं यश शर्मा वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला में उच्च स्तर-१ का छात्र हूँ। यह लेख मेरे हिन्दी यू.एस.ए. के अनुभव हैं। हिन्दी यू.एस.ए. में यह मेरा पाँचवाँ साल है। इस साल भी मैंने हमेशा की तरह बहुत सारी अच्छी-अच्छी नई बातें सीखी हैं। जैसे संज्ञा, सर्वनाम, लिंग और वचन। इस साल शुरुआत में हमने हिन्दी वाक्यों का संशोधन करना सीखा, और भारत भारती की पुस्तक से अभ्यास प्रारम्भ किया। इस पुस्तक में दो पात्रों की कहानी है जिसे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। घर में मेरी छोटी बहन कभी-कभी मुझसे हिन्दी के कठिन शब्द पूछती है और मैं उसे अच्छे से जवाब दे पाता हूँ और समझा पाता हूँ, क्योंकि मैंने यह पहले पढ़ा हुआ है। मुझे इस साल कविता प्रतियोगिता में नाम पुकारने का काम दिया गया। पहले मैं थोड़ा सा घबराया लेकिन जैसे ही मैंने पहला नाम कहा मुझमें आत्मविश्वास आया और मैंने अच्छे से सब नाम पुकारे। कविता प्रतियोगिता में बहुत अच्छी-अच्छी कविता सुनने को मिलीं, कुछ प्रेरणा दायक और कुछ हास्य कविताएँ। इस अनुभव से मुझे बहुत उत्साह मिला और मुझे अगले साल फिर से करना है।
मैं उच्चस्तर-२ पास करने के बाद हिन्दी यू.एस.ए. में हिन्दी पढ़ाना भी चाहता हूँ। - धन्यवाद

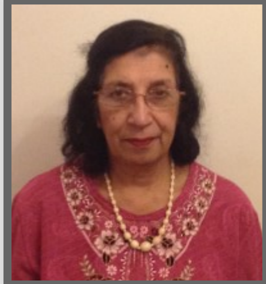

जिसका काम उसी को साजे

न्यूयार्क निवासी वीना त्रेहन जी पिछले २० वर्षों से कैथोलिक स्कूल में किंडर्गार्टन की अध्यापिका रहने के बाद जून २०१३ से सेवानिवृत्त हैं। आपने बच्चों के लिए बहुत सी कहानियाँ लिखी हैं।

बच्चों! आपने सूर्य और वायु की कहानी तो सुनी होगी। वायु यानि हवा! एक बार वायु ने पहल कर के सूर्य से कहा, "मैं आपसे ज्यादा शक्तिशाली हूँ"। सूर्य का उत्तर था, "तो ऐसा करते हैं कि उस आदमी, जिसने कमीज के बटन बंद कर रखे हैं, की कमीज जो उतरवाने में सफल होगा वही जीतेगा, अब पहले तुम्हारी बारी"। वायु ने सोचा कि इसमें तो कोई कठिनाई नहीं और वायु अपनी पूरी ताकत से जोर लगाकर आँधी जैसे चलने लगी। उस लड़के ने कमीज के सबसे ऊपर का बटन बंद कर लिया। यह देख घबरा कर वायु ने अपनी और अधिक ताकत लगा दी परंतु अब लड़के ने अपने दोनों हाथों से अपनी कमीज को कस कर पकड़ लिया। सूर्य बोला, "चलो छोड़ो, अब मेरी बारी"। जैसे-जैसे सूर्य की गरमी बढ़ती गई, लड़का चलते-चलते एक-एक कर बटन खोलने लगा तथा जब और अधिक गरमी सहन न हो सकी तो उसने कमीज उतार कर उससे अपना तपता सिर ढक लिया। सूर्य के कुछ बोलने से पहले ही वायु ने क्षमा माँगी और कहा कि जिस शक्ति से दंभ का प्रदर्शन नहीं होता, वही ठीक है। अपनी शक्ति से दंभ दिखाना न केवल अपने लिए परंतु दूसरों के लिए भी हानिकारक हो सकता है। यह सुनकर सूर्य ने कहा कि हम दोनों ही शक्तिशाली हैं परंतु प्रकृति के नियम से!

तो बच्चों, अब एक कहानी और सुनो! आपने देखा है कि सूर्य सुबह उदय होकर शाम को अस्त होता है। सूर्य की रोशनी के रहते लोग अपने काम में लगे रहते हैं, पशु-पक्षी विचरते रहते हैं, फूल खिलते रहते हैं, और तितलियाँ फूलों के आस-पास मंडराती रहती हैं। सूर्य के अस्त होने के बाद चन्द्रमा उदय होता है, अपनी तारों की बारात के साथ और भोर होते ही विलुप्त हो जाता है। यही है प्रकृति का विधि-विधान। दिन और रात! रात को सब लोग अपने घर लौट आते हैं, पशु-पक्षी भी अपने निश्चित स्थान पर लौट आते हैं।

पर चन्द्रमा को तो सुबह की चहल-पहल ज्यादा भाती है। एक दिन उसने सूर्य से विनम्र निवेदन किया कि उसे और रोशनी चाहिए। बच्चों, आपको पता है कि चन्द्रमा की रोशनी सूर्य की देन है। सूर्य सोच में पड़ गए, फिर चन्द्रमा से कहा कि ऐसा करते हैं कि कुछ समय के लिए मैं तुम्हें थोड़ी और रोशनी तो दे देता हूँ, परंतु शाम को मैं जल्दी घर जाया करूँगा और तुम जल्दी आ जाना ताकि तुम्हें अधिक समय मिल सके चहल-पहल देखने का। चन्द्रमा खुशी से उछल पड़ा।

अगले दिन चन्द्रमा प्रतीक्षा में था कि कब सूर्य अस्त हो और कब मैं अपनी ज्यादा रोशनी के साथ जल्दी आकर लोगों को कामों में लगा, बच्चों को भागता-दौड़ता, पशु-पक्षियों की कलरव, इन सब का आनंद उठा सकूँ। ऐसा ही हुआ और वह बहुत खुश हुआ, परंतु यह क्या? अभी उसे आए थोड़ा ही समय हुआ था कि थके हारे लोग अपनी थकीहारी चाल से

लौट आया है मेरा बचपन

योगिता मोदी

संचालिका - लॉरेंसविल

हिन्दी यू.एस.ए. से मेरी सम्बंधता का यह लगभग प्रथम वर्ष ही है, लेकिन लगता है कि जैसे मैं इस संस्था से कई वर्षों से जुड़ी हुई हूँ। यहाँ होने वाले हिन्दी पठन-पाठन, विभिन्न सांस्कृतिक एवं अन्य कार्यक्रमों का हिस्सा बनकर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे मैं अपने बचपन, अपने स्कूल के दिनों में पहुँच गई हूँ। भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत इसके पूरे वातावरण में एक अनूठा सा अपनापन और आकर्षण है जो इस संस्था के प्रत्येक व्यक्ति को इससे जुड़ने और निरंतर वहीं बने रहने के लिए प्रेरित करता है। सभी कार्यकर्ताओं की उन्नत एवं समृद्ध भारतीयता को सदा कायम रखने और अपनी अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के पावन लक्ष्य को अपना हर संभव सहयोग देने की सहज भावना निश्चय ही बहुत प्रशंसनीय है एवं इसने अंततः मेरे जीवन और व्यक्तित्व को एक नई दिशा और प्रेरणा दी है। प्रति शुक्रवार को जब मैं हिन्दी स्कूल जाती हूँ और बच्चों के बीच अपने को पाती हूँ तो सप्ताह भर अन्य कार्यों में जुटे रहने की थकान के बाद आनंददायक नई ऊर्जा और स्फूर्ति का अनुभव करती हूँ। मैं यह कामना करती हूँ कि मैं इसी तरह हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ी रहूँ और अपने बचपन को जीती रहूँ।

हिन्दी यू.एस.ए. से मिली मुझे इक नई पहचान

और इक सुखद अनंत उड़ान

भोले, नन्हे, नटखट बच्चों का साथ

आनंदित कर देता है हृदय औ' मन

लगता है जैसे फिर लौट आया है

भूला-बिसरा मेरा प्यारा बचपन

जिसका काम ...

घर की ओर चल दिए। बच्चे जो बहुत देर से खेल रहे थे, थककर वहीं सो गए। पशु-पक्षी बिना कुछ खाए ही सो गए और चन्द्रमा उन्हें आवाज दे कहता ही रह गया, "थोड़ा और रुको"। सुबह होने से पहले सूर्य की प्रतीक्षा किए बिना चन्द्रमा भी घर लौट गया, उसे इतने लम्बे समय तक बाहर रहने की आदत नहीं थी। कुछ दिन ऐसे ही चला पर एक दिन चन्द्रमा हाथ जोड़कर बोला, "सूर्य भाई, आपकी दी हुई ज्यादा रोशनी आपको मुबारक और कल आप समय पर उदय हों, इतना लम्बा समय बिना चहल-पहल के बिताने से अच्छा है कि मैं समय से लौटकर आराम कर सकूँ"। सूर्य ने हँसते हुए कहा, "ठीक है जैसा तुम चाहो, मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ता"।

अब बच्चों, आप बताएँ कि क्या आप हर समय दिन और रात सूर्य की तेज रोशनी में रहना चाहेंगे या बिना सोए हर समय चन्द्रमा के हल्के प्रकाश में। शायद आपका भी वही उत्तर हो जो मेरा है। प्रकृति के ढंग व नियम हमारे सुख और हित के लिए हैं, यदि कुछ बदलाव की सोचो तो वह करने का यत्न करो जो हानिकारक न हो।

हिन्दी की मेरे जीवन में वापसी

वीना मित्तल जी व्यवसाय से सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं और अपने २ बच्चों व पति के साथ पेन्सिल्वेनिया में रहती हैं। अम्बाला, हरियाणा में जन्मी-पली वीना जी ने गोल्ड मेडल प्राप्त करते हुए कम्प्यूटर विज्ञान में स्नातक तथा सिल्वर मेडल प्राप्त करते हुए एम.सी.ए. की उपाधि प्राप्त की। वीना जी को भारत में विभिन्न विश्वविद्यालयों में शिक्षण का अनुभव रहा है। पिछले २ वर्षों से अमेरिका में रहते हुए मीरा शाखा बालगोकुलम में हिन्दी अध्यापन करते हुए हिन्दी भाषा की सेवा करती आ रही हैं।

मेरा जन्म उत्तर भारत में होने के कारण बचपन से ही हिन्दी का मेरे जीवन में बहुत महत्व रहा। हिन्दी मेरी मातृभाषा और मौखिक भाषा होने के साथ-साथ अध्ययन का माध्यम भी रही। इसी कारण मेरा हिन्दी के साथ गहरा सम्बन्ध रहा। चार वर्ष पूर्व २०११ में अमेरिका आने के बाद धीरे-धीरे यह सम्बन्ध कमजोर पड़ने लगा। मेरा ६ वर्ष का पुत्र जो हिन्दी पढ़ना, लिखना जानता था, अब अक्षर भी नहीं पहचान रहा था।

तब एक दिन, २०११ में मैंने परिवार सहित बाल गोकुलम (एच.एस.एस. शाखा) जाना प्रारम्भ किया और २०१२ में मुझे शाखा आने वाले बच्चों को हिन्दी सिखाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। किंतु पुस्तकों तथा पाठ्यक्रम के अभाव में कुछ परिणाम नहीं आ रहे थे।

२०१३ में एक शुभ दिन हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ने के बाद हमने बढ़ाया प्रगति की दिशा में एक कदम। इस वर्ष २०१४-२०१५ में हमारे यहाँ ११ विद्यार्थी हैं, जो ५ विभिन्न स्तरों में पढ़ते हैं। चार शिक्षक, शिक्षिकाएँ इन विद्यार्थियों को विभिन्न स्तरों में पढ़ाती हैं। इन विद्यार्थियों से प्रेरित होकर हमारे यहाँ ५ वर्षों से छोटे बच्चों की भी कक्षा प्रारम्भ हुई, जिसमें हम उन्हें हिन्दी वार्तालाप सिखाते हैं।

मेरे जीवन में हिन्दी का प्रकाश फिर से जागृत करने के लिए मैं बालगोकुलम और हिन्दी यू.एस.ए. का धन्यवाद करती हूँ।

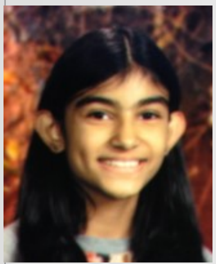

गुरु और मार्गदर्शक

प्रीति लोहटिया - चैरीहिल पाठशाला मध्यमा-३

कृष्ण केवल अर्जुन के मित्र ही नहीं पर उनके गुरु और मार्गदर्शक भी थे। प्यार से कृष्ण अर्जुन को पार्थ बुलाते थे जिसका अर्थ मित्र होता है। अर्जुन कृष्ण से सभी बातों के लिए सलाह लेते थे। महाभारत शुरु होने से पहले कृष्ण ने अर्जुन से पूछा था कि वे सारी यादव सेना और उनके बीच में केवल एक को ही चुन सकते हैं। अर्जुन ने बिना किसी झिझक के अपने मित्र और गुरु कृष्ण को चुना था। कृष्ण अर्जुन को यह भी कह चुके थे कि युद्ध के दौरान वे हथियार नहीं उठाएँगें। फिर भी अर्जुन केवल कृष्ण को अपनी तरफ ही चाहते थे। कृष्ण अर्जुन के रथ के सारथी बन कर उनके मार्गदर्शक और गुरु बने थे। युद्ध के दौरान जब अर्जुन अपने चचेरे भाइयों से लड़ना नहीं चाहते थे तब कृष्ण ने उन्हें धर्म और कर्म के बीच का रास्ता समझाया था। अतः कृष्ण अर्जुन के केवल गुरु ही नहीं पर मित्र और मार्गदर्शक भी थे।

एक इंच मुस्कान

मेरा नाम गीता टंडन है। स्नातकोत्तर की शिक्षा पूरी कर भाषा एवं शिक्षण की अपनी रुचि को मैंने गृहशिक्षिका के रूप में किया, और उसी कार्य का सपना संजोए हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ कर पूर्ण करने का प्रयास किया है।

आज कितने ही वर्ष बीत गए न जाने कहाँ होगी, कैसी होगी वह बहुत बड़ी और सुन्दर दिखती होगी, अब शायद मुस्कराती भी होगी? ऐसे ही कितने सवाल कौंधते हैं। आज उसका इक्कीसवाँ जन्मदिन है, ऐसा लगता है मानो कल ही की बात है। सारी बातें एक चलचित्र की तरह आँखों में घूम गईं।

वह मासूम, सुंदर किंतु उदास चेहरा सामने के फ्लैट में से उचककर झाँकने की कोशिश कर रहा था। देर तक मुझे अपने बच्चों के साथ खेलता देख यकायक वह रोने लगी, किन्तु रोने का कारण न जान सकी मैं, या यूँ कहूँ कि बच्चों के साथ खेलने में व्यस्त होने के कारण जानने का प्रयास भी ना किया।

यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा। वह यूँ ही हमें प्रतिदिन झाँककर देखती और रोती, पीछे से कोई हाथ उसके सिर को सहला कर ले जाता। अंततः उस दिन मैं स्वयं को रोक ना सकी क्योंकि आज वह बच्ची वहाँ से जाने को तैयार नहीं थी। मैंने अपने बेटे के जन्मदिन की तैयारी और आँगन में रखी मेजों को सजाने के दौरान आवाज़ सुनी और नौकरानी को काम सौंप कर दौड़ती फलांगती उसके घर जा पहुँची। घंटी बजने पर एक वृद्ध संभ्रांत महिला ने दरवाज़ा खोला तो मैंने बिना समय व्यर्थ गंवाए जल्दी से अपना परिचय दे डाला ताकि मैं उस नन्ही बालिका से शीघ्र मिल सकूँ, और तुरंत उस बच्ची से मिलने की इच्छा प्रकट की। वह महिला बहुत प्रेम से मेरा हाथ पकड़ कर मुझे घर के अंदर ले गईं, कुछ औपचारिक बातों के उपरांत मैंने फिर अपना प्रश्न दोहराया तो उन बूढ़ी आँखों में आँसू छलक उठे। आँसुओं को पोंछते हुए उन्होंने बच्ची की माँ की कैंसर से मृत्यु का संक्षिप्त विवरण दिया और उस नन्हीं "मुस्कान" के रोने का कारण बताया।

मेरा हृदय चीत्कार कर उठा और स्वयं को कोसने लगी कि मैं क्यों न इन मासूम आँखों की उदासी पढ़ सकी? यही सोचते हुए दौड़ पड़ी उस कमरे की ओर जहाँ वह नन्ही सी जान की परदे के पीछे घुटी सिसकियाँ थीं। झपट कर उसे यूँ गले से लगाया जैसे जन्मों से बिछड़ी हो और बह चली अश्रुधारा। बहुत उदास हो चुका था माहौल और मन। बच्ची को बहलाकर उसकी प्रिय फ्रॉक पहनाई और उसकी दादी से आज्ञा लेकर अपने घर आ गई। सुन्दर परी जैसी बच्ची को देखकर मेरे बच्चे भी बहुत खुश हो गए और जल्दी ही उसे अपने हर काम में शामिल कर लिया। परन्तु वह बच्ची पूरी शाम मेरा ही आँचल थामे रही।

अब मेरे घर उसका प्रतिदिन आना-जाना लगा रहा। वह मेरे बच्चों से ज्यादा मेरे साथ समय बिताना पसंद करती थी। धीरे-धीरे उसकी उदासी कुछ कम होने लगी और वह बच्चों के साथ भी घुल मिल गई।

अब आई वह शाम जब मैंने बच्चों के साथ मिलकर उसका जन्मदिन मनाया। ज्योंही प्यार से गले लगाकर उसे उपहार दिया तो वह जोर-जोर रो पड़ी। परन्तु उसके इस रोने में उसकी व्यथा बहुत धुल चुकी थी। चुप होकर उसने मुझे फिर गले से लगाया और उपहार देखा तो उसके मासूम चेहरे पर एक मधुर मुस्कान आ गई। भाग्य की विडंबना कि उसकी वह मुस्कान बहुत अधिक दिनों तक हमारे साथ न रह सकी। उसके पापा की बदली हो गई। बस तब से ये आँखें और दिल दुआओं से ओत-प्रोत उसके प्रत्येक जन्मदिन पर उसकी राह अवश्य ही तकता है। उसकी “एक इंच” की मधुर मुस्कान को दोबारा देखने के लिए आँखें तरसती हैं।

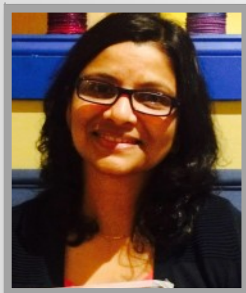

गुरु

ममता त्रिवेदी

ममता त्रिवेदी जी प्लेंस्बोरो हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-२ की शिक्षिका हैं। आप पिछले ८ वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. से स्वयंसेवी शिक्षिका के रूप में जुड़ी हुई हैं।

गुरु का शाब्दिक अर्थ है - बल, बुद्धि, वय, विद्या आदि में बड़ा और फलतः आदरणीय या वंदनीय।
अथवा विद्या पढ़ाने या कला आदि की शिक्षा देनेवाला शिक्षक या आचार्य।
शास्त्रों में गु का अर्थ बताया गया है - अंधकार या मूल अज्ञान और रु का अर्थ है - उसका निरोधक अर्थात् दो अक्षरों से मिलकर बने 'गुरु' शब्द का अर्थ है - अज्ञान रूपी अंधकार को हटाने वाला।

पौराणिक काल से ही गुरु ज्ञान के प्रसार के साथ-साथ समाज के विकास का भी बीड़ा उठाते रहे हैं। गुरु हमारे जीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने तथा उसमें सार्थक सुधार करने की कोशिश करते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के गुरु ने उन्हें अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी। भगवान श्री कृष्ण के गुरु, संदीपन ने उन्हें योग और विज्ञान की शिक्षा दी।

वास्तव में गुरु की महिमा का वर्णन कोई नहीं कर सकता। शास्त्रों में गुरु का महत्व बहुत ऊँचा है। गुरु की महिमा तो भगवान से भी कहीं अधिक है। गुरु की कृपा के बिना भगवान की प्राप्ति असंभव है। कहने का तात्पर्य यह है कि गुरु और भगवान में कोई अंतर नहीं है। गुरु मनुष्य के रूप में नारायण ही हैं। जैसे सूर्य के निकलने पर अंधेरा नष्ट हो जाता है वैसे ही गुरु के वचनों से अज्ञान रूपी अंधकार भी समाप्त हो जाता है।

सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है जो हमें गुरु द्वारा प्रदान की जाती है। गुरु का संबंध केवल शिक्षा से ही नहीं होता बल्कि वह तो हर मोड़ पर हमें सही सुझाव देकर जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागू पाय।

बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

जीवन के आरंभ से अंत तक हम हर क्षण सीखते रहते हैं। इस ज्ञानार्जन में हमारी पहली गुरु हमारी माँ होती है। जीवन यात्रा में आगे बढ़ते हुए हम अपने आस-पास के लोगों और अपने मित्रों से सतत् सीखते रहते हैं। आज शिक्षा केवल गुरु (शिक्षक) तक ही सीमित नहीं रह गई है। कभी पुस्तकें हमारी गुरु होती हैं, तो कभी समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और रेडियो तथा टेलीविजन जैसे साधन। साधन चाहे भौतिक हो या व्यक्तिगत, जब-जब हम किसी और के सीधे अनुभव अथवा ज्ञान का लाभ उठाते हुए कोई नई बात सीखते हैं तो हम प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में गुरु का ही आलम्बन लेते हैं। कहा जाता है कि महात्मा बुद्ध ने किसी भी गुरु से आत्म ज्ञान नहीं लिया था, बल्कि वे स्वयं ही मंथन करते रहे थे, इसी कारण उन्हें सच्चे ज्ञान की पिपासा होते हुए भी ज्ञान प्राप्त करने में बहुत अधिक समय लगा था। वहीं स्वामी

विवेकानन्द जी को अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस से न केवल उनके जीवन काल में ही बल्कि उनके प्रयाण करने के बाद भी उनके बताए वचनों से मार्गदर्शन मिलता रहा।

ज्ञान चाहे भौतिक हो या आध्यात्मिक जब-जब हम किसी उलझन अथवा गुत्थी में उलझ जाते हैं, तब -तब हमें गुरु की तीव्र आवश्यकता अनुभव होती है। हमें किसी के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, जो कि उस विषम स्थिति से उबार सके। इस स्थिति में एक सुलझा हुआ गुरु न केवल हमें उस कठिन समस्या का निवारण बताता है, बल्कि उस समस्या का समाधान कई कोणों से समझाता है। फलस्वरूप हम न केवल एक उलझे हुए प्रश्न का उत्तर पाते हैं, बल्कि उस विषय वस्तु का सम्यक ज्ञान भी प्राप्त कर लेते हैं। यह अलग बात है कि आज का जगत् गुरु तो 'गूगल' है, जो कभी उलझन सुलझाता है, और कभी-कभी और अधिक उलझा भी देता है।

वर्तमान समय में शिक्षा मात्र ज्ञानार्जन हेतु ही नहीं रह गई अपितु धनार्जन के लिए भी अत्यावश्यक हो गई है। संसार में तरह-तरह के बदलाव आ रहे हैं। ऐसे समय में शिक्षकों के समक्ष चुनौतियाँ और बढ़ गई हैं। शिक्षक राष्ट्र के युवा वर्ग का सही मार्गदर्शन कर समाज या राष्ट्र के विकास को नई दिशा दे सकता है। आज शिक्षक का काम किसी विद्यार्थी को केवल विषय में निपुण बनाना भर नहीं रह गया है बल्कि देश और दुनिया का जिम्मेदार नागरिक भी बनाना है।

हो सकता है आपके जीवन में भी कभी न कभी एक ऐसा गुरु या शिक्षक का आगमन हुआ हो जिसने आपके जीवन की दिशा बदल दी या फिर आपको जीवन जीने का सही ढंग सिखाया हो। ऐसे गुरु को शत्-शत् नमन!!

होली के उपलक्ष में

पूनम भाटिया

पूनम भाटिया जी एक अभिभावक के रूप में हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हैं। पूनम जी की बेटी, प्रग्या भाटिया पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला में प्रथमा-१ की छात्रा है।

ज़िंदगी रंगों के मेल से ही तो है बनी
सुबह की लाली, नीले गगन में जब मिली
पेड़ पत्तों की हरियाली, सुनहरी किरणों से खिली
साँझ को घेरती काली रात, टिमटिमाते तारों से सजी
तो दिल में ख़ुशी की इक लहर सी चली
होली ने फिर बैसाख के आने की दस्तक दी है
रंग-बिरंगे फूलों ने महकने की कोशिश की है
पिछले बरस भी ऐसे ही पल आये थे
जब कलियों से बने फूल यूं मुस्कराए थे
हर साल हम वही रंग पाते हैं, पर फिर भी
ये हमें कितना नया एहसास दिलाते हैं
हम ख़ुशी से होली का त्योहार मनाते हैं
और ये रंग जीवन में प्यार व उत्साह लाते हैं
हर गली में, घर में, कोने में व चेहरे पर
रंगों की फुहार होती है
और दिल से निकले शब्द जुबां पर आ कर कहते हैं कि
"होली है", "होली है"!!

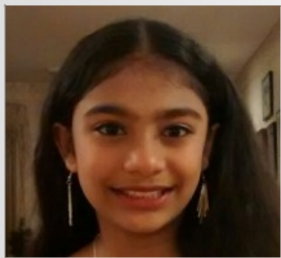

मेरा नाम पलक जैन है। मैं चैरीहिल हिन्दी पाठशाला की उच्चस्तर-१ की छात्रा हूँ। मुझे चित्रकारी करना बहुत पसंद है। यह चित्र मैंने अपनी बहन के लिए बनाया है। उसे जानवर बहुत पसंद हैं और कुत्ता उसका सबसे प्रिय जानवर है।

- पलक जैन

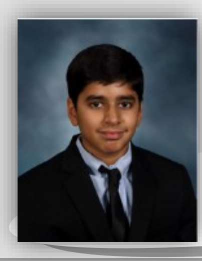

ब्रह्म ऋषि गुरुवानंद स्वामी जी

प्रणय जग्गी
ऋतु जग्गी

मैं प्रणय जग्गी सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। सात साल हिन्दी यू.एस.ए. में पढ़ने के बाद, २०१४ में स्नातक हुआ हूँ। अब मुझे हिन्दी यू.एस.ए. में स्वयंसेवक का काम करना अच्छा लगता है। मुझे खाली समय में टेबल टेनिस खेलने का शौक़ है और मुझे पियानो बजाना भी बहुत अच्छा लगता है।

१२ जुलाई २०१४ के दिन मैं मेरी माताजी के साथ ब्रह्म ऋषी गुरुवानंद स्वामी जी का प्रवचन सुनने के लिए न्यू जर्सी परफार्मिंग आर्ट्स सेंटर गया था। गुरुवानंद स्वामी जी ने भारत से इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है और संस्कृत में पी.एच.डी. भी किया है। सब लोग प्यार से स्वामी जी को गुरुदेव बुलाते हैं। गुरुदेव को देखकर और उनका प्रवचन सुनकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। गुरुदेव के आने पर बहुत अच्छा स्वागत समारोह हुआ। वह सांस्कृतिक कार्यक्रम देखकर सभी दर्शक बहुत खुश हुए। कार्यक्रम के बाद गुरुदेव का प्रवचन शुरू हुआ। उनका प्रवचन बहुत ही सरल हिन्दी भाषा में था जिसे मैं बहुत आसानी से समझ पाया। मैं गुरुदेव के पूरे व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ पर मुझे सबसे अच्छा लगा उनका मुस्कराता हुआ चेहरा। गुरुदेव अपने प्रवचन में बहुत मज़ेदार कहानियां सुना रहे थे। मैं यह देखकर बहुत हैरान हो गया कि गुरुदेव को देखने और मिलने के लिये लोग ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और भारत से भी आये हुए थे। गुरुदेव का तिरुपति, भारत में आश्रम है जिसमें वे गरीब लोगों की सहायता करते हैं।

एक अभिभावक के विचार

मैं शरद जैन अपनी बेटी ईशा जैन के साथ एडिसन में रहता हूँ। ईशा एडिसन हिन्दी पाठशाला में प्रथमा-२ की छात्रा है। ईशा को हिन्दी पाठशाला जाना बहुत ही पसन्द है। वह प्रति वर्ष कविता प्रतियोगिता तथा हिन्दी महोत्सव में भी भाग लेती है। घर में हम हिन्दी भाषा में ही बात करते हैं। हिन्दी बोलते हुए कभी-कभी ईशा अंग्रेज़ी में भी बात करने लगती है। मेरे विचार से यह स्वाभाविक है, क्योंकि अमेरिका में बच्चों का अधिक समय अंग्रेज़ी बोलने में व्यतीत होता है, परंतु मैंने सोचा है कि मैं उसके साथ सदैव ही हिन्दी भाषा में बात करूँगा। आरम्भिक दिनों में वह बोल नहीं पाती थी, परंतु अब धीरे-धीरे बहुत कुछ सीख गई है। एक दिन हम दोनों भारत और अमेरिका के महान व्यक्तियों की चर्चा कर रहे थे, तब ईशा ने यहाँ प्रस्तुत चित्र बनाए।

मुझे ईशा को हिन्दी यू.एस.ए. की हिन्दी कक्षा में भेजने के अपने निर्णय पर गर्व है। मैं सभी अभिभावकों से यही कहना चाहूँगा कि जब तक हम घर में हिन्दी भाषा में बात नहीं करेंगे तब तक बच्चे बोलना नहीं सीख पाएँगे और लिखने, पढ़ने के साथ ही साथ हिन्दी बोलना भी उतना ही आवश्यक है।

हिन्दी यू.एस.ए. एक बहुत बड़ा काम कर रहा है। सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम, पुस्तकें, समय-समय पर प्रतियोगिताओं का आयोजन इत्यादि वे भी स्वयंसेवियों द्वारा संचालित, बहुत ही आश्चर्यचकित कर देने वाली बात है, और बहुत ही गर्व की बात है! इस संस्था के सभी कार्यकर्ताओं को मेरा नमन, हार्दिक अभिनंदन, आभार! धन्यवाद,

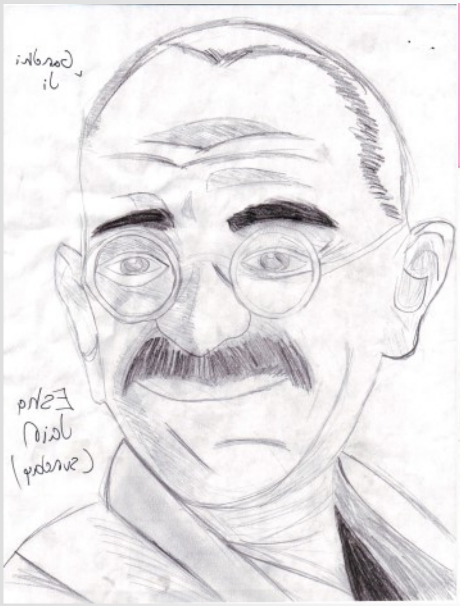

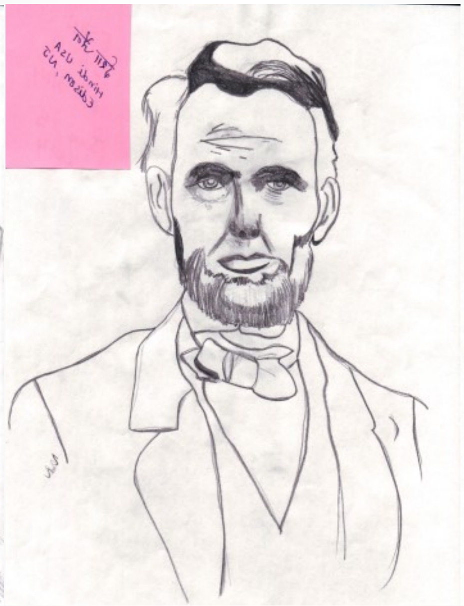

साऊथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला

कविता प्रसाद

साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला की प्रथमा-दो 'ब' कक्षा में हम पढ़ाई के साथ-साथ पाठ्यक्रम पर आधारित कई प्रकार की परियोजनाओं एवं क्रियाओं में भाग लेते हैं। इससे कक्षा का वातावरण मनोरंजक तथा उत्साहवर्धक बना रहता है साथ ही साथ छात्रों की रुचि पढ़ाई में बनी रहती है। मुख्य रूप से मौखिक शब्दावली पर आधारित परियोजनाओं पर हम ज्यादा महत्व देते हैं जिससे छात्र इन शब्दों का अर्थ समझें एवं वार्तालाप में प्रयोग करना सीखें।

इस वर्ष भी विद्यार्थियों ने कई मनोरंजक क्रियाओं में कर्मठता से भाग लिया जैसे कि दो अक्षर वाले शब्दों पर आधारित कैलेंडर बनाना, मेरा घर, मेरा कमरा, चाट बनाने कि विधि का रेसिपि कार्ड, भारतीय व्यंजनों पर आधारित मेरी थाली इत्यादि। जॉन हेनरिक क्लार्के ने कहा था कि "एक अच्छा शिक्षक एक अच्छे मनोरंजन करने वाले की तरह पहले अपने दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है और फिर पढ़ाता है"। मेरा भी यही मानना है कि हमें अपनी शिक्षण विधि को बच्चों के अनुसार सरल एवं दिलचस्प बनाए रखना चाहिए जिससे छात्रों में हिन्दी भाषा सिखाने की प्रेरणा बनी रहे।

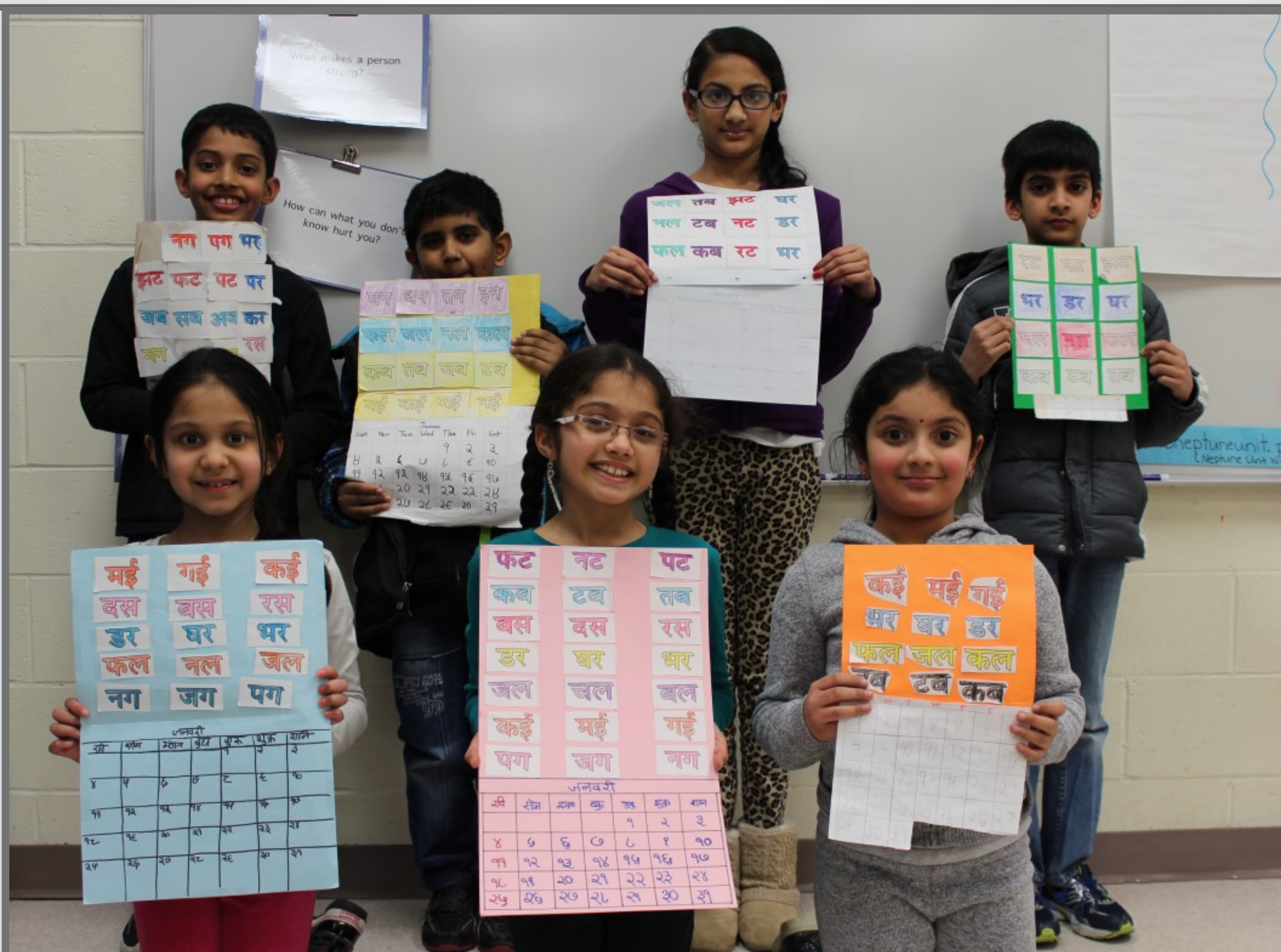

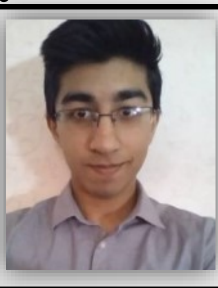

हिन्दी यू.एस.ए. में मेरा अनुभव तथा हिन्दी सीखने के लाभ

मेरा नाम जय शहानी है और मैं हिन्दी यू.एस.ए. का एक पूर्व छात्र हूँ। मैंने एडिसन हिन्दी पाठशाला में पाँच साल हिन्दी सीखी और अब मैं कनिष्ठ-२ स्तर के बच्चों को हिन्दी सिखाता हूँ। यह लेख प्रस्तुत करेगा कि कैसे हिन्दी ने मेरा जीवन बदल दिया और मुझे हिन्दी सीखने से क्या लाभ हुए?

हिन्दी सीखना

हिन्दी मेरी मातृभाषा है तो मुझे अच्छी हिन्दी आती थी पर मुझे पता था कि मुझे अपनी हिन्दी को और भी परिष्कृत करना था। मेरे पिताजी ने कहा कि मैं हिन्दी यू.एस.ए. की एडिसन हिन्दी पाठशाला में चला जाऊँ। मैं बस ८ साल का था, मुझे पहले थोड़ा डर लगा पर मेरी शिक्षिका बहुत अच्छी थी। मुझे बहुत मज़ा आया और मैं हर शुक्रवार को हिन्दी पाठशाला में जाता था। मैंने बहुत अच्छे से हिन्दी लिखना, पढ़ना और बोलना सीखा, बहुत से नए-नए शब्द और उनका प्रयोग सीखा।

मेरे आखिरी दो साल हिन्दी पाठशाला में मुश्किल थे पर सबसे समृद्ध साल थे। इन दो सालों में मैंने नए शब्द सीखे जो मैं अब आसानी से इस्तेमाल कर सकता हूँ और मैंने अनुवाद करना, लेख लिखना, कविता लिखना और तेज़ी से हिन्दी लिखना, पढ़ना, और बात करना सीखा। इन दिनों मैंने बहुत दोस्त बनाए और उनके साथ मैं अभी हिन्दी में बात करता हूँ।

हिन्दी सिखाना

हर शुक्रवार, मैं और मेरे दोस्त एडिसन पाठशाला में कनिष्ठ-२ स्तर के बच्चों को हिन्दी सिखाने जाते हैं। मैं बहुत खुश हूँ कि छोटे-छोटे बच्चों को हिन्दी सिखा सकता हूँ, और मुझे बहुत अच्छा भी लगता है कि मैं अपनी जानकारी बच्चों को दे सकता हूँ। और मुझे लगता है कि मेरा जीवन अब बदल गया है। मुझे उम्मीद है कि मेरे छात्र मेरा पथ लेंगे और एक दिन मेरी तरह हिन्दी सिखाएँगे। हिन्दी यू.एस.ए. एक बहुत सफल संगठन है जो हिन्दी बहुत अच्छे से सिखाता है और हमें सीखने और सिखाने का अवसर देता है।

हिन्दी सीखने के लाभ

हिन्दी पूरी दुनिया में सबसे प्यारी भाषाओं में से एक है। भारत में हिन्दी बहुत प्रकार से बोली जाती है। हिन्दी भाषा, संस्कृत भाषा से जो एक सुन्दर और उच्च भाषा है, से बनाई गई है। महाभारत और रामायण दो महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं, जो हिन्दी और संस्कृत में लिखे गए हैं। महाभारत और रामायण भारतीय संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस भाषा ने कई लोगों के जीवन को परिवर्तित किया है। यह काव्य भाषा बड़ी सुंदरता से प्रेम, सौंदर्य, वीर रस, करुण भाव को व्यक्त करती है। यह सबसे आसान भाषाओं में से एक है। विदेश में लाखों लोगों का यह कहना है कि हिन्दी उनकी मातृभाषा है। इसी कारण वे इस भाषा को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाना चाहते हैं। इसलिए विदेश में रहने वाले १२ करोड़ लोग हिन्दी को अपनी दूसरी भाषा मानते हैं।

हिन्दी को बड़ी आसानी से सीखा जा सकता है। हिन्दी भाषा सीखने से आप अन्य भारतीय सामाजिक संस्थाओं से जुड़ जाते हैं। हिन्दी लाखों लोगों के साथ जुड़ने का एक सुन्दर तरीका है। भारतीय लोग बहुत

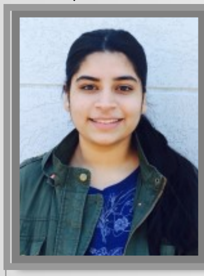

मेरा हिन्दी अनुभाव

मेरा नाम मोक्षा सेठ है। मैं वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला में सहायक शिक्षिका के रूप में हिन्दी पढ़ाती हूँ। आज मैं आपके साथ अपनी हिन्दी पाठशाला के अनुभव बाँटना चाहती हूँ। वैसे मेरा अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है लेकिन हमेशा मेरे मन में एक डर रहता था कि मैं कहीं गलत हिन्दी तो नहीं बोल रही हूँ या मैंने कुछ पूछ लिया तो मेरी शिक्षिका क्या सोचेगी? पर मैंने अपना वह पड़ाव तो पार कर लिया और फिर बारी आई मेरे सहायक शिक्षिका बनने की। वैसे मेरा बचपन से सपना रहा है अध्यापिका बनने का पर वो इतनी जल्दी पूरा हो जाएगा वो मैंने सोचा नहीं था। जब मैं हिन्दी पाठशाला में पहले दिन गई तो शायद बच्चों से ज्यादा मैं डरी हुई थी, पर कक्षा में जाकर छोटे-छोटे बच्चों से मिलकर बहुत अच्छा लगा। मुझे अपने दिन याद आ गए कि मुझे हर शुक्रवार को कैसा अनुभव होता था। अब शिक्षिका बनकर मैं बच्चों की भावनाओं को समझ सकती हूँ और वे क्या सोचते हैं वह अनुमान भी लगा सकती हूँ। बच्चे किसी भी शब्द को गलत बोलते हैं या बोलने से डरते हैं तो उनकी सहायता करना मुझे अच्छा लगता है। अब मुझे लगता है कोई भी चीज़ इतनी कठिन नहीं है पर कोई अच्छे से समझाए तो हम कर सकते हैं। मुझे सब अच्छे शिक्षक मिले तो अब मैं भी कोशिश करती हूँ कि मैं भी अच्छी शिक्षिका बन सकूँ। और एक बात मैं बोलना चाहूँगी इस बार जब कविता प्रतियोगिता में मैं बच्चों के नाम बोल रही थी तो मुझे बहुत खुशी हो रही थी पर वो बच्चे जो कविता में भाग ले रहे हैं जो पीछे खड़े हैं उनके दिल पर क्या गुजरती है, कितना डर होता है वो मैं समझ सकती हूँ क्योंकि ये मैंने भी अनुभव किया है। मंच पर जाकर जज के और सब लोगों के सामने बोलना बहुत बड़ी बात है।

मैं हिन्दी यू.एस.ए. संस्था और सभी कार्यकर्ताओं की शुक्रगुजार हूँ जिन्होंने भारत से दूर होने पर भी हमें हमारी भाषा और संस्कृति के इतने पास रखा है और भारत को हमारे दिल से दूर नहीं होने दिया।

धन्यवाद

हिन्दी यू.एस.ए. में मेरा अनुभव...

बुद्धिमान, उदार, और सुसंस्कृत होते हैं। इसलिए, भारत अन्य दिशाओं में प्रगति कर रहा है क्योंकि भारतीय लोगों ने विदेश में रह कर भी अपनी संस्कृति को कायम रखा है। भारत की अर्थव्यवस्था बड़ी तेज़ी से प्रगति कर रही है। हिन्दी भाषा की जानकारी होने से लोगों की प्रगति के रास्ते खुल जाते हैं। जब विदेश में पलने वाले छोटे-छोटे बच्चे बुज़ुर्गों से हिन्दी में वार्तालाप करते हैं तो वे तुरंत उनका दिल जीत लेते हैं। यह हिन्दी भाषा की मिठास ही तो है जो दिलों को जोड़ती है।

भारतीय संस्कृति

मैं रचना दुबे एडिसन पाठशाला की मध्यमा-३ की शिक्षिका हूँ। मेरे सभी छात्र बारह साल से ऊपर की उम्र के हैं। एक दिन कक्षा के दौरान मैंने सोचा की क्यों न इन बच्चों से आज हिन्दी पढ़ने के पीछे हमारा क्या ध्येय है पूछा जाये। उनमें से अधिकतर बच्चों ने बताया की ये हमें हमारी संस्कृति से जोड़ता है। मेरा दूसरा प्रश्न था कि आप के अनुसार भारतीय संस्कृति क्या है, लिख कर लाओ। प्रस्तुत है, इन बच्चों की समझ से हमारी भारतीय संस्कृति।

वत्सल मेहता

भारत एक बहुविध देश है। भारत में अनेक धर्मों के लोग निवास करते हैं, जिनमें मुख्य रूप से हिन्दू, इसलाम और ईसाई हैं। जैसे कि अनेक जाति के लोग भारत में रहते हैं, वैसे ही खान-पान में भी विविधता देखने में आती है। भारतीय खाने को बहुत देशों के लोग पसंद करते हैं। भारत के लोग गाय को एक पवित्र प्राणी मानते हैं।

भारत में बहुत त्योहार मनाये जाते हैं। होली और दिवाली दो महत्वपूर्ण त्योहार हैं। दिवाली के दिन देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है। भारत में पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर के प्रदेशों में व्यंजन भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं। उत्तर भाग में छोले भटूरे तथा दक्षिण में इडली वड़ा बहुत बनाया जाता है। भारत में औरतें साड़ी तथा सलवार कमीज पहनती हैं। पुरुष पैंट कमीज तथा कुरता पजामा पहनते हैं। भारत में हिन्दू, ईसाई तथा जैन धर्म मानने वाले लोग रहते हैं। भारत में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है।

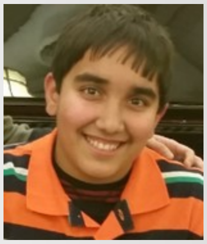
अमेय वेंकनारायण

जय पप्पू

भरतीय संस्कृति बहुत सुन्दर है। हमारा देश बहुत बड़ा है। हमारे भगवान बहुत सुन्दर हैं। लक्ष्मी माता धन की देवी हैं। हमारे धर्म में बहुत से भगवान हैं।

दिवाली एक मजेदार त्योहार है। यह रोशनी का त्योहार है। लोग नए कपड़े पहनते हैं। यह एक हिन्दू त्योहार है। यह अक्टूबर में होता है। मैं चाहता हूँ कि दिवाली हर दिन आये।

पृथ्वी राजबाबू

अभिनव आर्य

भारतीय संस्कृति बहुत पुरानी है, वहाँ पर अभी भी संयुक्त परिवार होते हैं। लोग घरों में रोज ताजा खाना बनाते हैं जो स्वास्थ्य के लिये बहुत अच्छा होता है। अलग-अलग धर्मों को मानने वाले लोग एकजुट होकर रहते हैं। कत्थक और भरतनाट्यम नृत्य की प्रचलित शैली है। भारत के कुछ मुख्य त्योहार दीपावली, होली, राखी, मकर संक्रांति, दशहरा, लोड़ही और ईद हैं। दीपावली अच्छाई पर बुराई की जीत के रूप में दिये जलाकर और मिठाई बाँटकर मनाते हैं। दीपावली पर बच्चे पटाखे जलाते हैं। होली रंगो का त्योहार हैं। लोग नई फसल आने की खुशी में मनाते हैं। रक्षाबंधन में बहनें अपने भाइयों को राखी बाँधकर उनके स्वास्थ्य की कामना करती है और भाई उनकी सहायता का वचन देते हैं। भारत में बहुत सारी भाषाएँ बोली जाती है, हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है।

अमृता सेलवराजा

भारत की संस्कृति सबसे पुरानी और अपने में एक अजूबा है। सबसे प्रसिद्ध भारतीय खाद्य पदार्थ में से कुछ, बासमती चावल, रोटी या नान के साथ पनीर और बिरयानी है। भारत में शाकाहारियों और गैर-शाकाहारियों के लिए विभिन्न प्रकार के खाने हैं। भारतीय व्यंजन भारत के अलग-अलग स्थानों के खाद्य पदार्थों की किस्मों के लिए प्रसिद्ध उदाहरण है। सबसे प्रसिद्ध एक मुगल शाहजहां द्वारा निर्मित्त ताजमहल है। भारत में प्रसिद्ध स्थानों के अन्य उदाहरण इंडिया गेट, मरीना बीच, हिमालय और स्वर्ण मंदिर है। भारत अच्छी तरह से अकसर बॉलीवुड के रूप में जाना जाता है जो अपनी फिल्म उद्योग के लिए जाना जाता है। भारतीय नृत्य संगीत और थिएटर की परंपरा २००० साल से अधिक पुरानी है। भारतीय महिलाएँ साड़ी पहनती हैं। पुरुषों के कपड़ों का उदाहरण कुर्ता और धोती है। यह सब भारतीय संस्कृति के बारे में है।

विनय बालन

भारत में दीपावली बहुत महत्वपूर्ण त्योहार है। दीपावली का त्योहार कार्तिक अमावस्या को मनाया जाता है। यह पाँच दिन तक चलता है। कहते हैं कि इस दिन भगवान रामचन्द्रजी लंका विजय कर अयोध्या आये तो सभी लोगों ने ख़ुशी से अपने घर में दीपक जलाकर उनका स्वागत किया। इस दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं और मिठाइयाँ खरीदकर अपने दोस्तों में बाँटते हैं। सभी लोग अपने घर में रात को लक्ष्मी पूजा करते हैं।

प्राणवी पारसी

हम सब भारत से हैं। भारत हमारी जन्मभूमि है और इसने हमारे जीवन को कई प्रकार से निखारा है। भारत की संस्कृति अन्य देशों की संस्कृति और धर्म से अलग है।

भारत में बहुत से देवी और देवताओं को मानते हैं। हमारे मुख्य देवता हैं - ब्रह्मा, विष्णु और शिव। ब्रह्मा सृष्टि की रचना करते हैं। विष्णु इसे सम्भाल कर रखते हैं। शिव इसका नाश कर सकते हैं। ये त्रिमूर्ति है।

भारत के प्रमुख त्योहार हैं - दशहरा और दिवाली। लेकिन अलग-अलग जगह में अलग-अलग त्योहार मनाते हैं। पतझड़ के मौसम में दशहरा के पर्व को मनाया जाता है। इस दशहरे वाले दिन भगवान राम ने रावण का वध किया था। दिवाली के दिन भगवान राम वापिस अयोध्या गए थे। ये दो त्योहार पूरे भारत के लोग खुशी से मनाते हैं।

भारत की सड़कों पर आप लोगों को भिन्न-भिन्न तरह के कपड़ों में देख सकते हैं। कुछ लोग विदेशी कपड़े पहनते हैं; कुछ लोग भारतीय कपड़े पहनते हैं। उसके अलावा लोग कुछ पर्वों पर हिन्दुस्तानी कपड़े पहनते हैं, जैसे कि दिवाली वाले दिन घाघरा-चोली पहनते हैं; न सिर्फ ये बल्कि रोज के जीवन में लोग अलग-अलग तरह के कपड़ों को पहनने लगे हैं; जैसे - कुर्ती से साड़ी तक एक ही दिन में पहन सकते हैं। उसके अलावा भारतीय फैशन दूसरे देशों में भी प्रचलित होने लगा है जैसे कि अमेरिका में भी पटियाला सलवार और कुर्ता वगैरह।

अंत में भारत में भिन्न-भिन्न तरह के खाने बहुत प्रचलित हैं। रोटी, नान, चावल और सब्जी ये तो काफी प्रचलित हैं। उसके अलावा कई तरह की मिठाइयाँ जैसे - गुलाब जामुन और कुल्फी के कारण भारत का खाना बहुत अलग है। ये सब हमारे भारत को खास बनाता है।

हमारे होनहार विद्यार्थी

सिया रगड़े

सिया एडिसन हिन्दी पाठशाला में प्रथमा-१ की छात्रा है। सिया जुलाई २०१५ में तेरह वर्ष की होगी। सिया का जन्म भारत के चेन्नई शहर में हुआ और साढ़े सात वर्ष की आयु में वह अपने माता-पिता के साथ अमेरिका आई। उसे ट्रैक और फील्ड स्पर्धाओं में दिलचस्पी थी और एक बार छुट्टियों में थ्रो बॉल खेलते समय उसकी सजगता देखकर उसके माता-पिता ने उसे बैडमिंटन खेलने के लिए प्रेरित किया। ६ वर्ष की आयु में सिया ने बैडमिंटन एक शौक के रूप में शुरू किया और यह खेल शीघ्र ही एक जुनून में बदल गया। उसका इस खेल के प्रति लगाव देखकर एक वरिष्ठ कोच ने पुणे यूथ क्लब और जिमखाना में सिया को प्रशिक्षण देना आरम्भ किया। परन्तु जब वे नैशविल (टेनेसी) आए तो उसकी इस रुचि को बनाए रखने के लिए कोई प्रशिक्षण केंद्र नहीं मिला। तीन साल बाद सिया के माता-पिता न्यू जर्सी आए और अगस्त २०१३ में सिया ने एडिसन के इंटरनेशनल बैडमिंटन क्लब में एक वरिष्ठ कोच की निगरानी में अपना प्रशिक्षण आरम्भ किया। उसी वर्ष सितम्बर २०१३ में सिया ने सुपर रीजनल टूर्नामेन्ट में भाग लिया। यह उसका पहला टूर्नामेंट था, और सिया ने १३ वर्ष से कम के आयु समूह में लड़कियों के युगल और मिश्रित युगल में जीत हासिल की। उसकी कड़ी मेहनत ने उसे राष्ट्रीय जूनियर रैंकिंग हासिल करने में सहायता की और १३ वर्ष से कम के आयु वर्ग में लड़कियों के एकल में तेईसवें, लड़कियों के युगल में उन्नीसवें, और मिश्रित युगल में अट्ठाईसवें स्थान पर रही।

सिया इस खेल के लिए प्रति समर्पित है और बैडमिंटन में सर्वोच्च सम्मान हासिल करना चाहती है। उसके प्रशिक्षक उसकी तेज प्रगति से बहुत प्रसन्न हैं और उन्हें पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में वह उच्च लक्ष्यों को प्राप्त करेगी।

बैडमिंटन के अलावा सिया पढ़ाई में भी बहुत अच्छी है। उसे राष्ट्रपति ओबामा द्वारा पढ़ाई में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रपति पदक और प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया है।

सिया भारतीय एवं पाश्चात्य, दोनों तरह का संगीत पसंद करती है। वह स्कूल बैंड में बाँसुरी बजाती है और उसे "फर्स्ट चेयर" का सम्मान प्राप्त है। सिया ने एसोसिएटेड बोर्ड ऑफ़ द रॉयल स्कूल ऑफ़ म्यूज़िक, लंदन, से बाँसुरी के लिए ग्रेड ४ और ५ परीक्षा दी है, और क्रमश: "डिस्टिंक्शन" और "मेरिट" हासिल की है।

सिया को सभी भारतीय भाषाओं के गानों की सरगम समझना बहुत अच्छा लगता है। उसने शंकर महादेवन की संगीत अकादमी से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के दो स्तरों को सीखा है।

अभी पिछले दिनों ही उसके निजी बाँसुरी शिक्षक ने उसे रट्गर्स विश्वविद्यालय में "मेसन ग्रोस स्कूल ऑफ़ द आर्ट्स" में युवा कलाकारों के संगीत

कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सिफारिश की है। सिया अपनी राष्ट्रीय भाषा से जुड़े रहने के लिए हिन्दी सीखना चाहती थी। हमें प्रसन्नता है कि हम हिन्दी यू.एस.ए. का हिस्सा हैं, यह एक और अवसर है जो नैशविल में उपलब्ध नहीं था, और सिया हिन्दी यू.एस.ए. की एडिसन पाठशाला में बहुत प्रसन्न है।

वरदान टंडन

जीवन के संघर्ष की लड़ाई और सफलता की चढ़ाई के बीच की यात्रा, कई कठिनाइयों से गुजरती है। बच्चे इसी यात्रा से गुजरते हुए निखरते हैं और ऐसे ही एक बच्चे की कहानी, इस लेख से व्यक्त होती है। कड़ी परिश्रम और धैर्य का फल हमेशा ही मीठा होता है और इसी मार्ग पर चलता हुआ यह है, हिन्दी यू.एस.ए. का एक विद्‍यार्थी वरदान टंडन। वरदान पिछले ५ वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. में हिन्दी सीख रहा है। उसे हिन्दी में बात करना और भारतीय संस्कृति से बहुत लगाव है। छोटी आयु में ही उसने Racquetball में बड़ी उपलब्धि हासिल की है।

कई खेल ऐसे होते हैं, जिन्हें हम एक टीम के साथ खेलते हैं और कई खेल का पूरा परिणाम आपके अपने या फिर आपके एक साथी के ऊपर निर्भर होता है। ऐसा ही एक खेल है **रैकेटबॉल (Racquetball)**, जिसे ज्यादातर एकल और युगल की श्रेणी में ही खेला जाता है।

हर बच्चे की तरह वरदान ने भी अपने खेल की शुरुआत कई खेलों से की पर आहिस्ता-आहिस्ता उसकी रुचि इस खेल में बढ़ने लगी। वर्ष २०१० में वरदान ने अपना पहला खेल का मुक़ाबला खेला, उस समय वह बिल्कुल नहीं जानता था कि, वह एक खेल प्रतियोगिता के लिये जा रहा है। जब कई वर्गों के खेलों के बाद वरदान को विजेता घोषित किया तब उसकी ख़ुशी का ठिकाना ना था और इस जीत ने उसे बहुत प्रोत्साहित किया।

उसने पढ़ाई के साथ-साथ समय मिलने पर अपने इस खेल के प्रति रुचि दिखाई और अभ्यास की शुरुआत की। वर्ष २०१३ और २०१४ में उसने अपने आयु वर्ग में न्यूजर्सी और न्यूयॉर्क जीत हासिल की और इसी की वजह से उसे राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता के लिए आमंत्रित किया गया। इस प्रतियोगिता में भी वह अपनी आयु वर्ग में विजेता घोषित हुआ।

वरदान की विजय ने उसे खेल के माध्यम से सिखाया कि विजयी होना और फिर भी विनम्र रहना यह अच्छे खिलाड़ी की पहली निशानी है। वर्तमान में वरदान अपने से बड़ी आयु वर्ग में खेलता है और कई बार उसे हार का सामना करना पड़ा लेकिन जीवन में डटे रहना और हिम्मत ना हारना भी उसने यहीं से सीखा। हाल ही में उसने मेंन्स सिंगल्स "न्यूयॉर्क प्रो चैंपियन २०१५" में "D श्रेणी" के पद से सम्मानित किया गया।

वरदान अब जून २०१५ में "स्टॉकटन कॅलिफॉर्निया" में दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर खेलने की तैयारी कर रहा है। आप सभी पाठकों से वरदान अपनी शुभेच्छा की आशा करता है। वरदान अपने हिन्दी यू.एस.ए. के सभी अध्यापक, अध्यापिकाओं और माणक जी को धन्यवाद देता है जिन्होंने हर कदम पर उसका साथ दिया और प्रोत्साहित किया।

हिन्दी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम

सत्र २०१४-१५ में हिन्दी यू.एस.ए. ने वर्ष भर अनेक कार्यक्रमों और गतिविधियों का आयोजन किया। यहाँ पर कुछ प्रमुख कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत है।

मासिक सभाएँ - सितंबर माह से अब तक हिन्दी यू.एस.ए. ने ७ मासिक सभाओं का आयोजन किया। इन सभाओं में विभिन्न पाठशालाओं के संचालकों तथा स्वयंसेवकों ने भाग लेकर कई विषयों पर अपने-अपने विचार रखे। पाठशालाओं तथा संचालन में आने वाली समस्याओं और समाधान पर विचार किया गया। तत्कालीन कार्यक्रमों की तैयारी तथा उत्तरदायित्वों का वितरण भी किया गया। इन सभाओं का उद्देश्य हिन्दी यू.एस.ए. को संगठित कर सुचारू रूप से चलाने का प्रयास करना है। प्रत्येक सभा के अंत में सभी कार्यकर्ता साथ-साथ भोजन करते हैं।

पुस्तक वितरण - अगस्त माह के अंतिम सप्ताहांत में सभी पाठशालाओं के संचालकों ने अपनी-अपनी पाठशालाओं के लिए विभिन्न स्तरों की पुस्तकों को हिन्दी यू.एस.ए. के पुस्तक भंडार से एकत्रित किया। हिन्दी यू.एस.ए. में हिन्दी कक्षाओं के ९ स्तर हैं और प्रत्येक स्तर में ३ से लेकर ४ पुस्तकें तथा चित्र फ्लैश कार्डस् भी हैं। अत: यह काम दिखने में जितना छोटा लगता है, करने में उससे कई गुना बड़ा है।

शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर - प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी शिक्षकों में प्रशिक्षण शिविर के प्रति विशेष उत्साह देखने को मिला, विशेषकर कनिष्ठ - १, कनिष्ठ - २, प्रथमा - १ तथा प्रथमा - २ के शिक्षकों की उपस्थिति संख्या तथा भागीदारी सराहनीय रही।

सितम्बर माह के तीन सप्ताहांतों में हिन्दी यू.एस.ए. ने ९ स्तरों का शिक्षक प्रशिक्षण सम्पन्न किया। इस प्रशिक्षण शिविर का उद्देश्य शिक्षकों को उनके स्तरों के पाठ्यक्रमों, पुस्तकों तथा शिक्षण-सामग्री की जानकारी देना तथा इस सामग्री का सही उपयोग करना सिखाना है। इसके अतिरिक्त हिन्दी वार्तालाप, कविता आदि को हिन्दी शिक्षण में स्वाभाविक रूप से कैसे समाहित किया जाए, इसकी जानकारी देना है। इसके अतिरिक्त शिक्षकों के प्रश्नों, समस्याओं, आवश्यकताओं को जानना और उसका समाधान करना भी इस शिविर का उद्देश्य है। पिछले १४ वर्षों से संस्था अनेक शिक्षकों में आत्मविश्वास जगाने तथा सही तरीके से हिन्दी सिखाने की दिशा में अत्यधिक सफल रही है।

शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर

दीपावली उत्सव - हिन्दी यू.एस.ए. की सभी पाठशालाओं में दीपों के पर्व दीपावली को भिन्न-भिन्न प्रकार से मनाया गया। इस दिन सभी

पाठशालाओं में संस्था की ओर से प्रति वर्ष मिठाई बाँटी जाती है। विद्यार्थियों ने सुंदर भारतीय परिधान पहन कर दीपावली क्यों, कैसे और कब मनाई जाती है और साथ में दीवाली की कविताएँ, नाटक, गणेश और लक्ष्मी जी की आरती आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कुछ पाठशालाओं ने अपने शहर के अमेरिकन पदाधिकारियों, शिक्षकों तथा शिक्षा से सम्बंध रखने वाले कुछ अतिथियों को भी आमंत्रित कर भारतीय संस्कृति से परिचित करवाया। विद्यार्थियों ने अपनी शिक्षिकाओं के निर्देशन में अपनी कक्षाओं तथा पाठशालाओं को रंगोली, अल्पना तथा दिवाली शिल्प (क्राफ्ट) से सजाया। कई पाठशालाओं में विद्यार्थियों के परिवारों ने मिलकर रात्रि-भोज का आयोजन किया। इस प्रकार इस वर्ष भी यह पर्व सभी को पूरे वर्ष के लिए उत्साहित और ऊर्जावान बना गया।

शिक्षक अभिनंदन - प्रतिवर्ष हिन्दी यू.एस.ए. स्वयंसेवकों तथा सेविकाओं को धन्यवाद देने के लिए उनके सम्मान में एक प्रीतिभोज का आयोजन करता है। पिछले वर्ष यह कार्यक्रम ६ दिसंबर को मनाया गया। इसमें सभी पाठशालाओं के शिक्षकों ने नृत्य, नाटक, गीत, कव्वाली, भजन, प्रार्थना आदि प्रस्तुत किए। सभी ने अपनी विभिन्न कलाओं तथा अपने अथक परिश्रम और उत्साह से इस कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सभी ३५० स्वयंसेवकों तथा स्वयंसेविकाओं का आभार प्रकट करना तथा उनका उत्साह बढ़ाना है।

अर्धवार्षिक परीक्षा - हिन्दी यू.एस.ए. की सभी पाठशालाओं में जनवरी के द्वितीय सप्ताह में लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया गया। सभी विद्यार्थियों ने इस परीक्षा को गंभीरता से लिया तथा परिणाम ९५% रहे।

कविता पाठ प्रतियोगिता - गत १३ वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. कविता पाठ प्रतियोगिता का विशाल आयोजन करता आ रहा है। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में होती है। प्रथम चरण में सभी पाठशालाएँ अपनी-अपनी पाठशालाओं में प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों की प्रतियोगिता का आयोजन कर सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों का चयन करती हैं। द्वितीय चरण में ये विद्यार्थी अन्य पाठशालाओं के विद्यार्थियों के साथ

हिन्दी यू.एस.ए. स्तर संचालिकाएँ

स्पर्धा करते हैं। इस अंतर्पाठशाला प्रतियोगिता में हिन्दी यू.एस.ए. की १८ पाठशालाएँ भाग लेती हैं तथा प्रत्येक स्तर के लगभग १० से लेकर १५ सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को तीसरे चरण की प्रतियोगिता, जो हिन्दी महोत्सव में होती है, में जाने का सुअवसर प्राप्त होता है। यह सबसे अधिक लोकप्रिय प्रतियोगिता है। विद्यार्थी तथा अभिभावक हार और जीत की चिंता किए बिना बहुत उत्साह के साथ इसमें भाग लेते हैं तथा पूरे वर्ष अगली प्रतियोगिता की प्रतीक्षा करते हैं। इसमें सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है। यह प्रतियोगिता २००० विद्यार्थियों से प्रारंभ होकर ४५ विजेताओं पर समाप्त होती है।

हिन्दी महोत्सव - इस वर्ष हिन्दी यू.एस.ए. ने अपना १४ वाँ हिन्दी महोत्सव मनाया। हिन्दी महोत्सव द्विदिवसीय वार्षिक उत्सव है। हिन्दी महोत्सव का उद्देश्य हिन्दी सीख रहे प्रवासी विद्यार्थियों को मंच प्रदान करना, हिन्दी का प्रचार और प्रसार करना, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करना, भारतीय संस्कृति तथा कला से अमेरिका को परिचित करवाना है। हिन्दी महोत्सव में हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशाला में पढ़ने वाले २००० से अधिक बच्चे, जोकि ५ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक के हैं, अपने-अपने हिन्दी स्तर तथा आयु के आधार पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। अधिकांश कार्यक्रम प्रतियोगिता के रूप में होते हैं, जैसे सामूहिक गीत प्रतियोगिता, पाठ्यक्रम पर आधारित प्रतियोगिता, लोक नृत्य प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, व्याकरण ज्ञान प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता, इत्यादि।

हिन्दी महोत्सव में प्रतिवर्ष स्नातक हुए विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी आयोजित होता है। सभी स्नातकों को पदक प्रदान किए जाते हैं। यह कार्यक्रम अब दूर-दूर तक ख्याति प्राप्त कर चुका है।

मोदी जी और शिवराज सिंह चौहान के कार्यक्रमों में हिन्दी यू.एस.ए. ने सामूहिक रूप से भाग लिया और एक रोमांचक अनुभव अपने नाम किया। भारत को सुदृढ़ बनाने में यह पहला कदम है।

इन सभी कार्यक्रमों की सफलता के लिए हिन्दी यू.एस.ए. के सभी स्वयंसेवक बधाई के पात्र हैं। जब तक हमारे दिलों में अपनी भाषा और संस्कृति के लिए त्याग और सेवा की भावना रहेगी हमारी संस्कृति का बाल भी बाँका नहीं हो सकता। आप सभी को हिन्दी यू.एस.ए. का सदस्य बनने के लिए खुला आमंत्रण है। हमारी सदस्यता शुल्क है हिन्दी बोलना, हिन्दी लिखना, हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना।

हिन्दी यू.एस.ए. की शिक्षिकाएँ

देवेंद्र सिंह

भारतीय सभ्यता के अनुसार नारी अपनी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय संस्कृति में माँ का स्थान पत्नी और बेटी से ऊपर होता है। यहाँ तक कि भगवान को भी भारत में माँ के रूप में देखा जाता है। जहाँ पाश्चात्य समाज में पत्नी का दर्जा माँ से ऊपर होता है, वहीं भारतीय संस्कृति में माँ से बढ़कर कोई दूसरा नहीं है। भारतीय बच्चों के चाल-चलन के अच्छे होने का प्रमुख श्रेय माँ को जाता है। आजकल के बदलते समय में हमारी संस्कृति में दुर्बलता आने का प्रमुख कारण है महिलाओं का हमारे संस्कारों और रीति-रिवाजों को सही रूप में न समझना और पाश्चात्य सभ्यता की निष्फल जीवन शैली को अपनाना। वैसे पुरुष भी इसके लिए विशेष रूप से उत्तरदायी हैं।

हिन्दी यू.एस.ए. की शिक्षिकाएँ (और शिक्षक) पूर्णतया भिन्न हैं और एक प्रभावशाली शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत युवा विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति की अमिट शिक्षा प्रदान कर रही हैं। महोत्सव का यह विशेषांक जो आप पढ़ रहे हैं वह हमारी शिक्षिकाओं को समर्पित है।

हिन्दी यू.एस.ए. की शिक्षिकाओं के योगदान के कारण ही हमारी पाठशालाओं में ४,००० से अधिक विद्यार्थी एक परिपक्व पाठ्यक्रम का लाभ उठाते हुए भारतीय संस्कृति की नींव को सुदृढ़ कर रहे हैं। माँ से अधिक संस्कृति और संस्कारों का स्थानांतरण युवा पीढ़ी में कोई नहीं कर सकता और हिन्दी यू.एस.ए. को उन ३०० से अधिक शिक्षिकाओं (माँ) पर गर्व है, जिन्होंने संस्था का आधार-स्तंभ बन हिन्दी यू.एस.ए. को अद्वितीय रूप से ख्याति दिलवाने में मुख्य भूमिका निभाई है।

परंतु प्रतिष्ठा और महत्व के साथ सतत् जिम्मेदारी का चोली दामन का साथ होता है। जैसे भारत की सड़कों पर लिखा होता है, “सावधानी हटी और दुर्घटना घटी”, वैसे ही जिम्मेदारी का निष्ठापूर्वक वहन न करने से हिन्दी यू.एस.ए. की प्रतिष्ठा निश्चित रूप से कम हो सकती है।

हिन्दी यू.एस.ए. के संयोजकों के योगदान के कारण ही शिक्षिकाएँ हिन्दी यू.एस.ए. को उसके लक्ष्य की ओर स्थिर गति से ले जा पा रही हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण हैं ५०० से अधिक हिन्दी स्नातकों को समाज में भेजना, जिनमें से अनेक ने शिक्षण कार्य में हाथ बटाना प्रारंभ करके हिन्दी यू.एस.ए. की पहले से ही सशक्त नींव को और सुदृढ़ करने के अभियान में पहल की है। हिन्दी यू. एस. ए. को एक उत्कृष्ट स्थान पर पहुँचाने के लिए हिन्दी यू.एस.ए. की समूची टीम बधाई की पात्र है।

कविता पाठ प्रतियोगिता

हिंदी यू.एस.ए. के पाठ्यक्रम में कविता को विशेष महत्व दिया गया है। कविता विद्यार्थियों को आसानी से याद हो जाती है। कविता के माध्यम से शब्द ज्ञान और स्मरण शक्ति को बढ़ाने के साथ-साथ हिंदी के उच्चारण को शुद्ध करने में भी सहायता मिलती है। कविता पाठ विद्यार्थियों को निर्भीक बनाता है तथा मंच पर जाकर हिंदी की कविता सुनाना विद्यार्थियों में हिंदी बोलने के प्रति आत्मविश्वास को बढ़ाता है और एक नई भाषा सीखने के डर को दूर करता है।

कविताओं के माध्यम से विद्यार्थियों में समाज के प्रति जागरूकता, देशभक्ति की भावना, परिवार से प्रेम, इतिहास का ज्ञान, धर्म तथा नैतिक मूल्यों की शिक्षा को सरलता से प्रतिरोपित किया जा सकता है। कविता के इतने सारे लाभों को देखते हुए हिंदी यू.एस.ए. ने आज से तेरह वर्ष पहले कविता पाठ प्रतियोगिता का प्रारंभ किया था। उस समय इसमें भाग लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या अत्यधिक सीमित थी और प्रतिस्पर्धा सरल थी। किंतु समय के साथ-साथ प्रथम स्थान पाने की स्पर्धा और कविताओं का स्तर वर्ष दर वर्ष बढ़ता ही जा रहा है। द्वितीय भाषा की प्रतियोगिता में आज हिंदी की कविता-पाठ प्रतियोगिता अमेरिका की सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगिताओं में से एक है। यह विशाल प्रतियोगिता तीन चरणों में आयोजित की जाती है। इसके प्रथम चरण में हिंदी यू.एस.ए. की १७ पाठशालाएँ अपनी-अपनी पाठशाला में इसका आयोजन करती हैं। ये पाठशालाएँ न्यू जर्सी के जर्सी सिटी, पिस्कैटवे, एडिसन, वुडब्रिज, ब्रिजवाटर, ईस्ट ब्रंस्विक, साऊथ ब्रंस्विक, नॉर्थ ब्रंस्विक, लॉरेंसविल, चैरी हिल, वैस्ट विंडसर/प्लेंस्बोरो, होमडेल, चैस्टरफील्ड, मॉन्टगोमरी, मोनरो, तथा कनैक्टिकट के विल्टन और स्टैमफर्ड नगरों में स्थित हैं। इस चरण में हिंदी यू.एस.ए. के लगभग २००० विद्यार्थी जिनकी उम्र ५ वर्ष से लेकर १६ वर्ष की होती है, उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता पाठ्यक्रम के ९ स्तरों के समान उम्र और हिंदी ज्ञान के आधार पर ९ स्तरों में की जाती है। प्रत्येक पाठशाला २०% सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों का चयन करती है।

कविता के द्वितीय चरण में अंतर्पाठशाला प्रतियोगिता का आयोजन बहुत धूम-धाम और प्रचार के साथ किया जाता है। इस प्रतियोगिता में लगभग ४५० विद्यार्थी भाग लेते हैं। कविता पाठ का समय १/२ मिनिट से लेकर ३ मिनिट तक होता है। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों की परख कविता के स्तर, प्रदर्शन, आत्मविश्वास, उच्चारण तथा स्मरण शक्ति पर आधारित होती है। प्रत्येक स्तर के लिए अन्य संस्थाओं, विश्वविद्यालयों के हिंदी शिक्षकों तथा वरिष्ठ साहित्यकारों, कवियों तथा हिंदी प्रेमियों को निर्णायकों के रूप में आमंत्रित किया जाता है। यह कविता पाठ प्रात: ९ बजे प्रारंभ होकर रात्रि के ११ बजे तक चलता है। इस चरण में प्रत्येक स्तर के १० से लेकर १५ सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों का चयन किया जाता है। इस वर्ष इस प्रतियोगिता का आयोजन ७ मार्च को मॉन्टगोमरी नगर में किया गया।

अपने समय के लोकप्रिय और प्रसिद्ध कवियों के साथ-साथ आधुनिक कवियों और तात्कालिक विषयों पर विद्यार्थियों की कविताएँ श्रोताओं को अत्यधिक भावुक कर देती हैं। इस चरण में लगभग १०० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों का चयन किया जाता है।

ये विद्यार्थी हिंदी महोत्सव के दूसरे दिन कविता पाठ प्रतियोगिता के तृतीय और अंतिम महासंग्राम में उतरते हैं और उसी दिन प्रत्येक स्तर से ५ सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को विजेता पदक प्रदान किए जाते हैं तथा अन्य सहभागियों को प्रोत्साहन स्वरूप पदक प्रदान किए जाते हैं तृतीय चरण मई १७ को हिंदी महोत्सव में आयोजित होगा।

युवा स्वयंसेवक सम्मान समारोह

हिन्दी यू.एस.ए. स्वयंसेवी संस्था पिछले १४ वर्षों से न्यू जर्सी में कार्यरत है। यह संस्था अपनी पाठशालाएँ चलाने के साथ-साथ उन पाठशालाओं या संस्थाओं की भी सहायता करती है जिन्हें हिन्दी पढ़ाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। अमेरिका के विभिन्न राज्यों में हिन्दी यू.एस.ए. की ३० सम्बद्ध पाठशालाएँ चल रही हैं। हिन्दी यू.एस.ए. के पाठ्यक्रम, पुस्तकों तथा परीक्षाओं की सहायता से ये पाठशालाएँ अपने विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने में सफल रही हैं।

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं से अब तक लगभग ५०० से अधिक छात्र-छात्राएँ स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। प्रारंभ के वर्षों में स्नातक होने वाले विद्यार्थियों की आयु १५-१६ वर्ष के पास रहती थी और जल्दी ही ये विश्वविद्यालय में अपनी शिक्षा में व्यस्त हो जाते थे। किंतु गत ५ वर्षों से यह आयु घटकर ११ वर्ष तक रह गई है। इस आयु के विद्यार्थियों में आगे हिन्दी सीखने का उत्साह तो रहता ही है परंतु साथ ही इनके पास समाज सेवा का भी समय रहता है।

गत ५ वर्षों में युवा स्वयंसेवकों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। ये स्वयंसेवक प्रत्येक सप्ताह २ घंटे का समय हिन्दी यू.एस.ए. को देते हैं। युवा कार्यकर्ता पाठशाला संचालकों की पुस्तक वितरण, अनुशासन व्यवस्था, उपस्थिति रजिस्टर में स्वयंसेवकों के हस्ताक्षर लेने, कार से सामान उतारने और चढ़ाने इत्यादि में सहायता करते हैं तथा शिक्षकों के साथ सहायक के रूप में रहकर ये स्वयं भी कुछ नई बातें सीखते हैं और खेल खिलाकर, कहानी सुनाकर और बातें करके विद्यार्थियों की हिन्दी में रुचि बढ़ाने में सहायता करते हैं। कहीं-कहीं ये गृहकार्य के जाँच की जिम्मेदारी भी उठाते हैं।

इस वर्ष हिन्दी यू.एस.ए. की १० पाठशालाओं में ८० युवा स्वयंसेवक जिनकी आयु ११ वर्ष से १७ वर्ष है, पूरे उत्साह से सेवारत हैं। इन स्वयंसेवकों के सम्मान में संस्था ने २८ मार्च को पिस्कैटवे नगर में सम्मान समारोह तथा दोपहर के भोजन का आयोजन किया। इस समारोह में ३९ स्वयंसेवकों, कुछ पाठशाला संचालकों एवं अभिभावकों ने भाग लिया। युवा स्वयंसेवकों ने अपने विचार संक्षिप्त में प्रस्तुत किए एवं कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम का आयोजन और संचालन एडिसन हिन्दी पाठशाला के संचालक श्री माणक काबरा ने किया। हिन्दी यू.एस.ए. के संस्थापक श्री देवेंद्र सिंह ने सभा को सम्बोधित करते हुए बताया कि "आज से १४ वर्ष पहले उन्होंने जो स्वप्न देखा था वह अब सत्य होता प्रतीत हो रहा है"।

आज़ादी

शमा अरोरा जी भारत के हरियाणा प्रान्त की रहने वाली हैं। शमा जी बैंक की रिटायर्ड कर्मचारी हैं। इन्होंने जिला बाल अधिकारी क्षेत्र में १६ साल कार्य किया है। शमा जी को कला और लेख लिखने में बहुत रुचि है। कर्मभूमि में पहले भी इनकी कविता प्रकाशित हो चुकी है।

सुनाती थी कहानी मुझे मेरी दादी
बड़ी मुश्किल से पायी है हमने आज़ादी
लाखों वीरों ने दे दी कुर्बानी
भगत सिंह ने भी दी थी अपनी जवानी

जब माँ बहनों की इज्जत पे बन आई
कुओं में छलांगे उन्होंने लगाई
गुलामी की जिंदगी बड़ी थी बेमानी
आज भी सोच आँखों में आता है पानी
बहुत सारी दास्ताँ सुनाती थी दादी
बड़ी मुश्किल से पायी है हमने आज़ादी

बच्चों अब रखना है इसका ख्याल
देश के लिये बन जाओ एक मिसाल
खूब पढ़ो लिखो नाम कमाओ
सचिन सान्या मिर्ज़ा बन के दिखाओ
तुम ही तो हो बच्चों देश की शान
अगर आए मुश्किल तो दे देना जान
आओ नाचें झूमे खुशी के गीत गाएँ
हिन्दी यू.एस.ए. में तिरंगा फहराएँ

शत-शत करते हैं हम इसको नमस्कार
अब आई है देखो मोदी सरकार
अब ये कमल न मुरझाने पाए
पूरे देश में अपनी खुशबू फैलाए
विदेशों में भी ये महक पहुँचाएँ
बस एक बात का बच्चों रखना ध्यान
पूरी दुनिया में गूंजे बस एक ही नाम
मेरा है भारत देश महान, मेरा है भारत देश महान

सत्र आरंभ से पहले

परीक्षा

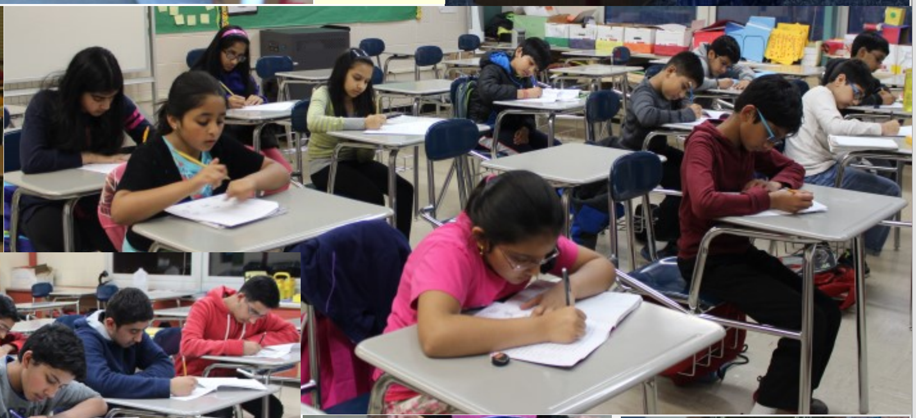

दिवाली प्रॉजेक्ट: संजीता और सिध्दार्थ कैलाशनाथन

भारत के प्रधान कौंसल के साथ

पुस्तक मेला

कर्मभूमि मुख्य पृष्ठ प्रतियोगिता के उपविजेता

रुषभ मेहता

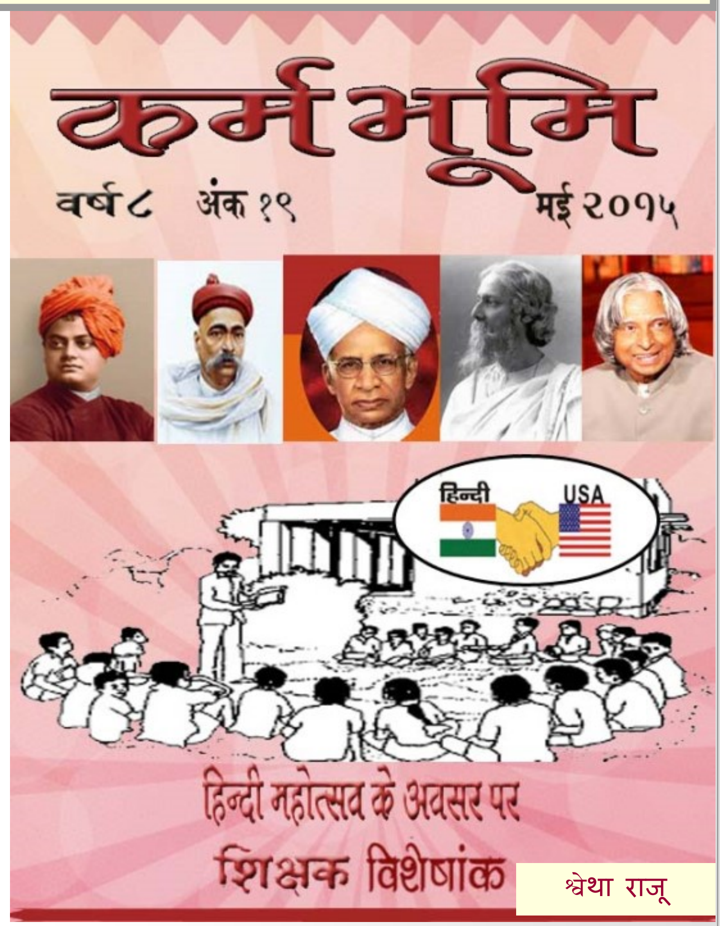

श्वेथा राजू

सनिका गोडबोले

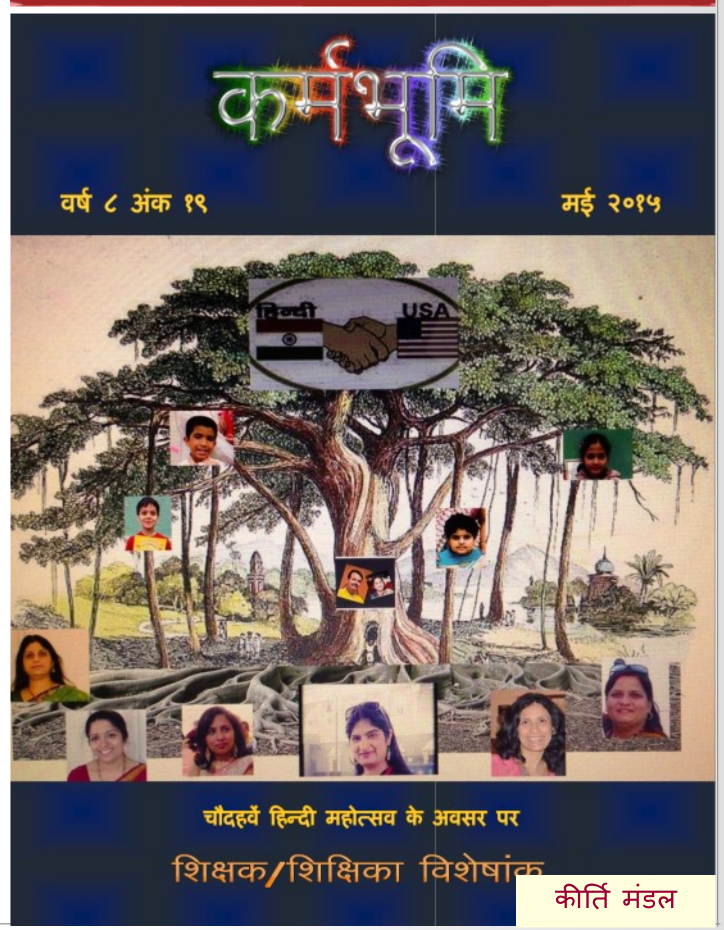

कीर्ति मंडल

अभिनंदन

उच्चस्तर-१

मध्यमा-३ स्तर

वर्ष २०१४ के विशेष स्वयंसेवक

मध्यमा-२ स्तर

मध्यमा-१ स्तर

कनिष्ठा-१ स्तर

निदेशक मंडल

कनिष्ठा-२ स्तर

वयस्क स्तर

प्रथमा-१ स्तर

प्रथमा-२ स्तर

एडिसन मध्यमा-२ पाठशाला प्रोजैक्ट

यह कोलाज एडीसन पाठशाला के मध्यमा-2 (बी) की कक्षा ने बनाया है। बच्चों ने दिए गए शब्दों से वाक्य बनाए है। बच्चों के नाम :- अंनत, अर्नव, ब्रिना, गौरवी, गोपीका, हर्ष, प्रियंका, संजना, शर्विल, शेफाली, सोहम, वेनोरा, विष्णु !!!

अध्यापिकाएँ – मोना खेतान, पूजा जैन

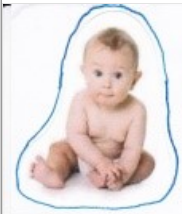

बच्चा

मच्छर

मच्छर के काटने से मलेरीया हो सकता हैं।

ज्यादा

मुझे ज्यादा सब्जी नही चाहिये।

कच्चा

गोपीका चुडासमा

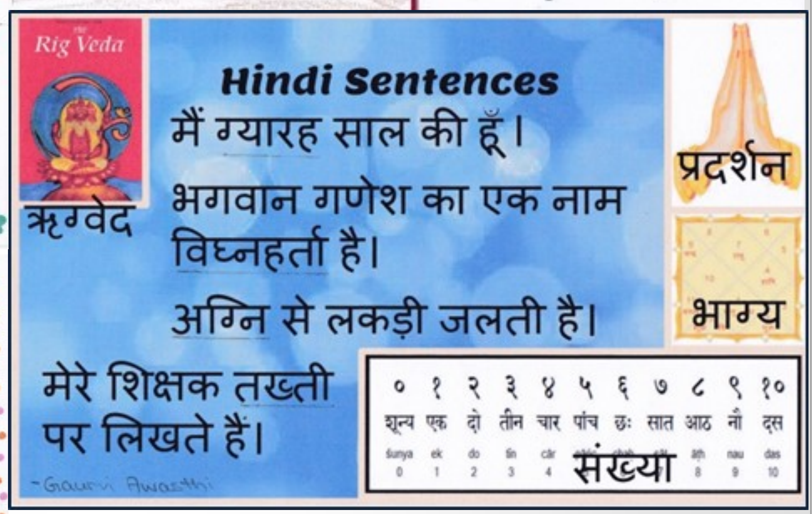

संजना चिटणीस

सुरज कि कहानी

सुरज एक जिद्दी लड़का था। सुबह उठकर तैयार होकर वह पाठशाला गया। पाठशाला में उसके अध्यापकने कक्षा को भारत के ध्वज का महत्व समझा दिया। उसके बाद सुरज अपने मित्रों के साथ पार्क में खेलने गया।

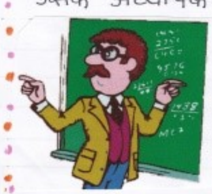

घर आकर सुरजने ध्यान लगाकर गृहपाठ किया। बादमे उसने दुरदर्शन पर प्रसिद्ध ताजमहल का प्रसारण देखा।

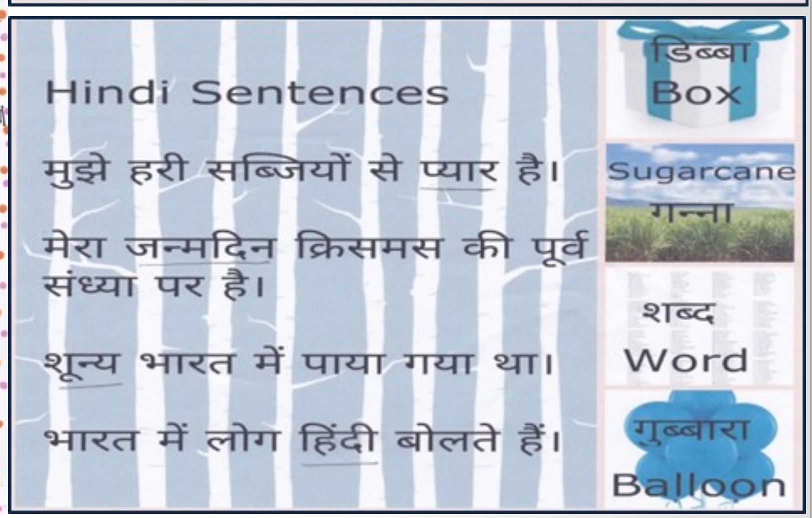

प्यार (Love)
मैं अपने पापा और मम्मी से बहुत प्यार करता हूँ
चप्पल (slipper)
मैं मेरा चप्पल पहनता हूँ।
प्यास (Thirst)
प्याला (Cup)
मैं प्यासा था, तो मैंने पानी
के साथ मेरा प्याला भरा।

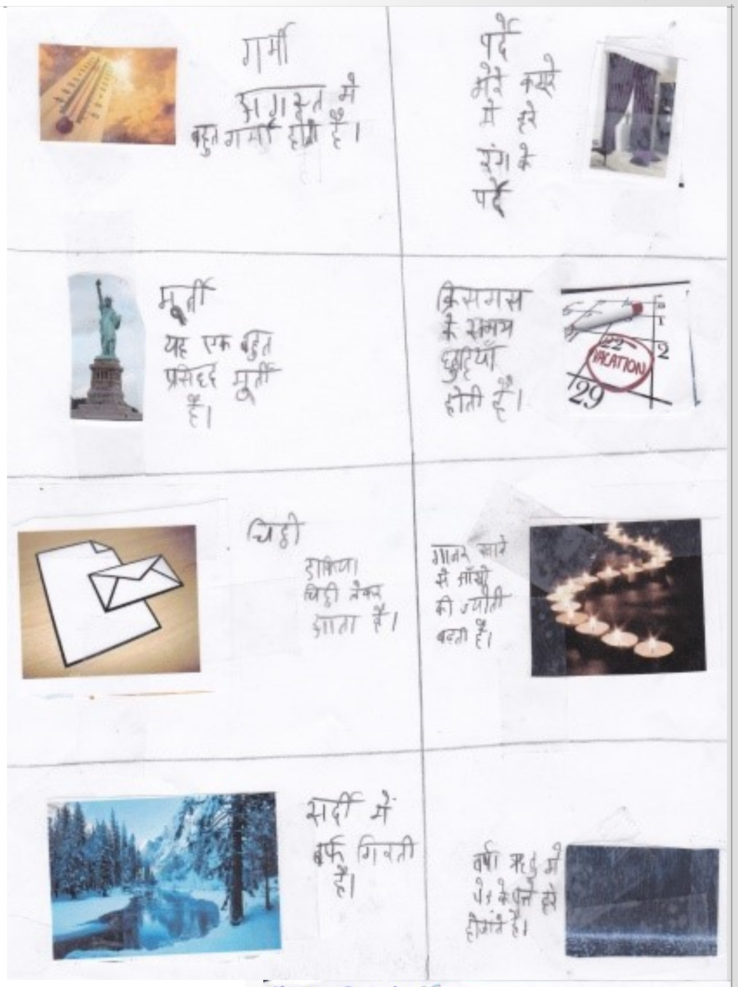
गर्मी
अगस्त में
बहुत गर्मी होती है।
पर्दे
मेरे कमरे
में हरे
रंग के
पर्दे
मूर्ती
यह एक बहुत
प्रसिद्ध मूर्ती
है।
क्रिसमस
के समय
छुट्टियाँ
होती हैं।
VACATION
चिट्ठी
डाकिया
चिट्ठी लेकर
आता है।
सदी में
बर्फ गिरती
है।

सूर्य हमें रोशनी देता है।
पानी जमने पर बर्फ बन जाता है।
बादल बहुत गर्जना करते हैं।
मुझे सर्दी अच्छी नहीं लगती है।
शार्क के दांत तेज होते हैं।
मूर्ती अलग-अलग पदार्थों से बनती है।

जन्माष्टमी भगवान कृष्ण का जन्म दिन होता है।
शुभ जन्माष्टमी
हम बिस्तर पर बैठते हैं।
हम पुस्तक से पढ़ते हैं।
जब हम किसी से मिलते हैं हम नमस्ते बोलते हैं।
नमस्ते
मुझे आम की लस्सी अति पसंद है।
हम कभी कभी रास्ता भूल जाते हैं।

Venora Furtado Venora
I2
उल्टा Inverted
व्यायाम exercise
व्यंजन-consonant food dish
द्वितीय second
दुल्हन के गहने की एक बहुत पहने हुए है।
दुल्हा दुल्हन के लिए प्रस्ताव ले आया।
फव्वारा पानी से भरा है।
मैं जल्दी नहीं करूंगी तो बस नीकल जायेगी।

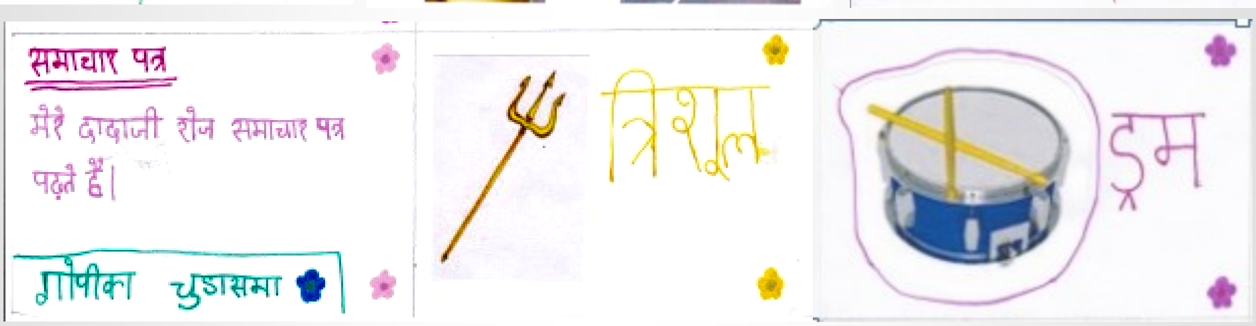
समाचार पत्र
मेरे दादाजी रोज समाचार पत्र पढ़ते हैं।
गोपीका चुडासमा
त्रिशूल
ड्रम

परियोजनाएँ

पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला – प्रथमा–१

अध्यापिका – कीर्ति मंडल

यह कहा जाता है कि खेल-खेल में जो भी सीखा जाए वह दिमाग में पत्थर की लकीर बन जाती है। इस वर्ष हमने भी कुछ ऐसा ही प्रयास किया। हमने बच्चों से स्वर के अक्षर को काट कर माला में पिरोने के लिए कहा और जब इन बच्चों ने इसे बनाया तो हम सब को ही हैरान कर दिया जिसे आप इस चित्र में देख ही सकते हैं।

हम सब चाहते हैं कि हमारे बच्चे अपने परिवार के सदस्यों को जाने, उन्हें पहचानें। उन रिश्तों को पहचानें जिन्हें हम अपना कहते हैं। ऐसी ही कोशिश हमने भी की इस कक्षा में की। हमने बच्चों से कहा कि वे अपने माता-पिता की सहायता लेकर अपने परिवार की एक-एक फोटो लेकर आएँ, और उस के पीछे लिखें कि वे आपके कौन हैं? इन तस्वीरों को लेकर हमने एक पेड़ बनाया जिसकी एक तरफ माता जी के परिवार के रिश्तेदार थे जिन्हें हमने बच्चों को समझाया कि उन सब से उनका क्या रिश्ता है, उन्हें किस नाम से पुकारते हैं? इसी तरह दूसरी तरफ हम ने पिता जी के परिवार के सदस्यों की तस्वीरें लगाईं। इससे बच्चों को रिश्तों के नाम भी याद हुए और अंतर भी पता चला।

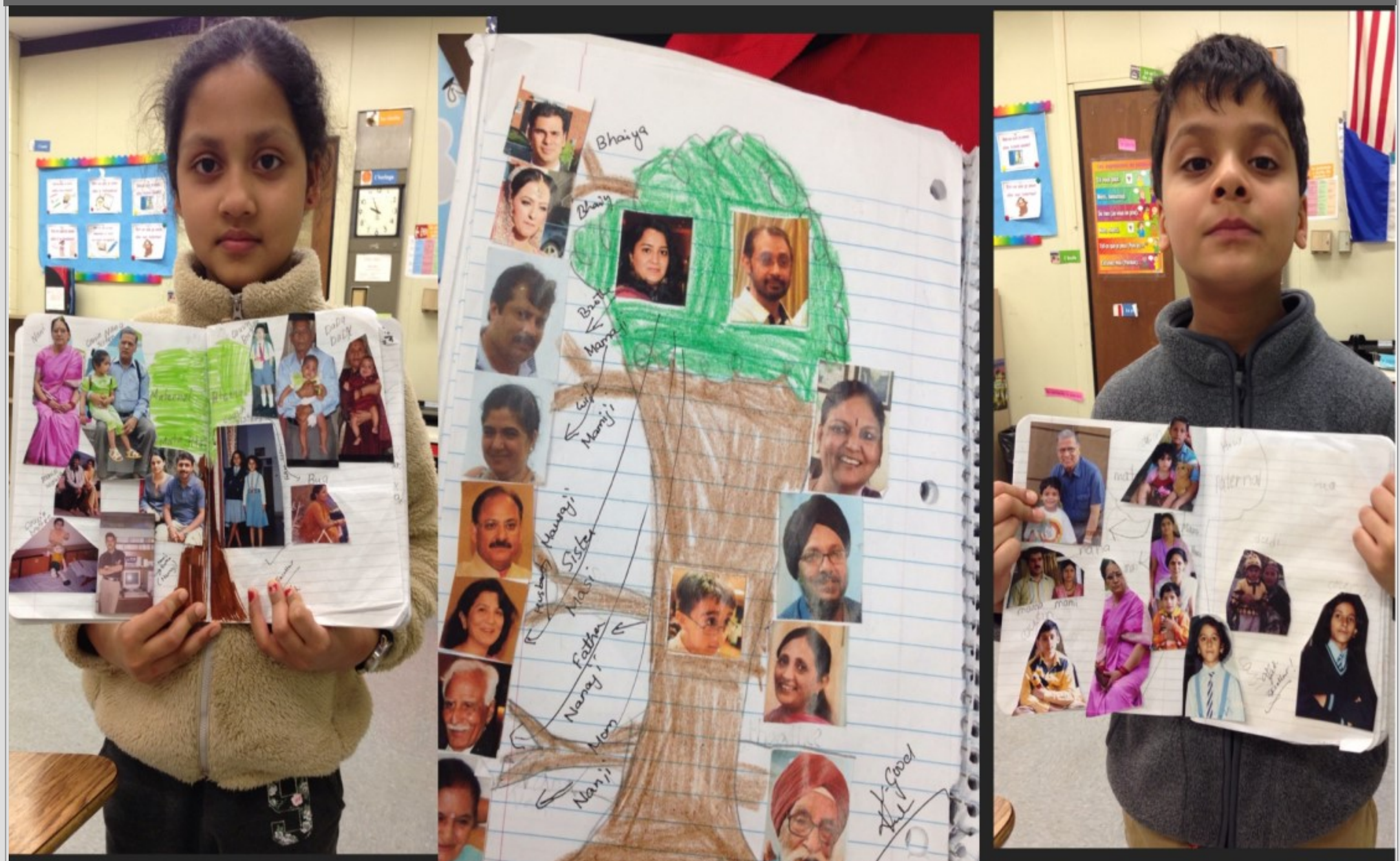

स्वर पहचानो परियोजना हमने अपनी कक्षा में स्वर सीखने के बाद की। हमने सब बच्चों से अनुरोध किया कि वे एक चार्ट पेपर को बीच में भाग कर, एक तरफ स्वर काट कर लगाएँ और दूसरी तरफ हर स्वर से जुड़ी एक तस्वीर, जिसे वे घर से ही चिपका कर लाएंगे। फिर कक्षा में हमने सभी बच्चों के चित्र बदल दिये और उनसे इसे सही अक्षर से तस्वीर मिलाने को कहा। बच्चों को इसमें बहुत आनंद आया और सीखने को भी मिला।

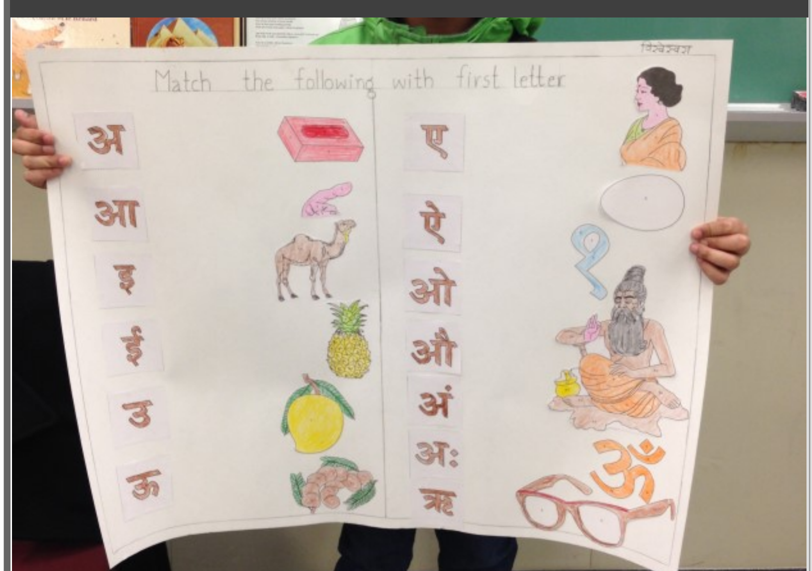

मैं, कपिला माने, ईस्ट ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला मध्यमा ३ में पढ़ती हूँ। कुछ दिन पहले छुट्टियों में मैं भारत यात्रा कर आयी। उधर पुणे शहर में चित्रकारिता का अध्ययन करते समय तरह- तरह के चित्र बनाये। मेरे मामा ने वह अखबार में छपवाए तो उसी से मेरा हौसला बढ़ा। मैंने मेरी वही क्षमता यहाँ भी बनाये रखी। इसी दौरान कर्मभूमि के पृष्ठ प्रतियोगिता के बारे में सुना जिसका विषय "शिक्षक" दिया गया था। इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने दिखाया है कि सरस्वती ज्ञान की देवी है जो हिन्दी अक्षरों द्वारा छोटे बच्चों को फूलों का ज्ञान दे रही है और बच्चे अपनी टोकरी में यह ज्ञान हंसी खुशी भर रहे हैं। यह मेरी कल्पना मैंने चित्र द्वारा साकारित की है। मेरी माँ का साथ पाकर मैंने घंटों बैठकर illustrator मैं कुछ इस तरह बनाने का प्रयास किया, जो काफी सफल रहा। आशा है आप सभी को मेरा यह प्रेरणादायी प्रकल्प अच्छा लगेगा।

मेरी हिन्दी पाठशाला

मेरा नाम श्रेया है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-३ में पढ़ती हूँ। मुझे चित्रकारी करना और नृत्य करना अच्छा लगता है।

एडिसन पाठशाला उच्च स्तर-१

नीचे लिखे हुए लेख एडिसन हिन्दी पाठशाला के उच्च स्तर-१ के विद्यार्थियों द्वारा लिखे हैं। उच्च स्तर में आते-आते बच्चों का शब्द ज्ञान बहुत मजबूत हो जाता है। कनिष्ठ स्तर से लेकर मध्यमा स्तर तक जो भी शब्द बच्चे सीखते हैं, उच्च स्तर में उन्हीं शब्दों का प्रयोग बच्चे वाक्यों में करने लगते हैं। बच्चों को हिन्दी लेख लिखने में रुचि बढ़ाने के लिए उन्हें दिनचर्या से जुड़े, दैनिक जीवन के बारे में विचार, सामयिक घटनाओं आदि पर लेख, गृहकार्य के रूप में दिये जाते हैं। उन्हीं लेखों में से कुछ लेख नीचे प्रस्तुत हैं।

पाठशाला में हमारा पहला दिन

आकाश श्रीवास्तव

मेरा पाठशाला का पहला दिन दस साल पहले था। मैं अमेरिका एक महीने पहले आया था। मेरी पाठशाला का नाम मेनलो-पार्क था और मैं KG में जा रहा था। मैं पाठशाला जाने के लिए बहुत खुश था, लेकिन मुझे डर भी लग रहा था। जब मैंने कक्षा में प्रवेश किया तो देखा कि मेरी कक्षा में बीस बच्चे थे। मुझे पहले से ही पता था कि मेरी शिक्षिका का नाम मिस Kohut था। वे अपनी कुर्सी पर बैठी थीं। मैंने उन्हें नमस्ते किया और अपनी कुर्सी पर बैठ गया। उस दिन मैंने बीस मित्र बनाए थे। कुछ मित्र तो अभी भी मेरी कक्षा में हैं। मुझे अपना पहला दिन आज तक याद है, क्योंकि वह दिन बहुत अच्छा था।

सुहानी गुप्ता

आज पाठशाला का पहला दिन है। मुझे पाठशाला नहीं जाना क्योंकि मुझे बहुत डर लग रहा है। इस वर्ष मैं छठी कक्षा में जा रही हूँ। पाँचवीं और छठी कक्षा में बहुत अंतर होता है। जैसे कि हर विषय के लिए कक्षा बदलना होता है। जब मैं बस में चढ़ी तो मुझे अपनी कुछ सहेलियाँ दिखाई दीं। जब हम पाठशाला पहुँचे तो हमें बाहर खड़ा किया गया था। पहली कक्षा के बाद मैं अपनी कुर्सी पर ही बैठी रही। कुछ देर बाद मुझे याद आया कि मुझे दूसरी कक्षा में जाना है। इस प्रकार एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाते-जाते दिन खत्म हो गया। घर जाकर मैंने सबसे कहा “मेरे सारे अध्यापक और अध्यापिका अच्छे हैं”।

आदिल महमूद

आज मेरी पाठशाला का पहला दिन था। मैं सुबह उठकर जल्दी तैयार हो गया। मैंने घड़ी में देखा लेकिन उसमें समय गलत था। घड़ी में सात बज रहे थे लेकिन बाहर मुझे बहुत धूप दिखी। “मम्मी!” मैं चिल्लाया। लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। मैंने अपने माता पिता के कमरे में जाकर देखा तो वे सो रहे थे। मैंने मन में सोचा कि पाठशाला के पहले दिन ही मैं देर से पहुंचूँगा। “डैडी” मैं बोला, “उठ जाओ, आज मेरा पाठशाला का पहला दिन है”। मेरे पिताजी उठकर बोले, “सो जाओ आदिल, तुम्हारी पाठशाला तो कल खुलेगी। आज तो रविवार है”।

मेरा प्रिय त्योहार

रोहन सावला

२५ सितम्बर २०१४ को हमारे परिवार ने नवरात्री का त्योहार मनाया। इस त्योहार में माँ दुर्गा की पूजा होती है। मैं अपने परिवार के साथ डांडिया रास और गरबा खेलने गया। हमारे मित्र भी हमारे साथ गरबा खेलने गए थे। जब डांडिया रास और गरबा होता है, सब लड़के सलवार कमीज पहनते हैं, और सब लड़कियाँ चनिया-चोली पहनती हैं। हम लोग बहुत देर तक नाचे। जब हम बाहर आए तो सुबह का एक बज गया था। मुझे नवरात्री का त्योहार मनाने में बहुत मजा आया।

हिन्दी पाठशाला

प्रियंका सिन्हा

मैं हिन्दी पाठशाला में हिन्दी सीखने जाती हूँ। मुझे हिन्दी पाठशाला में बहुत मजा आता है क्योंकि मुझे मेरे मित्रों और अध्यापक से मिलने का अवसर मिलता है। हम हर सप्ताह नए-नए विषयों के बारे में पढ़ते हैं। हर कक्षा में कुछ नया सीखने को मिलता है। हिन्दी पाठशाला के द्वारा हमें बहुत सारी मनोरंजक क्रियाओं में भी भाग लेने का अवसर मिलता हैं, जैसे कविता पाठ और हिन्दी महोत्सव। हिन्दी कविता में बच्चे अनेक प्रकार की कविताएं बोलते हैं और उन्हें जीतने का अवसर भी मिलता है। हिन्दी महोत्सव में तरह-तरह के खेल, गीत, नृत्य और प्रतियोगिताएं होती हैं। इन सभी कार्यक्रमों को देखने में और भाग लेने में मुझे बहुत मजा आता है। इसीलिए मुझे हिन्दी पाठशाला जाना अच्छा लगता है।

नैनो रोबोट्स

राघव सक्सेना

आज विज्ञान ने बहुत प्रगति कर ली है। अब विज्ञान ने ऐसी खोज की है, कि ये चिकित्सा, वास्तुकला, परिवहन और शोभाचार (Fashion) में मदद करते हैं।

चिकित्सा - आप सोच रहे होंगे कि यह चिकित्सा को कैसे मदद करती है? मैं बताता हूँ। नैनो रोबोट का नाप एक मीटर के एक अरबवें (One Billionth) हिस्से के बराबर होता है। यह इतनी छोटी है इसलिए इसे एक दवाई में डाल देते हैं। फिर जब मरीज दवाई खाता है तो नैनो रोबोट खून में तैरने लगता है। रोबोट में लगे कैमरे से पता चलता है कि वह शरीर के किस हिस्से में है। जब वह शरीर के पीड़ित हिस्से में पहुँचता है तो वहाँ का इलाज करके शरीर में से निकल जाता है।

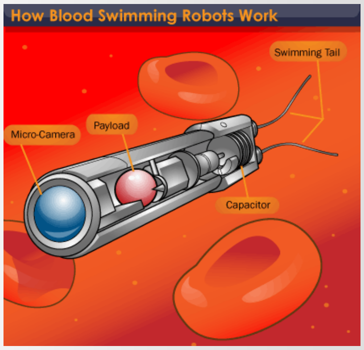

वास्तुकला - नैनो रोबोट्स बहुत मजबूत होते हैं। सन २००२ में एक वैज्ञानिक ने एक ऐसे ही पदार्थ की खोज की जिसे उसने “ग्राफीन” नाम दिया। वह पदार्थ हीरे से भी अधिक मजबूत था। आज ग्राफीन सभी का पसंदीदा नैनो मटीरियल (पदार्थ) बन चुका है। ग्राफीन, स्टील की तुलना में २०० गुना अधिक मजबूत है। इसलिए अब यह पदार्थ ऊँची-ऊँची इमारतें बनाने के काम का भी आता है।

बर्फ का दिन

आदिल महमूद

घड़ी में ग्यारह बज गए लेकिन मुझे कुछ भी बर्फ नहीं दिख रही थी। मैंने समाचार में सुना था कि आज रात को बहुत बर्फ गिरेगी, तो अब तक बर्फ क्यों नहीं गिरी? मुझे समाचार पर भरोसा था इसलिए मैं अपने पलंग पर जाकर सो गया और सुबह तक इंतजार किया।

सुबह उठकर मैंने पहले खिड़की से बाहर देखा, लेकिन मुझे सब जगह सफेद ही सफेद दिख रहा था। क्या मेरी आँखें खराब हो गईं? नहीं, कल रात का समाचार सही था। घास पर, गाड़ी पर, पेड़ों पर और सड़क पर, सारी जगह सफेद ही सफेद था। मैं बहुत खुश था। “मैं सारा दिन बर्फ में खेलूँगा”, मैंने सोचा।

तैयार होकर मैंने कोट पहना और जल्दी बाहर दौड़ा। मैंने अपने भाई को बुलाया और हमने बर्फ में खेलना शुरु किया। हम बर्फ में कूदे, बर्फ के आदमी बनाए और एक दूसरे पर बर्फ की गेंदें बनाकर फेंकीं। हम तब तक खेलते रहे जब तक थक नहीं गए। मुझे यह बर्फ का दिन बहुत अच्छा लगा।

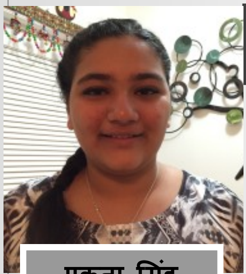

एकता सिंह

जीवन

मुझे जीवन बहुत कठिन लगता है। जीवन एक अलग किस्म का शब्द है। जीवन के तीन अलग मोड़ हैं। जन्म, मृत्यु और उन दोनों के बीच में धमाल। जीवन इन तीन मोड़ों से बड़ा है। यह जीवन एक गाड़ी है। हम इस गाड़ी में पेट्रोल भरते हैं। किंतु किस प्रकार के पेट्रोल से हम हमारी गाड़ी भरते हैं उससे फर्क पड़ता है। पेट्रोल गाड़ी को बहुत दूर ले जा सकता है या कम। हम हमारी गाड़ी में किस प्रकार का पेट्रोल भरते हैं ये हमारे ऊपर है।

मुझे जीवन से कोई भी शिकायत नहीं है। मुझे जीवन बहुत पसंद है। पर मुझे एक बात समझ में नहीं आती है। समय जीवन का एक मुख्य हिस्सा है। मुझे लगता है कि समय एक बहुत ही अजीब वस्तु है। जीवन में समय ही नहीं मिलता है। मुझे जीवन बहुत ही कम समय देता है। जीवन एक खूबसूरत वस्तु भी है। जीवन हमें बहुत अवसर देता है, पर हम पहचान नहीं पाते हैं। चूंकि मैं अभी बच्ची हूँ मुझे यह समझ नहीं आता है कि जीवन क्या है। लेकिन इतना अवश्य मालूम है कि जीवन एक कठिन चीज है।

किस्मत का खेल

सुहानी गुप्ता

ऐ किस्मत, कहाँ ले जाएगी मेरी ज़िंदगी को?
मालकिन या मालिन?
हिमालय की चोटी या
क़ुतुब मीनार की जड़
कहाँ ले जाएगी मेरी ज़िंदगी की पतंग को?
आसमान की ऊंचाइयों में
या ज़मीन की धूल में?
ऐ किस्मत, कहाँ ले जाएगी मेरी ज़िंदगी को?
कह जाओ मेरे कान में चुपके से

भारत की संस्कृति का दूसरे देशों पर प्रभाव

रोशन सेतलुर

कई वर्षों से भारत की संस्कृति दूसरे देशों की संस्कृति को प्रभावित करती रही है। इसके कई कारण हैं।

कई वर्ष पहले नालंदा और तक्षिला विश्व विद्यालयों में दूर-दूर से लोग शिक्षा प्राप्त करने आते थे। उनमें चीनी यात्री ह्यूंसांग भी था जिसने उस समय की भारत की स्थित का वर्णन किया है।

दूसरा कारण यह भी था कि जो भी विदेशी भारत पर हमला करने आये वे भारत की संस्कृति से प्रभावित होकर यहाँ से बहुत सी अच्छी बातें सीख कर अपने देश वापस गए। उदाहरण के तौर पर यूनानी लोग पोरस की वीरता से बहुत प्रभावित होकर गये और कई नई चीजें भारत की सीख कर गए।

तीसरा कारण यह था कि जब अकबर की अधीनता स्वीकार न करके महाराणा प्रताप के मेवाड़ राज्य से वीर सिपाही अपने परिवारों के साथ यह प्रण करके कि जब तक वे लोग अपना पूरा राज्य वापिस नहीं ले लेंगे, वे कभी बिस्तर पर नहीं सोएंगे, न सोने चाँदी के बर्तनों में खाना खाएँगे, और न शहर में प्रवेश करेंगे, भारत की सीमा को पार करके दुनिया के अलग -अलग देश चले गए। उस समय से कई अब तक दुनिया के अलग-अलग कोनों में बसर कर रहे हैं और भारतीय संस्कृति को फैला रहे हैं।

इस तरह भारत की संस्कृति का प्रभाव दुनिया के विभिन्न देशों पर पड़ा। तभी दुनिया की सब भाषाओं के कई शब्दों में समानता देखने को मिलती है जैसे mother, mater, ma, mom, pita, papa, pater आदि। इस तरह भारत की संस्कृति प्रभावित करती रही है। भारत वासी सदा दूसरों को मुफ़्त में शिक्षा देना अपना धर्म समझते थे।

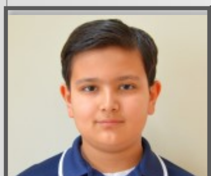

हिंदी की परीक्षा

रोहन गुप्ता – एडिसन हिन्दी पाठशाला मध्यमा-१

आज १६ जनवरी है और आज हिंदी की परीक्षा है। सभी छात्र अंतिम मिनट में अपनी-अपनी किताब पढ़ रहे हैं और घबरा रहे हैं। सभी तनाव में हैं क्योंकि आज हम आधे साल की परीक्षा देने जा रहे हैं। जितना हम अपने को शांत कर सकते थे किया और फिर हमने अपनी पुस्तकों को बंद कर दिया। हमारे शिक्षकों ने हमें सब नियम समझा कर हमें परीक्षा दी। हमें लगा जैसे NJASK की परीक्षा है न कि हिंदी की परीक्षा। परीक्षा के पेपर देखकर मैंने अपना नाम और आज की तारीख हिंदी में लिखी। अपने डर को दूर करने के बाद मैंने अपने आप को सीधा किया और पेंसिल तेज करने के बाद अपनी परीक्षा शुरु की। चार पेज लंबी परीक्षा अपनी सबसे अच्छी क्षमता से समाप्त कर मैंने बार-बार चेक की। मुझे हमेशा दोहरी जांच करने के लिए चुपचाप मेरी माँ को धन्यवाद देते हुए अपने डर और विश्वास की दोनों भावनाओं के साथ मैंने अपनी परीक्षा अपने शिक्षक को दे दी। खुशी और डर दोनों के साथ मैंने अपने शिक्षक को मेरा पेपर, हमारी किताब से चैक करते हुए देखा। जब तक मुझे अपनी परीक्षा वापस नहीं मिली तब तक ऐसा लग रहा था जैसे समय और सांस दोनों रुक गए हों। मेरी सांस में सांस तब आई जब मुझे पता चला कि परीक्षा में मुझे ९८ अंक मिले हैं। मेरे शिक्षक ने मुझे शाबाशी दी और कहा कि मेरा पेपर वे अगले सप्ताह देंगे। अब मैं खुशी से फूला नहीं समाया कि मुझे अच्छा ग्रेड मिल गया और अंत में आराम से बैठ पाया।

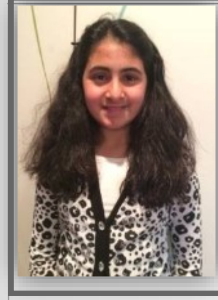

त्रिमूर्ति

मेरा नाम सिमरन हर्जनी है। मैं मध्याम-३ कक्षा की छात्रा हूँ, और मोनरो में रहती हूँ। मुझे किताबें पढ़ना बहुत पसंद है। मुझे नृत्य करने में रुचि है। हिन्दी सीखने से मुझे बहुत ज्ञान मिलता है।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश हिन्दू संस्कृति में त्रिमूर्ति के रूप में जाने जाते हैं। सभी देवता बहुत महत्वपूर्ण हैं, जो विभिन्न कर्तव्यों का पालन करते हैं। ब्रह्मा इस ब्रह्मांड के निर्माता हैं, और विष्णु हमारा ख्याल रखते हैं और दुनिया के परिरक्षक हैं। महेश दिव्य बदलाव के लिए बुराई का नाश करते हैं।

ब्रह्मा की पत्नी का नाम सरस्वती है। देवी सरस्वती हमें अपार ज्ञान और शिक्षा देती हैं। ब्रह्मा कमल के फूल में पैदा हुए थे और ब्रह्मांड के निर्माता हैं। कुछ लोगों का कहना है कि वे पानी में पैदा हुए थे।

विष्णु पृथ्वी के रक्षक हैं। बहुत से लोगों का मानना है कि विष्णु पाँच प्राथमिक देवताओं में से एक हैं। वे ब्रह्मांड की रक्षा, सफलता और समृद्धि के देव हैं। विष्णु देवता का दिव्य रंग पानी के रंग के जैसा है और उन्हें चार सशस्त्र वाले देवता कहते हैं। उनकी पत्नी का नाम लक्ष्मी है। वे सफलता और समृद्धि की देवी हैं।

महेश हिंदू पौराणिक कथाओं में सर्वोच्च देवता हैं। वे बुराई का नाश करते हैं। वे कैलाश पर्वत पर रहते हैं। उन्हें भगवान शिव के नाम से जाना जाता है। वह प्रजापति, रक्षक, विनाशक और पनाह देनेवाले हैं। उनकी पत्नी पार्वती हैं। उनके दो बच्चे गणेश और कार्तिकेय हैं।

भाषा

मेरा नाम अनुषा गुप्ता है। मैं चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं बास्किंग रिज़ में रहती हूँ और पिछले चार साल से एडिसन हिन्दी पाठशाला में हिन्दी सीख रही हूँ। अभी मैं मध्यमा-३ में पढ़ रही हूँ। मुझे किताब पढ़ना और तैरना पसंद है।

भाषा सीखना या सिखाना
है एक महारथी का काम
छात्र हो या शिक्षक
है यह लगन का काम
हर शुक्रवार की शाम
हम मिलते हैं सभी
सर्दी-गर्मी या पतझड़ बसंत
मिलकर सीखते हैं हिन्दी सभी
कक्षा कार्य और गृहकार्य
दोनों के हैं महत्व
कक्षा में शिक्षक - शिक्षिका का ध्यान
बच्चे बने विद्वान
घर में माता-पिता का सहयोग
बन जाए उन्नति का योग
लो हो गया हिन्दी सीखना आसान
बस यह है एक लगन का काम

पार्थ वर्ग

अगर मेरे पंख होते

पार्थ एडिसन हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-२ के छात्र हैं। पार्थ को वीडियो गेम खेलना, खाना बनाना और तैरने का शौक है। उनके कई सपनों में से एक है कि वे भी पक्षियों की तरह उड़ सकें। अपनी इसी भावना को उन्होंने इस कविता के द्वारा प्रस्तुत किया है।

बचपन से पक्षियों को देख
मैं समझ न पाता था।
उड़ते ये गगन में कैसे
पता ये न चल पाता था।।

अक्सर मैं ये सोचा करता
क्या हम भी उड़ सकते हैं?
इन सुन्दर पक्षियों की तरह
जगह-जगह घूम सकते हैं?

यही सोच-सोच एक दिन
आँख मेरी लग गई।
स्वप्न में ही सही लेकिन
इच्छा काम कर गई।।

अब मेरे पास भी
पंखों की सौगात थी।
नहीं रोक-टोक किसी का
आजादी की बात थी॥

न मोटर-कार की जरूरत
न पैदल चल के जाना।
न मम्मी को चलने को कहना
न पापा को पटाना॥

किसी दोस्त की पार्टी हो
या कहीं पिज़्ज़ा खाना।
कोई नया गेम आए
या मूवी थिएटर जाना॥

कितनी स्वतंत्रता थी अब
और कितनी आजादी।
न पैट्रोल का खर्च
और न समय की बर्बादी॥

उठो-उठो बस तभी
मम्मी की आवाज आई।
अरे ये तो सिर्फ सपना था
न थी कोई सच्चाई॥

पर मैंने भी कसम ये खाई
कि पंख तो मैं पाऊँगा।
शारीरिक न उठ पाऊँ
पर अपने हौसलों को उठाऊँगा॥

न कभी हार मानूँगा
न कभी पीछे मुड़ूँगा।
आगे-आगे बढ़ूँगा और
देश-दुनिया का नाम रोशन करूँगा॥

जीवन: मनुष्य का सबसे बड़ा गुरु

सुमेधा दुबे

मेरा नाम सुमेधा दुबे है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. की एडिसन शाखा में सहायक शिक्षिका हूँ। मैं केन यूनिवर्सिटी की छात्रा हूँ। जीवन ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है अपने बारे में। यह लेख मैंने जीवन को एक गुरु के रूप में मानते हुए लिखा है। आशा है कि आपको पसंद आएगा।

जीवन मनुष्य का सबसे बड़ा गुरु है। ज़िन्दगी हमें बहुत कुछ सिखाती है। जो भी घटनाएँ हमारे जीवन में होती हैं, वे हमें कुछ न कुछ सिखा कर जाती हैं। ज़िन्दगी को कभी कोई पूरी तरह समझा नहीं, क्योंकि इसे समझ पाना मुश्किल है। मुश्किल इसलिए क्योंकि हर मनुष्य की ज़िन्दगी अलग होती है, जैसे कि हर मनुष्य की ज़िन्दगी का मकसद अलग होता है। मनुष्य सिर्फ वही जानता है जो हो चुका है और जो इस समय हो रहा है। वह यह नहीं जानता कि उसके भविष्य में क्या होने वाला है? ज़िन्दगी के हर मोड़ पर मनुष्य को एक चुनौती मिलती है। यह चुनौती मनुष्य को और मजबूत बनाती है और हमारा सही मार्गदर्शन करती है। हमें जीवन में हमेशा विकल्प चुनने होते हैं जो हमें हमारे लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करते हैं। इस लेख में मैं अपने जीवन की ऐसी ही कुछ घटनाएँ आपको बताऊँगी, जिनसे मैंने कुछ सीखा है।

आज अनजाने में ही एक कक्षा पढ़ाने के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला जो मुझे पहले नहीं आता था। मुझे यह सीखने को मिला कि कभी-कभी बच्चों को कुछ सिखाने के लिए सख्त होना पड़ता है वरना आपके शिष्य आप का सम्मान नहीं करते हैं। ज़िन्दगी यह भी सिखाती है कि मस्ती सिर्फ एक हद तक ही करनी चाहिए। किसी भी चीज़ की अति अच्छी नहीं होती है।

जब मैं पाँचवीं कक्षा में थी तो मेरी पाठशाला में एक लड़की थी जो हर नए बच्चे को छेड़ती थी मजे के लिए। मैं उस समय पाठशाला में नई थी। मैं अपनी कक्षा में किसी को नहीं जानती थी। मेरी कक्षा के पहले दिन उस लड़की ने मुझे छेड़ना शुरू कर दिया। जिस पाठशाला में मैं जाती थी वह एक प्राइवेट कैथोलिक स्कूल था कैलिफ़ोर्निया में। उस पाठशाला में सिर्फ दो भारतीय जाते थे। वह लड़की मुझे इसलिए छेड़ती थी क्योंकि मैं लंच के समय हिंदुस्तानी खाना खाती थी। पाँचवीं कक्षा के मध्य में कक्षा के सारे छात्र कक्षा में लंच कर रहे थे। वह लड़की मेरी मेज के पास आ कर मेरे खाने का मज़ाक उड़ाने लगी। उस दिन मैं लंच में डोसा खा रही थी। पहले तो मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया। फिर उसने मुझसे पूछा यदि वह मेरा डोसा चख सकती है क्या? मैंने सोचा कि यह क्या हो रहा है? यह मेरे खाने का मज़ाक न बनाकर उसे खाना चाहती है? मैंने उस से कहा ठीक है तुम मेरे डोसे में से एक कौर तोड़ कर खा सकती हो। मैंने अपने डोसे में से आधा हिस्सा उस लड़की को चखने के लिए दे दिया। उस ने उस हिस्से में से एक कौर खाया और उसे मिर्च लग गयी। वह मुझसे पूछने लगी कि मैं इतना चटपटा खाना कैसे खा लेती हूँ। उस दिन से आज तक उसकी मुझे परेशान करने की हिम्मत नहीं हुई।

ज़िन्दगी मनुष्य को हर मोड़ पर अलग-अलग लोगों से मिलाती है और उन में से कुछ लोग मनुष्य के मित्र बन जाते हैं। ऐसा ही कुछ मेरी ज़िन्दगी में

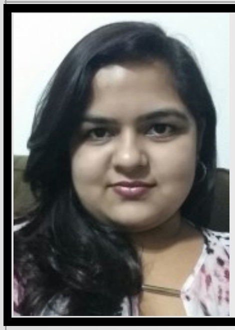

अमेरिका में भारत

मैं श्रुति खिस्ते २०१२ में अमेरिका आई। १५ साल भारत में रहने के बाद मेरे लिए अमेरिका में सब कुछ नया था। यहाँ की संस्कृति, पहनावा और खाना सब कुछ अलग था। स्कूल जाने के बाद यहाँ के बारे में धीरे-धीरे समझ आने लगा। धीरे-धीरे सब के साथ पहचान होने लगी। नृत्य करना जैसे मेरा एक जुनून है। मेरे नृत्य करने के कारण ही प्राची जी से पहचान हुई और उन्हीं से ही मुझे वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला के बारे में पता चला, और मैंने हिन्दी पाठशाला जाना आरम्भ किया। २०१४ में मैं वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला से एक नृत्य निर्देशिका के रूप में जुड़ी जहाँ मेरी पहचान वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला की संचालिका अर्चना जी से हुई, जिन्होंने मुझे बहुत सारा प्यार और प्रोत्साहन दिया। मेरी नृत्य कला को बढ़ावा दिया, और मुझे प्राची जी की सहायता करते हुए कनिष्ठ-1 के बच्चों को नृत्य सिखाने का उतर दायित्व सौंपा। हिन्दी महोत्सव में हमारा नृत्य तृतीय स्थान पर रहा, और मेरे लिए बहुत बड़ी प्रेरणास्त्रोत रहा। मैंने इस वर्ष वुडब्रिज पाठशाला में सहायक शिक्षिका के रूप में स्वयंसेवी बनने का निर्णय लिया। हिन्दी यू.एस.ए. की वजह से मुझे एक पहचान मिली। मुझे बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं, उन्हें पढ़ाना, उनके साथ खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता है। यहाँ मुझे एक स्थान मिला है, और मैं सब काम दिल से करूँगी।

मुझे जिंदगी में बहुत आगे जाना है, और एक अच्छी शिक्षिका बनना है। हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ कर मुझे भारत में अपने स्कूल में बिताए दिन याद आ गए। ऐसा लगता है मानो हम भारत से दूर नहीं हैं, और अपनी संस्कृति, पहनावा, भाषा, खान-पान को अपने साथ यहाँ संजोए हुए हैं। मैं हिन्दी यू.एस.ए. से शिक्षिका के रूप में हमेशा जुड़ी रहूँगी और सभी कार्यकर्ताओं और हिन्दी यू.एस.ए. का बहुत-बहुत आभार जिन्होंने अमेरिका में भारत बसा दिया है। - धन्यवाद

जीवन...

हुआ। पाँचवीं कक्षा में अपनी नई पाठशाला में मैंने एक दोस्त बनाया। उस दोस्त ने हर मुसीबत में मेरा साथ दिया और मेरा मार्गदर्शन भी किया। एक बार मेरी कक्षा की धौंस दिखाने वाली लड़की (bully) ने मेरे एक सहपाठी के बक्से में एक पर्ची डाल दी। उस पर्ची में लिखा था कि मैं किसी लड़के को पसंद करती हूँ और नीचे मेरा नाम था। जिस कागज़ पर लिखा गया था वह पाठशाला का होमवर्क प्लानर में से फाड़ा गया था। मेरी दोस्त ने उस दिन मेरे सारे सहपाठियों के होमवर्क प्लानर्स को खोल कर जाँचा जब तक उस bully के होमवर्क प्लानर में एक फटा हुआ पन्ना नहीं मिला।

ज़िन्दगी हमें यह भी सिखाती है कि जीवन और मरण भगवान के हाथों में होता है। मनुष्य को मृत्यु को एक बिछड़े हुए दोस्त की भाँति मिलना चाहिए।

Shree Hari Entertainment
Where creativity is celebrated and encouraged in every performance. Training youth , children and adults in performing arts and stage shows.
Offering Classes
Baal Hari - Training classes for children
Swar Hari - Talented Musical Groups
Musical lessons for all ages
Nritya Hari -Dance Classes
Nat Hari - Drama and theatric Arts Training
Yog Hari - Yoga Workshops
AND
Anubhav Hari - Recreational Classes for Seniors
Come Join and experience
Call: 732 501 0725 or 309 825 9324
A Meaningful Entertainment Experience

Sur Bhasha
Let's Keep Our Culture Alive
Keyboard
Guitar
Gurbani Kirtan
Tabla
Vocal
Harmonium
908.338.1413/www.surbhasha.com

दिवाली और रंगोली

श्वेता केडिया

मेरा नाम श्वेता केडिया है और मैं इस वर्ष प्रथमा-२ कक्षा की अध्यापिका हूँ। मैं अपने परिवार के साथ वेस्ट विंड्सर में रहती हूँ। मेरी एक बेटी और एक बेटा है। मेरी बेटी कारनेगी मेलन कॉलेज में पढ़ती है और बेटा सातवीं कक्षा में पढ़ता है। मेरा हिन्दी यू. एस. ए. में दूसरा साल है। मैं और मेरी सह-अध्यापिका पूजा बिंदल जी मिल कर कई प्रकार की परियोजना करते रहते है जिससे हमारे विद्यार्थी खेल-खेल में हिन्दी सीख सकें। शिखा मित्तल जी (अभिभावक) और हम अध्यापिकाओं ने बहुत आनंद लेकर इस दीवाली परियोजना को किया था।

दिवाली आई, रंगी रंगोली

धूम धड़ाका, छोड़ा पटाखा

सबको भाई, शुभ दिवाली!!

कुछ इसी प्रकार की मस्ती थी हमारे s-२ की कक्षा में इस वर्ष। नन्हे-नन्हे बच्चों ने दिवाली और रंगोली के महत्व को समझा और एक सुन्दर रंगोली बनाने की विधि को सीखा। सब बच्चे अच्छी-अच्छी पोशाकों में तैयार होकर आये और सबने दिवाली पर कुछ पंक्तियाँ सुनायी। दिवाली पर रंगोली घर के बाहर बनाई जाती है जिसका अर्थ है – आपका बहुत-बहुत स्वागत है। हमने सैंड पेपर पर आयल पेस्टील और क्रेयॉन्स का प्रयोग करके रंगोली की चित्रकारी की। बच्चों ने ज्योमेट्री की आकृतियाँ बनाई। उसमें अपनी इच्छा से रंग भरे। सभी बच्चे बहुत उत्साहित दिख रहे थे।

अलग-अलग प्रदेशों में रंगोली के नाम और उसकी शैली में भिन्नता हो सकती है लेकिन इसके पीछे निहित भावना और संस्कृति में पर्याप्त समानता है। इसे त्योहार, व्रत, पूजा, उत्सव विवाह आदि शुभ अवसरों पर सूखे और प्राकृतिक रंगों से बनाया जाता है। इसके लिए प्रयोग में लाए जाने वाले पारंपरिक रंगों में पिसा हुआ सूखा या गीला चावल, सिंदूर, रोली, हल्दी, सूखा आटा और अन्य प्राकृतिक रंगो का प्रयोग किया जाता है। लेकिन फूलों की रंगोली, जरी पाउडर से बनी रंगोली और चावल से बनी रंगोली काफी प्रचलित है। क्या आप जानते है कि साबूदाने को अलग-अलग रंगो से रंग कर भी रंगोली के लिये प्रयोग किया जाता है? आप रंगोली चाहे जैसे बनाइये लेकिन उसके बीच में दिया सजाना बिल्कुल मत भूलियेगा वरना वह अधूरी रह जाएगी।

विद्यार्थियों के विचार

आश्का दवे

मेरा नाम आश्का दवे है। मैं पाँच साल से हर शुक्रवार को हिन्दी पढ़ने जा रही हूँ। मैं मध्यमा-२ में पढ़ती हूँ। वैसे गुजराती मेरी मातृभाषा है। पिछले साल, जब मैं मेरे परिवार के साथ दिल्ली, भारत घूमने गई तब मेरे माता-पिता, मेरे और मेरे भाई का हिन्दी सवांद सुन के आश्चर्यचकित हुए। जब हम ताज महल और लाल किला देखने गए तो हमने सबसे हिन्दी में बात की, गाइड को प्रश्न भी हिन्दी में पूछ पाये। किसी को भी पता नहीं चला कि हम अमेरिका से आए हैं। हिन्दी यू.एस.ए. ने मुझे हिन्दी सीखने में बहुत मदद की है। मैं चाहती हूँ कि मैं आगे भी हिन्दी की पढ़ाई जारी रखूँ, और एक अच्छी बात ये है कि मैं मेरे दादा-दादी से भी हिन्दी में बात कर सकती हूँ। हिन्दी सीखने का एक बड़ा फायदा ये है कि मैं बॉलीवुड की सब मूवी समझ सकती हूँ और रेडियो ज़िंदगी भी सुन सकती हूँ।

रवीश मेहता

मेरा नाम रवीश मेहता है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे तैरना और फुटबॉल खेलना अच्छा लगता है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक में रहता हूँ।

बिना अध्यापक और अध्यापिका के हिन्दी सीखना मुश्किल है। हमारी शिक्षिकाएँ हिन्दी में अलग-अलग विषयों के बारे में हमेशा कुछ नया सिखाती हैं। मुझे हिन्दी पढ़ना अच्छा लगता है। हिन्दी पाठशाला में मेरे बहुत सारे मित्र भी हैं। शिक्षिकाएँ हमेशा हमारा मार्गदर्शन करती हैं। हमारी शिक्षिकाएँ हमें भारतीय संस्कृति के बारे में भी सिखाती हैं। हमें दिवाली, होली आदि त्योहारों के बारे में जानने को भी मिलता है। हम दिवाली बड़ी उत्साह से हिन्दी पाठशाला में मनाते हैं। उसके अलावा हम कविता प्रतियोगिता और हिन्दी महोत्सव में हिस्सा भी लेते हैं। मैं अपनी हिन्दी पाठशाला की शिक्षिकाओं का बहुत आभारी हूँ।

ऐशानी

मेरा नाम ऐशानी है। मैं मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। हम सभी बच्चों को हिन्दी पाठशाला जाना अच्छा लगता है, हमारी शिक्षिकाएँ भी बहुत अच्छी और सहनशील हैं। वे हम बच्चों को धीरे-धीरे और लगातार हिन्दी सीखने में मदद करती रहती हैं। हिन्दी पाठशाला के द्वारा हमें नए-नए मित्र बनाने का भी मौका मिलता है। हमारी हिन्दी पाठशाला स्वयंसेवी संस्था द्वारा संचालित है और सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ अपना कीमती समय बच्चों को पढ़ाने में देते हैं। हिन्दी पाठशाला में हम हिन्दी शब्दों का मतलब और हिन्दी बोलना सीखते हैं। हम इस वर्ष उत्सव सम्बन्धी, व्यवसाय, प्रचार-प्रसार, हिन्दी, महीनों, मौसम, भौगोलिक स्थानों तथा इमारतों के नाम सीख रहे हैं। हम इस साल व्याकरण भी सीख रहे हैं, जिसके द्वारा हम हिन्दी को सही तरीके से लिख-पढ़ और बोल सकते हैं। इस तरह आप देख सकते हैं कि हिन्दी पाठशाला जाने के कई फायदे हैं।

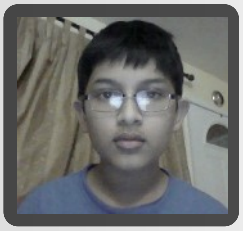

आदित्य चक्रवर्ती

मेरा नाम आदित्य चक्रवर्ती है, और मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-२ स्तर में अध्ययन करता हूँ। मैं १२ साल का हूँ, और मैं ८ वर्ष की उम्र से हिन्दी सीख रहा हूँ। इसके अलावा मैं वुडरो विल्सन मिडिल स्कूल की सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।
हिन्दी सीखना न केवल उपयोगी है, इस नई भाषा को सीखने में मुझे बहुत आनन्द आता है। सभी शिक्षक बहुत अच्छे हैं, और सभी छात्रों को बहुत प्यार करते हैं। हमें परीक्षा के लिए तैयार करने के लिए मजेदार खेल खेलते हैं, और अभ्यास प्रश्न उत्तर (quiz) भी पूछते हैं। वे हमें प्रोत्साहित करते हैं और हमें हर तरह की मदद करते हैं। हम यहाँ केवल हिन्दी ही नहीं सीखते हैं, हम और भी बहुत कुछ सीखते हैं। भारतीय संस्कृति को जानते हैं और उसका आदर करना सीखते हैं। घर में बड़ों का सम्मान करना और छोटों को प्यार देना हमारा कर्तव्य होता है। यह हम हिन्दी किताब में पढ़ते हैं। हिन्दी एक बहुत ही समृद्ध भाषा है, और मैं आशा करता हूँ कि एक दिन मैं हिन्दी साहित्य की कई पुस्तकों को पढ़ने में सक्षम हो जाऊँगा। धन्यवाद!!

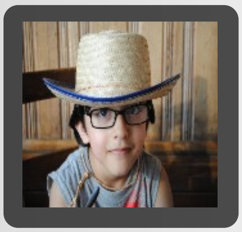

वंश माथुर

मेरा नाम वंश माथुर है। मैं, हिन्दी यू.एस.ए. की ईस्ट ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-१ में और मेरा बड़ा भाई उच्चस्तर-१ में पढ़ते हैं। मैं तीसरी कक्षा में मेमोरियल पाठशाला में पढ़ता हूँ। मुझे हिन्दी सीखना, चित्रकला करना, नाचना और लेगो खेलना पसंद है।
वर्ष २०१४ मेरे लिए खास था क्योंकि मैं भारत गया और हिन्दी में नानीजी, दादीजी और दादाजी के साथ बात करने की कोशिश की थी। मैंने और मेरे भाई ने हिन्दी कविता प्रतियोगिता में जो कविता प्रस्तुत की थी वह भारत में सब को सुनाई। मैंने हिन्दी महोत्सव में डांस किया और मेरे भाई ने मध्यमा-१ और २ कक्षा के बच्चों को डांस सिखाया। मुझे कभी हिन्दी स्कूल में और कभी शिक्षिकाओं के घर पर अपने दोस्तों के साथ महोत्सव प्रैक्टिस करना अच्छा लगा।
मैं हमारे मेहमानों के साथ वॉशिंगटन डी.सी. और नियाग्रा फाल्स गया। गर्मी की छुट्टियों में एन. एस.एफ. परीक्षा के लिए टेक्सास गया और स्पेस सेंटर, ह्यूस्टन में समर कैंप किया। जब सितंबर में स्कूल खुला तब मैंने छात्र परिषद और गेट में भाग लिया। मेरी कला को जिला शिक्षा प्रशासन भवन में प्रदर्शनी में दिखाया गया था। दिसंबर में अपने भाई के नृत्य प्रदर्शन (कॉलेज फुटबॉल के आधे समय में बॉलीवुड डांस, जो इतिहास में पहली बार हुआ) के लिए लास वेगास गया। वहाँ मैंने प्रसिद्ध जादूगर डेविड कॉपरफील्ड शो, का (KA) और ओ (O) नाम के शो देखे। मुझे सभी शो पसंद आए। इस तरह वर्ष २०१४ में हिन्दी स्कूल और इन सभी जगहों पर जाकर मुझे बहुत मज़ा आया।

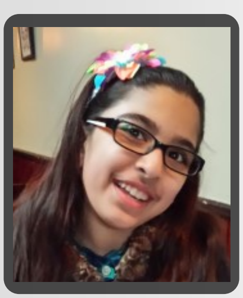

पावनी भारद्वाज

मेरा नाम पावनी भारद्वाज है। मैं हर शुक्रवार को हिन्दी स्कूल जाती हूँ। मैं मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिन्दी स्कूल जाना अच्छा लगता हैं। वहाँ मैं अपने दोस्तों से मिलती हूँ जिनको मैं कई साल से जानती हूँ। हमारी अध्यापिका हमें हिन्दी की कहानी सुनाती हैं। वे हमें त्योहारों के बारे में बताती हैं। मेरी कक्षा में एक नियम है कि जो अंग्रेज़ी में पूरा वाक्य बोलेगा, उसे बाकी बच्चे चॉकलेट देंगे। इस नियम की वजह से सब बच्चे हिन्दी बोलते हैं और एक दूसरे की मदद भी करते हैं। हिन्दी सीख कर मैं अपने दादी और दादा के साथ हिन्दी में बात कर पाती हूँ।

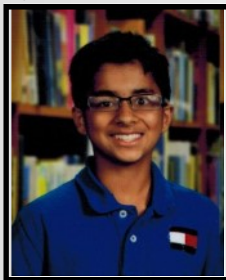

स्टीव जॉब्स की भारत यात्रा

हर्षल नवाडे लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला में उच्च स्तर-१ का विद्यार्थी है। हर्षल गणित, रोबॉटिक्स तथा टेक्नॉलॉजी के क्षेत्र में रुचि रखता है।

एप्पल कम्प्यूटर और पिक्सार एनीमेशन के सी.ई.ओ. स्टीव जॉब्स ने दुनिया में एक ऐसा मुकाम हासिल किया, जिसका लोग सिर्फ सपना भर देखते हैं। स्टीव जॉब्स ऐसे इंसान थे जिन्होंने अकेले ही अपने जीवन में कम्प्यूटर्स, डिजिटल संगीत, एनिमेटेड फिल्में, स्मार्टफोन, टेबलेट पीसी तथा डिजिटल प्रकाशन के जगत क्षेत्रों में क्रांति ला दी।

बहुत कम लोग जानते हैं कि स्टीव जॉब्स की सफलता की शुरुआत उनके १९७३ की भारत यात्रा के साथ हुई। उससे पहले वे एक साधारण इंसान थे। बचपन में स्कूल की पढ़ाई में वे तेज तो थे, किन्तु उनकी कुछ खास उपलब्धियाँ नहीं थी। वह अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध एक ऐसे कॉलेज में दाखिल हुए जिसका खर्च उनके पिता वहन नहीं कर पाते थे। इस महंगे कॉलेज की शिक्षा भी वह पूरी नहीं कर पाए। उनकी पढ़ाई अधूरी रही, ड्रग के भी चक्कर में पड़ गए। उनकी जिंदगी तेजी से असफलता की और चल रही थी।

फिर १९७३ में वे अपने एक मित्र के साथ आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के लिए भारत आए। भारत में उन्हें उत्तरांचल के कैंची आश्रम के नीम करोली बाबा से मिलना था। स्टीव जॉब्स भारत के लोगों की जीवन शैली से प्रभावित हो गए। उन्होंने देखा कि भारत के आम लोग अपने इन्ट्यूशन पर ज्यादा निर्भर करते हैं। भारत की इस यात्रा में उन्हें ध्यान (मेडिटेशन) का सही मार्ग प्राप्त हुआ। जब वे भारत से लौटे तो बिल्कुल बदल चुके थे। वे एक आदर्श हिंदू की तरह नजर आ रहे थे। उन्होंने मुंडन करवा लिया था, पारंपरिक भारतीय लिबास धोती धारण कर चुके थे। दुनिया के प्रति और अपने प्रति उनकी धारणा बदल चुकी थी। भारत से लौटने के पश्चात कुछ ही दिनों में वे बौद्ध हो गए। भारतीय दर्शन (हिंदू और बौद्ध) का प्रभाव उन पर इस कदर हो चुका था कि वे संतों की तरह अकसर खाली पैर चल पड़ते थे। यही नहीं, उन्होंने जिंदगी भर शाकाहारी रहने का निश्चय भी किया। रॉबर्ट थर्मन, कोलंबिया विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन के प्रोफेसर कहते हैं कि स्टीव को आंतरिक ताकत भारतीय दर्शन से मिलती थी। नियमित ध्यान करने से स्टीव की इन्ट्यूशन बहुत प्रभावी हो गयी थी। उसके पश्चात स्टीव जॉब्स ने जो भी निर्णय लिया वह गलत साबित नहीं हुआ। उसका उन्होंने व्यापार में सफलता से उपयोग किया। एक योगी की तरह उन्होंने तकनीकी जगत का भविष्य अपनी आँखों से देखा, और ऐसी-ऐसी चीजों का आविष्कार किया जिसे सामान्य लोग सपने में भी नहीं सोच सकते थे।

सोचो, अगर स्टीव जॉब्स १९७३ में भारत यात्रा पर नहीं जाते, तो एक हिप्पी का जीवन जीते, और हम सब आज भी स्मार्टफोन की क्रांति से अज्ञात रहते। मैं समझता हूँ कि स्मार्टफोन की खोज में और एप्पल की सफलता में भारत की आध्यात्मिक शक्ति का यह एक अमूल्य योगदान है।

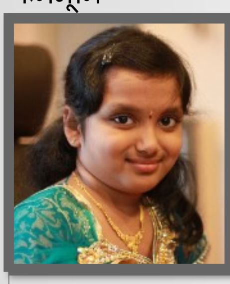

भारत का महत्व

हारिका कलिमिसेट्टी
अर्जुन नायर

नमस्ते!! हमारा नाम हारिका कलिमिसेट्टी और अर्जुन नायर है। हम हिन्दी यू.एस.ए. एडिसन पाठशाला की प्रथमा-२ कक्षा में पढ़ते हैं। हम भारतीय हैं और आज अपने भारत के बारे में कुछ प्रमुख बातें बताने जा रहे हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र देश है और विश्व का छठवाँ बसे बड़ा देश है। भारत का अंग्रेजी में नाम "इंडिया" इंडस नदी से बना है। भारत को आजादी पंद्रह अगस्त १९४७ में मिली। भारत के झंडे को तिरंगा कहते हैं।

हम यह बात गर्व से कह सकते हैं कि बीज गणित, त्रिकोण मिति और कला भारत में ही आरंभ हुए थे। इसके साथ-साथ "स्थान मूल्य प्रणाली" और "दशमलव प्रणाली" का विकास भी भारत में १०० ईसा पूर्व में हुआ था। शतरंज का आविष्कार भारत में हुआ था।

तिरुपति शहर में बना विष्णु मंदिर जो १०वीं शताब्दी के दौरान बनाया गया था, विश्व का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है। विश्व का प्रथम ग्रेनाइट मंदिर बृहदेश्वर मंदिर, तमिलनाडु के तंजौर में है।

इसलिए हम लोग गर्व से कह सकते हैं कि हमारा भारत कर्मभूमि और पुण्यभूमि है!! जय बोलो भारत माता की जय!! जयहिंद!!

भारतीय संस्कृति

नेत्रा अय्यर

भारतीय संस्कृति की सुंदरता उसकी वेशभूषा, व्यंजन और अनेक भाषाओं में है। रंगीन रेशमी साड़ियाँ और धोती भारतीय पारंपरिक पोशाक के उदाहरण हैं। हर उत्सव या पूजा के लिए लोग ये कपड़े पहनते हैं, परंतु हर प्रांत, राज्य की अपनी वेशभूषा है।

भारतीय व्यंजनों की विशेषता उनकी विभिन्नता में है। इन व्यंजनों की विशेषता इन्हें बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले मसाले हैं। गेहूँ, चावल, तरह-तरह की दाल, ज्वार, इत्यादि खाना बनाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। भारतीय खाने की एक और विशेषता यह है कि इसे हाथों से खाया जाता है। खाने के लिए काँटा-छुरी या चम्मच का उपयोग नहीं करते।

भारत में २९ राज्य और ७ केंद्र शासित प्रदेश हैं। भारतीय संविधान के अनुसार भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। हिन्दी भाषा कई प्रांतों में बोली जाती हैं। हिन्दी भाषा ४१% लोगों की मातृभाषा है। कई लोग जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है, वे भी हिन्दी में कुशल हैं।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि भारत की सर्वोत्तम विशेषता “अनेकता में एकता” है।

हमारे त्योहार

गणगौर - तृषा सेन्थिलकुमार

गणगौर रंगीला है और राजस्थान के लिए सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। इस त्योहार में, औरतें अपने पति के लिए प्रार्थना करती हैं।

गणेश चतुर्थी - शाम्भवी धांगे

गणेश चतुर्थी पर हम भगवान गणेशजी का जन्मदिन मनाते हैं और पूजा करते हैं। गणेशजी की मूर्ति लाते हैं, और सजाते हैं। १ से १० दिन पूजा करते हैं। मोदक का भोग लगाते हैं। मुझे गणेश चतुर्थी का त्योहार पसंद है।

होली - अनीषा तहबिलदार

होली मस्ती भरा रंग-बिरंगा त्योहार है। इस दिन सारे लोग अपने पुराने गिले-शिकवे भूल कर गले लगते हैं, और एक दूजे को गुलाल लगाते हैं। बच्चे और युवा रंगों से खेलते हैं।

जन्माष्टमी - विनय

जन्माष्टमी श्री कृष्ण की जन्म तिथि है। इस दिन लोग व्रत भी रखते हैं।

पोंगल - मगथी बालमुरली

ये त्योहार चार दिनों के लिए मनाया जाता है। पहले दिन भोगी पोंगल, दूसरे दिन सूर्य पोंगल, तीसरे दिन मट्टू पोंगल और चौथे दिन कन्या पोंगल के रूप में मनाया जाता है।

उगडी - पलश शाह

भारत के कुछ राज्य उगडी के दिन नया साल मनाते हैं।

हनुमान जयंती - स्नेहा बुरले

इस दिन भगवान हनुमान जी का जन्म हुआ था। हनुमान जयंती के दिन हनुमान जी की पूजा में तेल और लाल सिंदूर चढ़ाने का विधान है। यह त्योहार पूरे भारतवर्ष में श्रद्धा व उल्लास के साथ मनाया जाता है।

महा शिवरात्रि - मिशा पटेल

इस दिन शिवजी की पूजा करते हैं। इस दिन पार्वती जी ने शिवजी से शादी की थी। शिवलिंग पर जल और दूध चढ़ाते हैं।

दशहरा - अंविता दयापा

दशहरे के दिन भगवान श्री राम ने लंकापती रावण को मारकर विजय प्राप्त की थी। इस दिन असत्य पर सत्य की जीत हुई थी। इसे विजय दशमी भी कहते हैं।

शेष पृष्ठ ७५ पर...

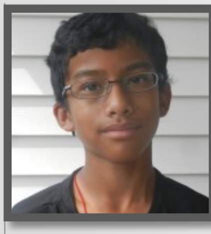

विद्यार्थी, स्वयंसेवक, शिक्षक - एक अनुभव

मेरा नाम अभिसार मुर्मू है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। पिछले साल मैंने ईस्ट ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला से स्नातक किया। अब मैं इसी पाठशाला में स्वयंसेवक हूँ। मैं प्रथमा-२ और मध्यमा-१ स्तर में सहायता करता हूँ। जैसे कि जब शिक्षिका को कलम या रबड़ की ज़रूरत है, तो मैं लाता हूँ। अगर किसी बच्चे को कुछ न समझ आये, तो फिर मैं उन को समझाता हूँ। मैं कोशिश करता हूँ कि हर शुक्रवार को कक्षा में शामिल रहूँ। पंजीकरण में मदद करता हूँ मैं और आदित्य, वह भी मेरी तरह स्वयंसेवक है, हम दोनों फ्रंट-डेस्क में साइन इन - साइन आउट में भी मदद करते हैं ।

एक बार प्रथमा-२ में ठंडे मौसम की वजह से कम बच्चे आये थे, तो निरुपमा जी, और स्वगाता जी जो प्रथमा-२ की शिक्षिका हैं, ने मुझे कहा कि मैं बच्चों को कहानी सुना दूँ। कक्षा के शुरू होने पर मैंने बच्चों को कहानी सुनाई। वाक्य के बाद मैंने बच्चों से वाक्य का मतलब क्या है, पूछा। जब उन्हें नहीं समझ आया, तो मैंने अंग्रेजी में, वाक्य का मतलब बताया। अंत में, बच्चों ने समझा कि कहानी का मतलब क्या है, और क्या शिक्षा थी? दूसरे दिन एक अभिभावक ने ई-मेल भेजी कि बच्चों को मेरी पढ़ी कहानी अच्छी लगी, और वह कक्षा में कहानी सुनना पसंद करते हैं। मेरी माँ को अब लगा कि मैं ठीक से काम कर रहा हूँ। मुझे भी सुन कर अच्छा लगा। मुझे जब भी ऐसे पढ़ाने का मौका मिले तो मैं जरूर पढ़ कर सुनाऊंगा। निरुपमा जी, और स्वगाता जी को धन्यवाद। मैंने हिन्दी यू.एस.ए से ही हिन्दी सीखी। मेरी माँ, मेरी शिक्षिका सविता नायक जी, वंदना पलरेचा जी और सारिका जी ने मुझे हिन्दी सिखाई। उन सब को धन्यवाद। और एक बात कभी न भूलूँ, कि जब मैं तीन साल पहले भारत गया तो, मैं बस अच्छे से पढ़ लिख सकता था, पर ठीक से बोल नहीं पाता था। फिर भी सब मेरे हिन्दी ज्ञान को जान कर आश्चर्य चकित थे। अब तो और भी खुश हो जायेंगे।

वाक्य ठीक से न लिखे हों, तो माफ कर दें। अगले साल से और अच्छा लिखने की कोशिश करूँगा। हिन्दी यू.एस.ए. को सलूट और धन्यवाद।

◆ ◆

धनतेरस - मानसी मिसरा

धनतेरस पाँच दिन की दिवाली का पहला दिन होता है। धन का मतलब पैसा होता है। तेरस का मतलब १३ वाँ दिन हिन्दू पंचांग में।

राखी - दिव्यांशा कर

राखी एक त्योहार है। बहनें अपने भाई को राखी बाँधती हैं।

मकर संक्रांति - अंजली महेश

मकर संक्रांति, एक किसान का त्योहार के अलावा, भारतीय संस्कृति में एक शुभ चरण की शुरूआत के रूप में भी मनाया जाता है।

गणतंत्र दिवस समारोह

लुइविल हिन्दी पाठशाला

रजिता ऐल्हेंस

रजिता जी ने शिक्षण में स्नातक उपाधि प्राप्त की है तथा भारत में एक कुशल शिक्षिका का कार्यभार सम्हालती रही हैं। आप एक सुघड़ ग्रहणी हैं तथा अपने दोनों बच्चों के साथ लुइविल हिन्दी पाठशाला में जाती हैं, जहाँ २ वर्षों से प्रथमा-१ और प्रथम-२ स्तर के विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षण दे रही हैं।

लुइविल हिन्दी पाठशाला ने इस बार पूरे जोश और उत्साह के साथ गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लिया। हर वर्ष Indian Community Foundation (ICF) लुइविल में गणतंत्र दिवस का भव्य आयोजन करते हैं। इस वर्ष लुइविल हिन्दी पाठशाला ने उत्साहपूर्वक भाग लेने का निर्णय लिया। गणतंत्र दिवस की भावना से जुड़ते हुए "हम होंगे कामयाब" गीत का चयन किया गया। शिक्षकों और हमारी सांस्कृतिक संयोजिका स्मिता श्रीवास्तव के सक्षम मार्गदर्शन में सभी आयु के बच्चों के समूह ने भाग लिया। हिन्दी कक्षा के उपरान्त बच्चों ने पूरी रुचि के साथ अभ्यास करना प्रारम्भ किया।

गणतंत्र दिवस समारोह के दिन लुइविल के मेयर, ग्रेग फिशर हमारे सम्मानित अतिथि थे। झंडा रोहण समारोह के बाद लुइविल हिन्दी पाठशाला के बच्चों ने पूरे गर्व के साथ राष्ट्रीय गीत गाया और फिर "हम होगें कामयाब" गीत गाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। सभी बच्चों की तालियों से सराहना की गई। मेयर न केवल कार्यक्रम से बल्कि लुइविल हिन्दी पाठशाला के प्रयासों से भी बहुत प्रभावित हुए। सभी शिक्षकों और बच्चों के साथ उन्होंने फोटो खिंचवा कर हमारी पाठशाला को सम्मानित किया। यह एक अविस्मरणीय क्षण था। श्रीमती त्यागी एवं श्री प्रतीक गुप्ता के सक्षम मार्गदर्शन में हम शिक्षकों का प्रयास रहेगा कि लुइविल हिन्दी पाठशाला को तेजी से विकसित करें और हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़े रहने के गर्व के साथ उनके लक्ष्यों को पूरा करें।

दिवाली का भव्य उत्सव

(ईस्ट ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला)

सविता नायक

ईस्ट ब्रुंस्विक हिन्दी पाठशाला ने इस वर्ष भी बहुत धूमधाम से दीपावली उत्सव मनाया। पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चे और उनके अभिभावक तो उपस्थित थे ही, उनके साथ ही कई स्वयंसेवक जिनमें स्नातक हो चुके बच्चे और बड़े भी थे, एवं उनके दादा-दादी और नाना-नानी को भी आमंत्रित किया गया था। इस कारण इस समारोह में हर आयु वर्ग के बच्चों से लेकर बड़ों तक को कार्यक्रम में भाग लेते हुए या कार्यक्रम का आनंद लेते हुए देखा जा सकता था।

प्रत्येक कक्षा के शिक्षक ने अपनी कक्षा के छात्रों को कार्यक्रम प्रस्तुत करने में मार्गदर्शन किया। मंच पर जाने से पूर्व बच्चे अपनी सुंदर-सुंदर पोशाकों में अपनी कक्षा के शिक्षक के साथ 'अंतिम रीहर्सल' करने में मग्न थे। वे अधीरता से बार-बार अपने अभिभावक एवं शिक्षक से पूछते कि वे कब मंच पर जायेंगे। इस समारोह में प्रस्तुत कार्यक्रमों में फैशन-परेड, क्विज, लघु-नाटिका एवं गीत इत्यादि के माध्यम से भारत एवं भारत के विभिन्न प्रांतों का प्रतिनिधित्व करने वाले विविधता से परिपूर्ण कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के समापन पर जलपान एवं भोजन की व्यवस्था थी।

दीपावली उत्सव एवं इस प्रकार के प्रत्येक कार्यक्रम की सफलता के लिए हिन्दी पाठशाला के सभी शिक्षक, छात्र, अभिभावक एवं कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं।

मोंटगोमरी पाठशाला – दीवाली २०१४

हर साल दिवाली आती है और मोंटगोमरी पाठशाला में तो मज़ेदार पटाखे, हजारों दिये और रंग-बिरंगी रंगोलियाँ लेकर आती है। हमारा मोंटगोमरी पाठशाला परिवार इस त्योहार को बड़े धूम-धाम से मनाता है। बच्चों का उत्साह फूला नहीं समाता। इस शुभ अवसर पर बच्चों ने इस साल टाईल चित्रकला और रंगोलियाँ बनाकर अपनी कला का प्रदर्शन किया। सारे अभिभावक और शिक्षक अपने-अपने घर से स्वादिष्ट व्यंजन और मिठाइयाँ बनाकर लाए थे, जिसका आनंद सभी ने उठाया। इस त्योहार के अवसर पर सारे बच्चों ने पटाखे जलाकर दिवाली मनाई और नए वर्ष का हर्षोल्हास के साथ स्वागत किया। बच्चों को एक अभिभावक कनिका तायल जी ने टायल पेंटिंग सिखाई, और सभी शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों ने बच्चों को रंगोली बनाना सिखाया।

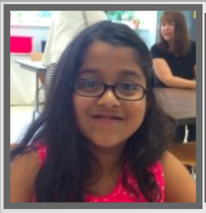

बसंत

मेरा नाम आरुषि गायकावाड़ है और मैं इज़्लिन में चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ। वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मुझे हिंदू संस्कृति के बारे में जानना बहुत अच्छा लगता है, और मैं एच.एस.एस. (हिंदू स्वयंसेवी संस्था) में भी जाती हूँ, जहाँ हम भारतीय संस्कार सीखते हैं। हिन्दी कक्षा में आना मुझे बहुत पसंद है। मैं अपनी छोटी बहन और अपनी माँ के साथ वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला में जाती हूँ और सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग भी लेती हूँ। मेरी माँ हिन्दी की शिक्षिका हैं। यहाँ मैं बसन्त ऋतु के बारे में बात कर रही हूँ। हमने मध्यमा-3 स्तर में विभिन्न ऋतुओं, महीनों भौगोलिक नामों इत्यादि के बारे में पढ़ा है। अंत में, हम भारी जैकेट और खुजलीवाले स्वेटर से बाहर निकल सकते है, क्योंकि बसन्त का अद्‍भुत मौसम यहाँ आ चुका है। जब आप घर के बाहर कदम रखते हो तब आपको पक्षियों की चहचहाहट और मधुमक्खियों के गुनगुनाने की आवाज सुनाई देगी। आप फूलों को खिलते देखेंगे और हमारे आसपास के जीवन की एक नई शुरुआत होगी। लेकिन बसन्त के दौरान बहुत सारी बारिश होती हैं। नमी के कारण, कीड़े फिर से जमीन से बाहर निकलेंगे। बादल हटेंगे और हमें सूरज की उज्ज्वल चमक दिखाई देगी। जब आप सुबह उठोगे तब पत्तों पर जमी हुई ओस और सुंदर सूर्योदय दिखाई देगा। सांझ के समय, एक अच्छा सूर्यास्त अपने मन को प्रफुल्लित कर देगा। बसन्त का मौसम हमेशा एक नई आशा लेकर आता है, हमारे जीवन में, और प्रकृति में जीवन की नयी शुरुआत होती है। इसी कारण बसन्त मेरा पसंदीदा मौसम है। हमारी हिंदू संस्कृति में इन्हीं दिनों चैत्र मास के आरम्भ में नया साल मनाया जाता है, जिसे हम विक्रम सम्वत् कहते हैं। नया साल नया जीवन, नई उज्ज्वल रोशनी लेकर आता है। हर जगह एक नई शुरुआत!!

एक शहीद की दिवाली

मैं वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-३ की छात्रा हूँ, और फॉर्ड्स स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं बचपन से ही हिन्दी भाषा के प्रति अनुरक्त हूँ। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और उसे सभी भारतीयों के लिए जानना जरुरी है, ये मेरा मानना है। विदेश में रह कर हिन्दी बोलने और लिखने की क्षमता को ताज़ा रखना कठिन है उसे हिन्दी यू.एस.ए. की संस्था आसान कर देती है। मुझे हिन्दी यू.एस.ए. की कविता पाठ में भाग लेना अच्छा लगता है। उससे मेरा उच्चारण और अभिव्यक्ति अच्छी होती है। मैंने इस वर्ष शहीद की दिवाली कविता याद की, जिसमें एक बच्चा अपने पिता की प्रतीक्षा करता है जो देश के लिए शहीद हो चुके हैं लेकिन उसे पता नहीं होता। जब उसे पता चलता है तो वह अपनी माँ को बोलता है कि मैं अब कभी भी नहीं रोऊँगा और अपने पिता जी की तरह देश की सेवा करूँगा। कविता याद करते समय मैं बहुत ही भावुक हो गई थी, और समझ पाई कि शहीद के बच्चे कैसा महसूस करते हैं। मुझे अपने दादा जी के भाई की याद आ गई, जो भारतीय सेना में थे, और उन्हें भी गोली लगी थी। मैं तब बहुत छोटी थी, लेकिन मुझे सब याद है और कविता याद करते समय सब मुझे याद आ गया। कविता याद करते समय हम बहुत कुछ सीखते हैं। बड़ी होकर मैं भाषा के लिए काम करना चाहती हूँ। मेरा आज का अध्ययन दूसरों के काम में आए, यह मेरी कोशिश होगी।

मिनयन और मनुष्य

मध्यमा-३ मोंटगोमरी पाठशाला

योजना - तानवी कटारिया, अश्रिता महातपुरे

कहानी - सरयू कुंदुरु

रेखांकन - तानवी कटारिया

चित्रकारी - तानवी कटारिया, अश्रिता महातपुरे, सरयू कुंदुरु

शिक्षिका - कुमुदनी साँबाशिवन

बहुत समय पहले की बात है, इस धरती पर मनुष्य से पहले एक जीव राज करते थे, उसका नाम मिनयन था।

वे पीले रंग के थे और वे हर समय चश्मे पहना करते थे। एक दिन कुछ मिनयन बाहर जंगल में खेल रहे थे, तभी उनकी नज़र एक अजीब तरह के जीव पर पड़ी।

असली में वह एक मनुष्य का बच्चा था, किंतु मिनयन यह नहीं जानते थे। क्योंकि वह सुंदर सी बच्ची बहुत ही छोटी थी, तो मिनयन उसे अपने साथ घर ले गए। उन्होंने उसका नाम तारा रखा।

कुछ दिनों बाद वह बच्ची धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। शुरू-शुरू में वह मिनयनों के साथ खेला करती, परंतु जैसे-जैसे वह और बड़ी हुई, वह गुम-सुम और उदास रहने लगी। मिनयनों को समझ में नहीं आया कि वह क्यों उदास रहती थी?

एक दिन वहाँ एक लड़का नदी के किनारे बेहोश पड़ा था, उसी समय तारा कि नज़र उस लड़के पर पड़ी। तारा ने उसे उठाने की कोशिश की। कुछ देर में उसे होश आया और वे एक दूसरे से बातचीत करने लगे।

वे दोनो मिनयनों के गाँव गए और वहीं खुशी-खुशी एक साथ रहने लगे। कुछ दिनों बाद उन दोनों का एक बच्चा हुआ, और इस तरह से धरती पर मनुष्यों की आबादी बढ़ने लगी, और आज धरती पर मनुष्यों का ही राज है।

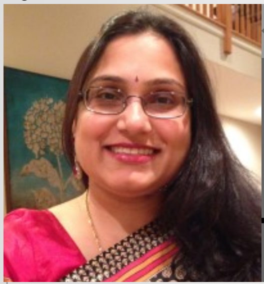

कविता पाठ के लाभ

चेतना मल्लारपु

नमस्ते! मेरा नाम चेतना मल्लारपु है, और मैं पिछले पाँच वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. से स्वयंसेविका के रूप में जुड़ी हूँ। इन पाँच वर्षों में मेरे कई विद्यार्थियों ने कविता पाठ प्रतियोगिता में भाग लिया है। एक बार मेरी एक छात्रा ने मुझ से पूछा कि, "हमारे लिए कविता पाठ क्यों जरूरी है, इससे हमें क्या फायदा होता है?"

इस प्रश्न से मैं सोच में पड़ गई कि यह प्रश्न तो बहुत बच्चों के मन में आता होगा, इसीलिए मैंने सोचा कि मैं कर्मभूमि पत्रिका द्वारा इस प्रश्न का उत्तर सभी बच्चों को समझा पाऊँ तो मुझे अति प्रसन्नता होगी। मैं आशा करती हूँ कि यह सभी पाठकों को पसंद आएगा और बच्चे भी समझ सकेंगे।

कई देशों में कविता पाठ उनके विद्यालयों के पाठ्यक्रम का अटूट अंग होता है। जाने-अनजाने यह हमारी शिक्षण विधि में बहुत सहायक है। इसके पाँच लाभ मैं इस लेख के द्वारा आपको बताना चाहती हूँ।

१) भाषा सीखने का आसान अभ्यास

कविता पाठ के माध्यम से बच्चे केवल बोलचाल की भाषा ही नहीं, काव्य भाषा सीखते हैं। कविता किसी भी विषय-वस्तु की बहुत ही शक्तिशाली दिमागी छवि बनाती है और साथ ही साथ सकारात्मक भावनाओं को उत्पन्न करती है। छात्र उदाहरण सहित संसार के कई महान कवियों की रचनाएँ पढ़ते हैं और उनसे कविता लिखने के तरीके भी सीखते हैं। इससे उन्हें शब्दों और वाक्यों के सही प्रयोग का भी पता चलता है।

२) अपने देश की कला और संस्कृति का ज्ञान मिलना

कविता केवल शब्दों का समूह ही नहीं है। वह हमारी कला और संस्कृति को परिभाषित करती है। बच्चे कविता के शब्दों में छुपे हमारे इतिहास और संस्कृति को समझते हैं, तथा उसका आदर करते हैं। कई वर्षों से भाषा में हुई प्रगति का श्रेय कविता को बखूबी जाता है।

३) हमारी स्मरण शक्ति को बढ़ाने में सहायता करना

कविता की पंक्तियाँ याद करना हमारी बौद्धिक शक्ति का महत्वपूर्ण व्यायाम है। यह हम सब जानते हैं कि दिमाग माँसपेशियों से बना है जिसका नियमित रूप से प्रशिक्षण करना बहुत आवश्यक है। दिमाग को कविता याद करने का प्रशिक्षण देने से बाकी सूचनाओं को याद रखने की क्षमता भी बढ़ती है। बार-बार एक ही सूचना को दोहराने से स्मरण शक्ति गहरी होती जाती है। एक साथ बहुत कुछ रटने से अधिक लाभदायक प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा अध्ययन करना होता है।

४) प्रस्तुति कौशल की तकनीक सीखना

'ग्लोसोफोबिआ' सार्वजनिक रूप से बोलने के भय को कहते हैं। यह हमारे देश में एक बहुत ही प्रचलित समस्या है। अगर हमारे बच्चे मंच पर जाकर सबके सामने अपने सामर्थ्य को दर्शाते हैं तो वो भविष्य में भी लोगों के सामने अपने विचार प्रस्तुत करने से पीछे नहीं हटेंगे। यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि बचपन में यह तकनीक सीखना उनके भविष्य में अत्यन्त लाभदायक रहेगा। क्या पता उनका भविष्य इस पर ही निर्भर हो।

५) कुछ कर दिखाने की प्रसन्नता

आपने कभी देखा है कि जिस प्रवीणता से ये बच्चे मंच पर आकर कविता पाठ करते हैं, उस प्रवीणता से कई बार हम बड़े नहीं कर पाते। जब तालियों से पूरा सभागृह गूँज उठता है, तब इन बच्चों की ख़ुशी का अंदाजा हम नहीं लगा सकते। यही प्रशंसा, यही वाहवाही उन्हें प्रोत्साहित करती है कि वे आगे भी इसी प्रकार सफलता की ओर बिना किसी डर के बढ़ते रहें। इस तरह का प्रोत्साहन उन्हें पढ़ाई के किसी और क्षेत्र में नहीं मिल पता है। कविता पाठ प्रतियोगिता में जीत और हार से ज्यादा हमारी तालियाँ इन बच्चों को भा जाती हैं।

तो एक बार आप सब भी सोचिये, क्या आप नहीं चाहेंगे कि केवल कविता पाठ के इतने सारे लाभ आपके बच्चों तक भी पहुँचे? उनसे कहें कि वे केवल कुछ नया सीखने के आनंद के लिए इसमें भाग लें। इस निपुणता के लिए उन्हें प्रोत्साहित कीजिए। मुझे तो इसमें केवल उनकी जीत ही जीत दिखाई देती है।

धन्यवाद!

हमारी शब्दावली

साऊथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला की कक्षा मध्यमा-१ के विद्यार्थियों द्वारा लिखित वाक्य जो उन्होंने इस साल सीखे हुए शब्दों से बनाए हैं। इस स्तर में बच्चे मात्राओं का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, तथा मात्रिक और अमात्रिक शब्दों का प्रयोग करते हुए हिन्दी लिखना सीख रहे हैं।

निकिता मजितिआ: मेरा भाई चुपचाप नहीं रह सकता। **श्रीनेश सेल्वराज:** विमान आकाश में उड़ता है।

नेहा जैन: मुझे खाने में पनीर और दाल मक्खनी पसंद है।

तेजस भारद्वाज: गंगा भारत की प्रमुख नदी है।

रौशनी रघुरमन: आकाश बहुत बड़ा और सुन्दर है। **दृश्या शाह:** सब मौसमों में सर्दियों का मौसम मुझे पसंद है।

अक्षय अरुलवाडीवेल: कवि कुर्सी पर बैठकर कविता लिखता है। **वरुनावी कृष्णा:** मैं एक बिटिया हूँ।

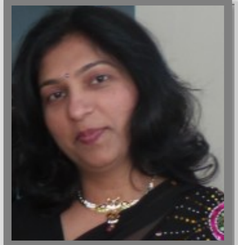

नमस्कार, मेरा नाम इंदु श्रीवास्तव है। साऊथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला में, मध्यमा-१ की शिक्षिका के रूप में यह मेरा पहला साल है।

हमारी कक्षा

इस साल की अर्ध वार्षिक परीक्षा की तैयारी तथा खेल-खेल में मात्रा सिखाने की कोशिश में मैंने बच्चों से यह प्रोजेक्ट/अभ्यास करवाया था। उनसे कहा कि 'आ' 'इ' 'ई' 'उ' 'ऊ' - मात्रा के कुछ शब्दों को चुनें। फिर उनका प्रयोग करके कोई कहानी/चित्र/खेल आदि बना कर लायें। प्रस्तुत है बच्चों द्वारा किए गये इस गृहकार्य की कुछ झलकियाँ...

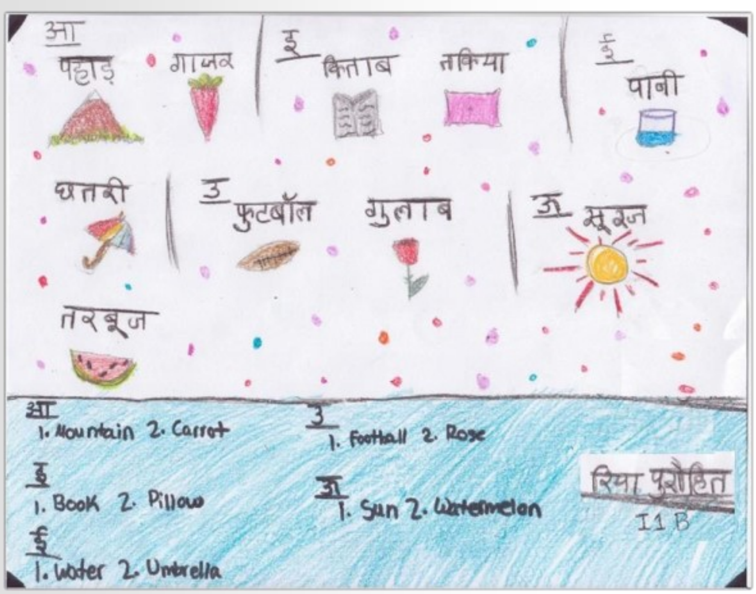

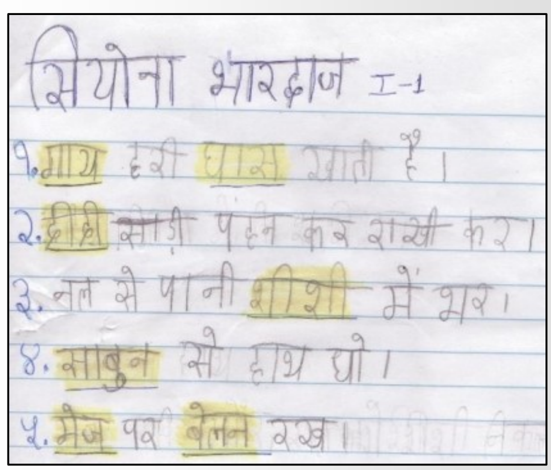

Hindi Matra Word Search (हिंदी मात्रा शब्द खोज)

By: Samyutha Srinivasan Class: I-1 Teacher: Indu Shrivatsava

गि	ल	ह	री	ऊ	म	तु	के	यू	तु	क	र
न	ज	का	ह	ऊ	या	री	क	ज	ड़	ए	का
चू	ड़ी	क	म	कि	स	हि	र	हा	न	ऊ	र
गु	धु	खा	श	का	द	न	प	न	नी	म	स
न	म	मि	ज	या	हि	बि	का	ज	न	री	हि
का	श	ज	प	श	ज	स	ज	खा	स	ड़ी	र
का	मा	रु	मा	ल	बॉ	ट	फु	ली	ज	या	म
प	खा	री	स	ट	का	ऊ	बि	ज	प	खा	क

1. Starts with R and ends with S in English - Sun dried
2. What causes to make an electric bulb light
3. Is brown and eats nuts
4. What you blow into sometimes
5. May be poisonous
6. India uses these
7. Everyone has heard at least 1 or once from their grandparents
8. Girls and Woman wear these at festivals
9. Where they make principles and rules
10. Snow comes on it sometimes
11. Is the same thing in Hindi

Answers:

1. किशमिश
2. बिजली
3. गिलहरी
4. रुमाल
5. मकड़ी
6. रुपया
7. कहानी
8. चूड़ी
9. सरकार
10. पहाड़
11. फुटबॉल

Arjun Tummishetti
I1B

मेरे माता पिता को चाय बहुत पसंद है।
मुझे मिठाई बहुत पसंद है।
हम पनीर की रोटी खाते हैं।
हम दुकान पर आलू खरीदते हैं।

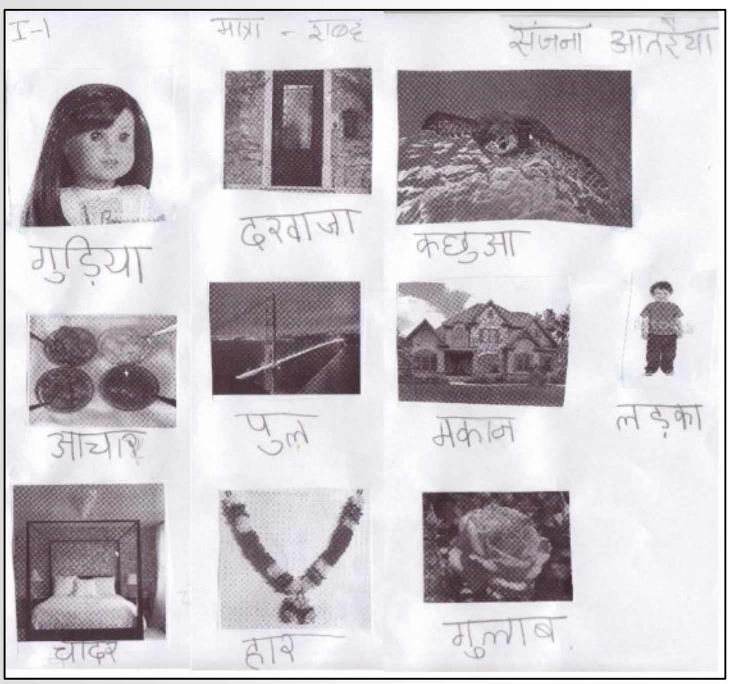

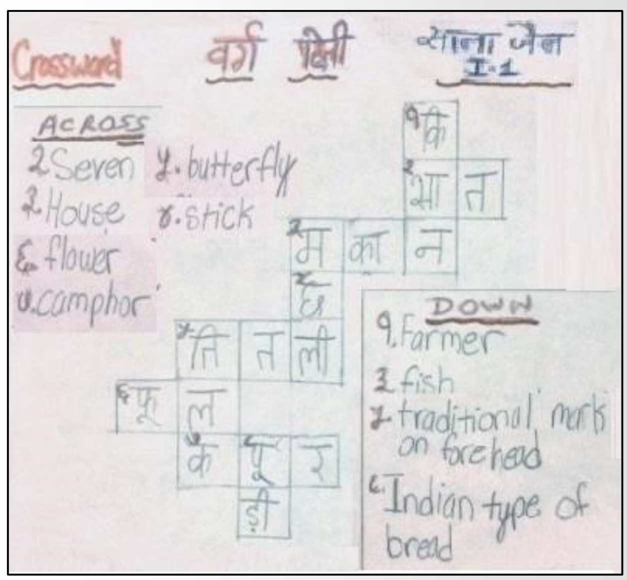

मेरा नाम प्रियंका दिलिप है। मैंने ६ वर्ष भारत में पढ़ाई पूर्ण करी है, जिसके बाद मैं यू० एस०ए० आई हूँ। मैं अब हिंदी यू० एस० ए० में वॉलंटीयर करती हूँ।

गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, का के लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपणे, गोबिंद दियो मिलाय।

कबीरदास के इस दोहे से हमें गुरू के महत्त्व का पूर्ण ज्ञात होता है। कबीरदास का कहना है कि अगर गुरु और भगवान दोनों हमारे सामने खड़े हैं, तो हमें सबसे पहले गुरु का नमन करना चाहिए क्योंकि उन्होंने ही हमें भगवान से परिचित कराया है।

अध्यापकगण हमारे समाज की नींव हैं। हमारी उन्नति और उज्ज्वल एवं सुनहरे भविष्य में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

शिक्षक विषय ज्ञान के साथ, हमारा चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण भी करते हैं ताकि आगे जाकर हम पूरी ईमानदारी और लगन से एक समृद्ध समाज का निर्माण कर सकें।

अध्यापकों के निरंतर प्रोत्साहन एवं अनुशासन से छात्रगण प्रगति के पथ पर अग्रसर हो जाते हैं। देश के विकास और निर्माण हेतु शिक्षक का योगदान सर्वोपरि है।

अतः हमारा कर्तव्य है कि हम अपने शिक्षकों का सम्मान और उनकी आज्ञा का सदैव पालन करें।

चौदहवें हिन्दी महोत्सव पर
हिन्दी यू.एस.ए. को हार्दिक शुभकामनाएँ
SAI CPA Services
SAI CPA SERVICES
We Specialize In
• Accounting & Bookkeeping
• Sales Tax & Payroll tax
• Business startup services
• Income Tax Preparation for Individual & Business
• IRS problems & Representations
• Payroll Services
• Developing & Implementing Business models
• Non-profit Taxes & 501C(3) approvals
• Financial Statement preparation & Attestation
Ajay Kumar, CPA
5 Villa Farms Cir, Monroe Township, NJ 08831
Phone: 908-380-6876
Fax: 908-368-8638
akumar@saicpaservices.com
www.saicpaservices.com

सेठ जी और तोते

रुचित पालरेचा

नमस्ते, मेरा नाम रुचित पालरेचा है और मैं ओल्ड ब्रिज के हाई स्कूल में पढ़ रहा हूँ। मैं ईस्ट ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला से २०१४ में स्नातक हुआ। मुझे चित्रकला और खासकर हास्य चित्रकला में बहुत रुचि है। इसके अलावा मुझे हिन्दी में छोटी-छोटी कहानियाँ पढ़ने और लिखने में बहुत दिलचस्पी है।

दृश्य १

पात्र: दुकानदार, सेठजी, २ तोते

(जब सेठ जी बाज़ार से सब्जी खरीद कर बाहर आ रहे थे तब दुकानदार सेठ जी को कहता है)

दुकानदार: सेठजी तोते खरीद लो भाई तोते खरीद लो।

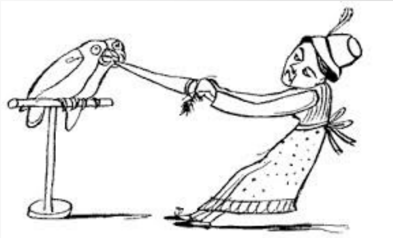

सेठ जी: अरे ये तोते तो बहुत सुन्दर हैं। कितने के दिए भाई ये तोते?

दुकानदार: ये पहला तोता पचास रुपये का है और दूसरा सौ रुपये का है।

सेठ जी: दोनों तोते एक जैसे हैं फिर दाम अलग-अलग क्यों?

दुकानदार: अच्छा सेठजी आप एक तोता सौ रुपए में ले जाएँ और दूसरा मैं आपको पच्चीस में दे देता हूँ। आपको घर जाकर समझ आ जाएगा कि इनके दाम अलग-अलग क्यों हैं?

सेठ जी: ठीक है यह लो एक सौ पच्चीस रुपए।

दुकानदार: शुक्रिया सेठजी।

(और सेठ जी तोते लेकर घर की तरफ चल पड़े)

दृश्य २

पात्र: सेठजी, सेठानीजी, २ तोते

(सेठ जी बाज़ार से घर आते हैं)

सेठ जी: अरे सुनती हो जी मैं बाज़ार से सब्ज़ी खरीद कर घर आ गया हूँ। तुमने जो भी सब्ज़ी मंगाई थी वह मैं सब ले आया हूँ।

सेठानी जी: अच्छा तो फिर मुझे आप सब्जियाँ दे दो ताकि मैं खाना बना लूँ।

सेठानी जी: अरे ये आप बाज़ार से सब्जी के अलावा और क्या ले आये हो?

सेठ जी: जब मैं बाज़ार में सब्ज़ी खरीद रहा था तब नुक्कड़ की दुकान पर एक दुकानदार तोते बेच रहा था। मैंने उससे दो तोते खरीदे है; एक पचास का है और दूसरा सौ का है पर मुझे दोनों एक सौ पच्चीस में मिल गये।

सेठानी जी: ये दोनों तोते एक जैसे दिखते हैं, फिर इनके दाम अलग क्यों है?

सेठ जी: मुझे भी आश्चर्य हुआ कि इनके दाम अलग क्यों हैं? तब दुकानदार ने बताया कि घर जाकर पता चलेगा कि इनके दाम अलग क्यों हैं?

(तब तोते बोलने लगे)

पहला तोता: नमस्ते सेठजी। नमस्ते सेठानी जी। आप कैसे हो? मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?

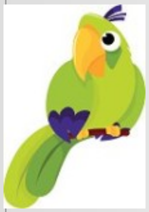

दूसरा तोता: ओय सेठ क्या कर रहा है? मेरे सामने घूर के क्यों देख रहा है? मेरा समय क्यों बर्बाद कर रहा है? जाओ अपना रास्ता नापो।

(तब सेठ जी और सेठानी जी को पता चला कि दोनों तोतों के दाम अलग क्यों हैं? सेठ जी और सेठानी जी की हँसी नहीं रुकी)

रेखा छोटी हो गई

माता-पिता और शिक्षक का अपने बच्चों को प्रेरणादायक एवं संस्कारों की नींव बने ऐसी कहानियाँ सुनाने का प्रयास रहता है। उनमें से यह कहानी मैं उनसे अधिकतर अपनी कक्षा के बच्चों को तथा माँ की भूमिका निभाते हुए अपने बच्चों को सुनाती रहती हूँ। इस कहानी की साधारण सी भाषा, सरल सा उदाहरण उनकी समझ में भी आता है और प्रभाविक भी है। –– *इंदु श्रीवास्तव, मध्यमा-१ शिक्षिका, साऊथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला*

एक बार की बात है। एक स्कूल में कक्षा के गुरुजी ने बोर्ड पर एक रेखा खींच दी और अपने विद्यार्थियों से कहा - "इसे बिना मिटाए ही छोटा करके दिखाओ।"

एक विद्यार्थी प्रश्न का मर्म समझा नहीं और रेखा को मिटा कर छोटी करने लगा। इस पर शिक्षक ने उसे रोका और प्रश्न फिर दोहराया - "इसे बिना मिटाए ही छोटा करके दिखाओ।"

थोड़ी देर बाद एक और विद्यार्थी ने उठ कर उस रेखा के पास ही एक बड़ी रेखा खींच दी। गुरुजी की खिंची रेखा अपने आप ही छोटी हो गई। बिना मिटाए ही पहली रेखा छोटी हो गई।

गुरुजी ने बालक की बहुत सराहना की और कहा - "दुनिया में बड़ा बनने के लिए किसी को मिटाने या छोटा दिखाने की नहीं अपितु स्वयं के बेहतर और रचनात्मक प्रयासों की आवश्यकता होती है। अपने बल पर बड़े काम करके ही बड़प्पन पाया जा सकता है। इसी प्रकार से स्थाई सफलता, आनंद और सम्मान पाया जा सकता है।"

अमेरिका और भारत

मध्यमा-३, लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला

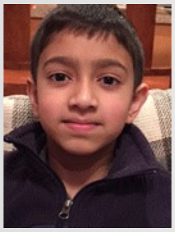
पराज गोयल

भारत और अमेरिका में बहुत समानताएँ हैं, लेकिन उन दोनों के बीच महत्वपूर्ण फर्क भी है। दोनों लोकतांत्रिक देश हैं, और सरकार के प्रतिनिधि लोगों द्वारा चुने जाते हैं। दोनों देश ब्रिटिश शासन के अधीन थे। अमेरिका १७७६ में आज़ाद हुआ और भारत १९४७ में। दोनों देश बहुत बड़े हैं, अमेरिका का स्थल भारत से तीन गुना बड़ा है, लेकिन भारत में अमेरिका से तीन गुना अधिक आबादी है। दोनों के बीच सबसे बड़ा अंतर है धर्म। खाद्य, त्योहार, भाषा, खेल और पर्यटन में भी काफी फर्क हैं। आगे पढ़कर इन के बारे में जानिये।

अर्नव अग्रवाल

१५ अगस्त १९४७ और ४ जुलाई १७७६, दो बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख हैं। वे भारत और अमेरिका के लिए स्वतंत्रता की तारीख हैं। थॉमस जेफरसन और तेरह कालोनियों के प्रतिनिधियों द्वारा "स्वतंत्रता की घोषणा" पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद अमेरिका ने आधिकारिक तौर पर स्वतंत्रता ली। महात्मा गांधी ने शांति से अंग्रेजों के खिलाफ विरोध किया और भारत ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की। भारत की स्वतंत्रता "१९४७ के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम" पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद मिली। अमेरिका और भारत की स्वतंत्रता गर्व और साहस लाई।

सिया आनंद

अमेरिका में हम अंग्रेजी और कई अन्य भाषाओं में बोलते हैं। लोग अलग-अलग देशों से अमेरिका आते हैं। वे इटालियन, फ्रेंच, और फिलिपिनो जैसी भाषाएँ अमेरिका में लाते हैं। अमेरिका में मुख्य भाषाएँ स्पेनिश और अंग्रेजी हैं। भारत में मुख्य भाषाएँ हिन्दी और अंग्रेजी हैं। पंजाबी, तेलुगू, उर्दू, बंगाली, कन्नड़, तमिल, और मराठी भी भारत में बोली जाती हैं। अमेरिका में, हम हिन्दी यू.एस.ए. स्कूल में हिन्दी बोलना सीखते हैं।

आयुष शास्त्री

ताज महल बहुत ही सुन्दर इमारत है। यह दुनिया का सातवां चमत्कार माना गया है। शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज़ के लिए बनवाया था। ताज महल आगरा भारत में है। 'हरमंदिर साहिब अमृतसर', पंजाब, भारत में है। गुरु अर्जुन ने हरमंदिर साहिब बनवाया था। लोग इसे "गोल्डेन टेम्पल" के नाम से जानते हैं। 'स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी' एक पुरानी और प्रसिद्ध मूर्ति है। यह न्यूयॉर्क शहर में स्थित है। फ्रांस ने अमेरिका को एक उपहार में दिया था। वाशिंगटन डी.सी. बहुत ही खूबसूरत जगह है और यह अमेरिका की राजधानी है। वाइट हाउस में राष्ट्रपति ओबामा रहते हैं। लिंकन और जेफ़र्सन मेमोरियल भी डी.सी. में है। डी.सी. एक ऐतिहासिक जगह है।

नंदिनी स्वामी

अमेरिकन और भारतीय खाने की, क्या करें बात,
दोनों ही लाजबाब, बढ़ाते दावतों की शान!
पिज़्ज़ा, केक, फ्रेंच फ्राइज, कुकी की बारात,
अमेरिकन जन्मदिन पर, खाते हैं ऐसे पकवान!
फीका मीठा ये खाना मन को करता शांत,
फिर भी भारतीय खाने की अलग है पहचान!
डोसा, गोल-गप्पे, छोले भटूरे, चीले की दुकान,
भारतीय शादी में मिलते हैं ऐसे मस्त तीखे पकवान!
दोनों ही देशों के व्यंजनों की हो गयी है बात,
चयन करो मनपसंद और खाओ अंत में पान!

हमारा मनपसंद भारतीय खाना

मध्यमा-२, लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला

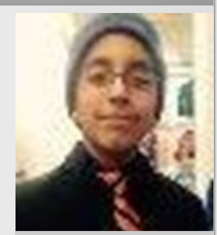

ग्रिषम वज़िरनि

शाकाहारी होने के कारण मुझे भारतीय खाना बहुत पसंद है। पनीर पकौड़ों में जो तले हुए पनीर का मज़ा है उसे कोई नहीं हरा सकता। पनीर का स्वाद गरम-गरम पकौड़ों में सबसे अद्भुत स्वाद देता है। मुझे डोसा भी बहुत पसंद है। मैसूर मसला डोसा मुझे तीखेपन के कारण बहुत अच्छा लगता है। मेरी मनपसंद मिठाई गुलाब जामुन और सिंगर की मिठाई है। गरम मिठाई जब मुँह में गल जाती है तो किसको धरती पर स्वर्ग नहीं मिलता।

दिव्या समेता

पानी-पूरी मेरा सबसे प्रिय भारतीय खाना है। वह बाहर से कड़क और अन्दर से मसालेदार होती है। उसके एक ही निवाले में तीखा और मीठा स्वाद आता है। इसलिए वह मुझे अच्छा लगता है।

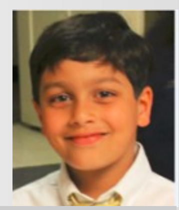

आकाश नायक

मेरा मनपसंद खाना पनीर है। मुझे पनीर अच्छा लगता है क्योंकि यह cheese के जैसा है। पनीर से जब पनीर मखानी सब्जी बनती है, वह मुझे अच्छी लगती है। पनीर की सब्जी मुझे रोटी के साथ अच्छी लगती है। चावल के साथ भी खा लेता हूँ।

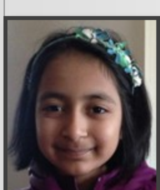

मुझे भारत क्यों अच्छा लगता है?

समेरा वज़िरानि - प्रथमा २, लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला

पाँच कारणों से मुझे भारत का भ्रमण अच्छा लगता है। मुझे भारत की गर्मी अच्छी लगती है। भारत में सर्दी अमेरिका की सर्दी जैसी नहीं होती। मेरा बड़ा परिवार मुंबई और बंगलोर में है। इस कारण भी भारत में बहुत मज़ा आता है। भारत में बहुत सुंदर मंदिर हैं जिनमें बड़े गणपति बप्पा और दूसरे भगवान हैं। मुझे देशी कपड़ों की खरीददारी करना भी अच्छा लगता है। भारतीय खाना भी बहुत चटपटा और मज़ेदार होता है। भारतीय होने के कारण ही भारत अच्छा लगता है।

हमें भारत क्यों अच्छा लगता है?

लॉरेंसविल पाठशाला – प्रथमा १, प्रथमा २, मध्यमा १

ओम शर्मा

मुझको भारत बहुत पसन्द है। वैसे तो बहुत सारे कारण हैं पर कुछ खास नीचे लिखे हैं। भारत में छत पर जा सकते हैं। वहाँ पर बहुत सारे लोग हैं। कार में आगे बैठ सकते हैं, और तो और बेल्ट भी नहीं लगाना होता है। वहाँ सब लोग हमें बहुत प्यार करते हैं। वहाँ पर तीन पहियों वाले आटो भी चलते हैं, उनमें दरवाजे भी नहीं होते हैं, उनमें बैठने में बड़ा मजा आता है। मुझे भारत की बहुत याद आती है। - प्रथमा १

भारत मुझे इसलिये पसंद है क्योंकि भारत की संस्कृति और हिन्दी बहुत अलग है। भारत में बहुत सारी भाषाएँ हैं और क्योंकि भारत की इतनी सारी चीजें हैं जिनका अमेरिका में हमें पता तक नहीं और जो हमें यहाँ चाहिये। भारत मुझे इतना पसंद है कि हम अपने घर में अमेरिका कि बात नहीं करते। - प्रथमा १

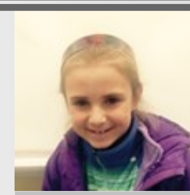

नेओमी लैगस

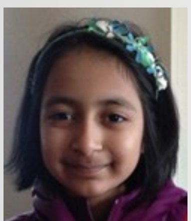

समेरा वज़िरानि

पाँच कारण से मुझे भारत का भ्रमण अच्छा लगता है। मुझे भारत की गर्मी अच्छी लगती है। भारत में सर्दी अमेरिका की सर्दी जैसी नहीं होती। मेरा बड़ा परिवार मुंबई और बंगलोर में है। इस कारण भी भारत में बहुत मज़ा आता है। भारत में बहुत सुंदर मंदिर हैं जिनमें बड़े गणपति बप्पा और दूसरे भगवान हैं। मुझे देसी कपड़ों की खरीददारी करनी भी अच्छी लगती है। भारतीय खाना भी बहुत चटपटा और मज़ेदार होता है। भारतीय होने के कारण ही भारत अच्छा लगता है। - प्रथमा २

दिसंबर के महीने में मैं भारत गयी थी। मैं पुणे शहर गयी थी। मेरी मौसी की शादी थी और मैंने बहुत मज़े किए। पुणे बहुत सुन्दर शहर है। मैने बहुत स्वादिष्ट पकवान खाये, जैसे मिठाई, चाट, और बहुत कुछ। पुणे शहर में लोग ज़्यादातर ऑटो या मोटर साइकिल चलाते हैं। पुणे शहर के लोग मराठी में बात करते हैं। कुछ लोग हिन्दी भी बोलते हैं। मेरी मौसी और मौसाजी भी वहाँ रहते हैं। सबसे ज़्यादा मज़ा मेरी नानी के घर आया जो मुझे बहुत प्यार करती हैं। पुणे के पास लोनावला नाम की जगह है, हम वहाँ घूमने गये थे। पुणे में बहुत सारे माल्स भी हैं, वहाँ पर हमने खूब खरीददारी भी की। मुझे भारत देश बहुत अच्छा लगता है। - मध्यमा १

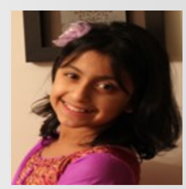

ऋचा शर्मा

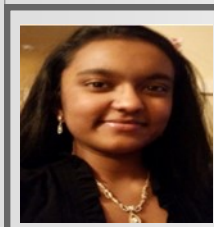

अमृता श्रीदर

जब मैं भारत गई थी, तब मैंने चेन्नई शहर का दौरा किया। चेन्नई, तमिलनाडु की राजधानी है। मेरे दादा दादी और मौसी भी चेन्नई में रहते हैं। चेन्नई में लोग तमिल भाषा बोलते हैं। चेन्नई में मेरे मन-पसंद खाना इडली और दोसा हैं। चेन्नई एक तटीय शहर है और एक लंबे समुद्र तट कहा जाता है: “मरीना बीच”। मेरे दादा-दादी मुझे कई मंदिरों को ले गए। चेन्नई मैं कई पुरानी और प्रसिद्ध मंदिर हैं। चेन्नई शहर मुझे बहुत पसंद आया।

मेरी हिंदी शिक्षिका

मेरा नाम अबोली महाजन है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला में मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे किताबें पढ़ना और चित्र बनाने का शौक है। मैं बड़ी होकर शिक्षिका बनना चाहती हूँ।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः।

Salutations to that "Guru", who is the creator, sustainer, and destroyer, and who indeed is the limitless Brahma.

गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश का प्रतिनिधि कहा जाता है। "गु" का अर्थ है अंधकार और "रु" का अर्थ है उजाला। गुरु ज्ञान का दीपक जलाकर अज्ञान के अंधकार को दूर करते है।

हमारी ईस्ट ब्रंस्विक की अध्यापिकाएँ हमें बहुत लगन से और प्यार से हिन्दी सिखाती हैं। होली हो या दिवाली, वे हमेशा हमारे लिए मिठाइयाँ लाती हैं। इसलिए मुझे हिन्दी सीखना बहुत अच्छा लगता है।

हमारे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए भी वे बहुत मेहनत करती हैं। हमारी मध्यावधि और वार्षिक परीक्षा के लिए वे हमें पढ़ाई में भी मार्गदर्शन करती हैं। अगर हम से गलती हो जाये, तो भी वे हमें उसे सुधारने की राह बताती हैं। इसीलिए कहते हैं कि माता-पिता जीवन देते हैं, लेकिन जीने की कला शिक्षक ही सिखाते हैं।

इन सबको हमारा मनःपूर्वक धन्यवाद!

मेरी हिन्दी पाठशाला

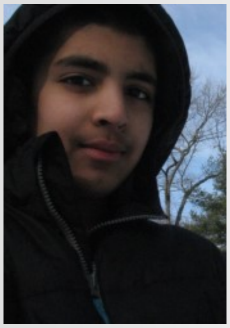

मेरा नाम देवर्षि मलिक है। मैं बारह साल का हूँ। मैं ईस्ट ब्रंस्विक की हिन्दी पाठशाला में पिछले ६ वर्षों से जा रहा हूँ।

मैं इस वर्ष मध्यमा-३ कक्षा में हूँ और व्याकरण सीख रहा हूँ। मेरी कक्षा में मुझसे कुछ बड़े और कुछ छोटे बच्चे हैं। मेरी कक्षा में दो शिक्षिकाएँ हैं; वंदना आंटी और सारिका आंटी। जब वंदना आंटी पढ़ाती हैं, तब सारिका आंटी हमारा गृहकार्य देखती हैं। इस साल मैंने बहुत कुछ सीखा है। इस वर्ष हम वाक्यों को बनाना और उसे बोलना सीख रहे हैं, हम "लिंग" और "वचन" के नियम भी सीख रहे हैं। मैं अब छोटे- छोटे वाक्य बनाने की कोशिश करता हूँ। मेरी शिक्षिका हमेशा मुझे अच्छी तरह से समझाती हैं। कक्षा के आखिर में वंदना आंटी हमें गृहकार्य देती हैं और हर शुक्रवार हम अपना गृहकार्य कर के लाते हैं। मैं हर हफ्ते हिन्दी कक्षा में कुछ न कुछ नया सीखता हूँ।

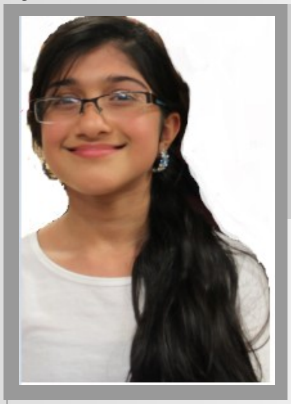

हिन्दी महोत्सव की शिक्षा

मेरा नाम मनीषा पार्थसारथी है। मैं ईस्ट ब्रुंस्विक की हिन्दी पाठशाला की विद्यार्थी हूँ। मुझे किताबें ,संगीत ,मेरे मित्र और मेरे परिवार में दिलचस्पी है। इतिहास और साहित्य मेरे मनपसंद विषय हैं। मैं हमेशा विचारशील ,ईमानदार ,और ज़िम्मेदार रहने की कोशिश करती हूँ।

हिन्दी पढ़ाई और गृहकार्य तो हर शुक्रवार की दिनचर्या का एक अंग है। लेकिन फागुन के महीने में हिन्दी पाठशाला के माहौल में एक अलग सी उमंग और ख़ुशी फैली हुई रहती है। सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ गहरी सोच और वाद-विवाद में रहते हैं कि इस बार ऐसा क्या किया जाए, जिससे अपनी कक्षा के बच्चों को एक शिक्षात्मक भारतीय अनुभव मिले। सभी विद्यार्थी और उनके माता-पिता अपनी कक्षा के महोत्सव कार्यक्रम के बारे में जानने के लिए उत्सुकता से इंतज़ार करते हैं। क्या इस बार जोश भरा नृत्य होगा, या मधुर गीत गाने का अवसर मिलेगा या फिर कोई प्रतिभाशाली नाटक में हम भाग लेंगे?

हिन्दी महोत्सव से जुड़ा समय पूरे साल में मेरा सबसे मनपसंद समय है। मेरी बहुत सारी मनपसंद यादें हिन्दी महोत्सव से ही जुड़ी हुई हैं। दो तीन महीनों की यह एक ऐसी अद्भुत यात्रा है जिसके दौरान हमें थिएटर, नृत्य, संगीत, और दोस्ती में भी शिक्षण मिलता है, और दो महीनों के परिश्रम के बाद, जब हमारे कार्यक्रम के अंत में हमारे माता-पिता और सभी अंकल-आंटी जोर से तालियाँ बजाते हैं और हमारी शिक्षिकाओं के चेहरे पर गर्व की चमक दिखाई देती है, तब हमें जो गर्व की भावना होती है वह सबसे बिलकुल निराली होती है।

हिन्दी महोत्सव के कारण हम सब ने भारतीय संस्कृति के बारे में बहुत सीखा है और यह जान पाये हैं कि हमारा प्रिय भारत पूरे विश्व में इतना अनोखा क्यों है? जब हम भारतीय इतिहास के प्रभावशाली व्यक्तियों के अभिनय करते हैं, या भारत के किसी भी राज्य का नृत्य करते हैं, तब हमें अपनी और अपने परिवार की जड़ें और उनसे सम्बन्धित इतिहास समझ में आता है।

हम अपने दोस्तों और शिक्षक शिक्षिकाओं को भी अच्छी तरह पहचानने लगते हैं। नए रिश्ते बनते हैं। हम एक दूसरे की ताकत, कमज़ोरी, और सामर्थ्य को पहचानने लगते हैं जिसका उपयोग हम आने वाले सालों में भी कर सकते हैं। अपने मित्रों के साथ खड़े होने से, रंगमंच का डर भी मिट जाता है, और हमें यह एहसास होता है कि एक दूसरे की मदद से हम कुछ भी हासिल कर सकते हैं।

हिन्दी महोत्सव के द्वारा मुझे, मैं कौन हूँ और क्यों ऐसी हूँ, इसके बारे में गहरा ज्ञान मिला है। इसलिए मेरा कहना यह है कि हिन्दी महोत्सव का अनुभव एक भारत यात्रा के अनुभव से कुछ कम नहीं है।

एक शिक्षक जो शिक्षण से प्रेम करता है वह अपने छात्रों को ज्ञान से प्रेम करना सिखाता है.

हमारी हिन्दी की अध्यापिका

मेरा नाम प्रियल गर्ग है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला की उच्चस्तर-१ की छात्रा हूँ। मुझे हर शुक्रवार को हिन्दी स्कूल जाने का इन्तजार रहता है। यह वर्ष हम गुरुजनों को समर्पित कर रहे हैं। यह एक बहुत ही गर्व और ख़ुशी की बात है। मैं अपनी हिन्दी की अध्यापिका को बहुत ही पसंद करती हूँ और उनके लिए मैंने अपनी माताजी की सहायता से एक छोटी सी कविता लिखी है।

हमेशा मुस्कराती हुई कक्षा में आती
हमको नया कुछ रोज सिखाती

हम कभी बातें करते
या होमवर्क नहीं पूरा करते
लेकिन कभी नहीं वे हमें डाँटती
प्यार से ही हमेशा समझाती

उनसे कभी न हमें डर लगता
हमेशा कक्षा में जाने का मन करता
हर सप्ताह हमें वो शब्द अभ्यास करवाती
इससे हमारी हिन्दी की नींव मजबूत हो जाती

हमारी हिन्दी की अध्यापिका बहुत ही गुणवान है
हिन्दी से तो उनका बहुत ही लगाव है
वे हिन्दी नाटक लिखती है और
बच्चों को सीखा कर महोत्सव में प्रदर्शित करती है

हिन्दी पाठशाला और
उनकी संगत में रहकर हम खुश हो रहे हैं
भाषा और संस्कार
धीरे-धीरे बहुत कुछ सीख रहे हैं

होली की कहानी

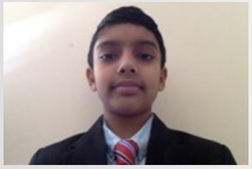

शोभित शिवांक

होली भारत का एक महत्वपूर्ण पर्व है। इस दिन लोग एक दूसरे को रंग और अबीर गुलाल लगते हैं। होली के एक दिन पहले होलिका जलाई जाती है। होलिका जलाने के पीछे एक कथा है। राजा हिरण्यकश्यप भगवान को नहीं मानते थे। उनका बेटा प्रहलाद विष्णु भक्त था। इसलिये राजा ने अपनी बहन होलिका को प्रहलाद के साथ आग में बैठने को कहा। होलिका को आग में न जलने का वरदान था। फिर भी भगवान विष्णु की कृपा से आग में होलिका जल गई और प्रहलाद बच गया। यह बुराई पर अच्छाई की जीत है। होली के दिन लोग भेद भाव भूलकर एक दूसरे से गले मिलते हैं। घरों में तरह-तरह की मिठाइयाँ और पकवान बनाते हैं। बच्चे बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं। होली एक रंग भरा, मस्ती भरा पर्व है, जो सब लोग मिल जुल कर मनाते हैं।

क्रिश सक्सेना

कबीर सक्सेना

क्रिश और कबीर सक्सेना मोनरो हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-१ और मध्यमा-३ के छात्र हैं। कृष ८ साल के एवं कबीर ११ साल के हैं। क्रिश को लेगो से खेलने का बहुत शौक है। कबीर बास्केटबॉल खेलना पसंद करते हैं।

होली रंगों का त्योहार है। इसे फागुन के महीने में मनाया जाता है। हर प्रांत में होली अलग-अलग तरीके से मनाई जाती है। होली दो दिन का त्योहार है। पहले दिन रात में होलिका जलाई जाती है। इसके पीछे यह कहानी है कि जिस तरह होलिका आग में जल कर नष्ट हो गयी उसी तरह बुराई का अंत हो और प्रह्लाद की तरह सच्चाई और अच्छाई आग से भी नष्ट न होकर विजयी हो।

दूसरे दिन रंग और गुलाल से सभी लोग मिल कर होली खेलते हैं। मेरी माँ बहुत तरीके की मिठाई और नमकीन व्यंजन बनाती हैं। हम पूरा परिवार साथ मिलकर गुजिया बनाते हैं। होली में ये मेरा प्रिय काम है। हमारे घर में कई परिवार इकट्ठे होकर होली जलाते हैं, और फिर गुलाल से खेलते हैं। उसके बाद तरह-तरह के पकवान खाते हैं। मुझे सबके साथ मिलकर होली मनाने में और सब लोगों को रंग लगाने में बहुत मज़ा आता है। होली मेरा प्रिय त्योहार है।

कबीर सक्सेना

अध्यापक

रिद्धी गुप्ता

अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है। भारत में गुरु का स्थान सबसे ऊपर माना जाता है। एक अध्यापक की तुलना हम सृष्टिकर्ता ब्रह्मा से भी कर सकते हैं। जैसे ब्रह्मा जी का काम संसार के सभी प्राणी और पदार्थ बनाना है, उसी प्रकार उन सब को संसार में योग्य बनाना एक अध्यापक का काम होता है। अतः गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश मानने के साथ ही परब्रह्म भी कहा गया है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरु साक्षात्परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

हिन्दी साहित्य में भी गुरु के प्रति श्रद्धा और आस्था को कवियों ने अपनी कविताओं में दिखाया है। कवि तुलसीदास जी ने तो गुरु को गोविंद से भी ऊपर ठहराया है।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताया॥

रिद्धी गुप्ता चेस्टरफील्ड हिन्दी पाठशाला मध्यमा-३

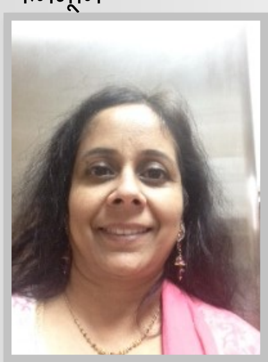

मेरी कक्षा के बच्चे

प्रतिभा निचकवड़े – शिक्षिका एडिसन हिन्दी पाठशाला – प्रथमा १

मेरी कक्षा के बच्चे। कितने प्यारे कितने सच्चे।।
हर शुक्रवार को हिन्दी पढ़ने आते। अ आ इ ई से नाता जोड़ते
मेरी कक्षा के बच्चे।
आम और अनार में अंतर पाते। स्वर और व्यंजन में गुल हो जाते॥
ज और झ में न अंतर पाते। वक्त और बात में गड़बड़ कर जाते।।
मेरी कक्षा के बच्चे।
संख्या तो है सीधे साधी। एक से बीस तक होती प्यारी न्यारी।।
आठ और नौ में होती अनबन। पर अठारह और उन्नीस एकदम नंबर वन।।
मेरी कक्षा के बच्चे।
रंग तो हमें आते सब। कविता में है हमें रस।।
शनिवार और रविवार याद हो जाते। अपना नाम खुद लिख पाते।।
मेरी कक्षा के बच्चे।
हिन्दी में इन्हें रहे रस। हिन्दी के बने दोस्त सब।।
मेरी यहाँ अभिलाषा। सीखे मन से हिन्दी भाषा।।
मेरी कक्षा के बच्चे।

साऊथ ब्रंस्विक – मध्यमा-२

मेरा नाम साधना जैन है। मैं पिछले नौ वर्षों से साऊथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला में मुख्य शिक्षिका के रूप में अपनी सेवा प्रदान कर रही हूँ। हिन्दी की ये नौ वर्षों की यात्रा बहुत ही अनुभव पूर्ण और सुहानी रही है। इस यात्रा के दौरान मुझे एक और परिवार हिन्दी यू.एस.ए. के रूप में मिला है। मुझे गर्व है कि मैं इस संस्था के साथ जुड़कर अपनी मातृभाषा को भावी पीढ़ी को सिखाने में सहायक बनी हूँ।

इस सत्र में मेरी कक्षा के मध्यमा-२ के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार की मिठाइयों के बारे में जब पढ़ा तो उन्होंने इस विषय पर बहुत ही उत्सुकता दिखाई। सभी विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी मनपसन्द मिठाई के बारे में कक्षा में चर्चा की। इसी चर्चा को विद्यार्थियों ने कागज पर उतारने का प्रयास किया। व्याकरण और वाक्य संरचना का पूरा ज्ञान न होने के बावजूद भी विद्यार्थियों ने इसे बहुत ही अच्छे से लिखा है। मुझे सभी विद्यार्थियों पर बहुत ही गर्व है।

कलाकंद नलिनी जैन

कलाकंद एक पकवान, जो दूध और छेने से बनाया जाता है। कलाकंद भारत की एक लोकप्रिय मिठाई है। इसे भारतीय त्योहार जैसे - होली, दिवाली और ईद पर विशेष रूप से बनाया जाता है। कलाकंद मुझे भी बहुत पसंद है।

लड्डू श्रेय पारीख

मेरी मनपसंद मिठाई लड्डू है। लड्डू बेसन और शक्कर से बनता है। मेरी नानी अच्छे लड्डू बनाती है। गणेश भगवान का मनपसंद भोजन लड्डू है।

रसमलाई

तनीशा जैन

रसमलाई मेरी मनपसन्द मिठाई है।
मेरी मम्मी घर मे रसमलाई बनाती है।
रसमलाई बंगाल की मिठाई है।
रसमलाई दूध और पनीर से बनती है।

नारियल बर्फी

कृति त्यागी

मेरी मनपसंद मिठाई नारियल बर्फी है।
हमारे घर मे त्योहार के दिन नारियल बर्फी खाते है।
ये मिठाई नारियल और दूध से बनाते है।

खीर

अरेह्री

खीर दूध, चीनी और चावल से बनती है।
खीर ज्यादातर प्रसाद के लिय बनाई जाती है।
इसको चम्मच से खाया जाता है।
खीर मुझे बहुत पसंद है।

गाजर का हलवा

प्रणेय हिपारा

गाजर का हलवा उत्तर भारत और पाकिस्तान का व्यंजन है।
गाजर का हलवा गाजर, दूध घी, शक्कर और मेवे से बनता है।
इसे बड़े और बच्चे सभी बहुत पसंद करते हैं।

काजु कतली प्रीशा निशार

मुझे काजु कतली पसंद है। मुझे भारत की काजु कतली सबसे अच्छी लगती है। काजु कतली काजु और शक्कर से बनती है। काजु कतली का आकार समचतुर्भुज है।

पेड़ा दिया शाह

सफेद रंग का पेड़ा मेरा मनपसंद है।
पेड़ा मावा से बनता है।
कभी-कभी कुछलोग पेड़े में मेवे डालते हैं।
पेड़ा भारत मे प्रसिद्ध है।

सोनपापड़ी त्रिषा रेड्डी

सोनपापड़ी एक बहुत प्रसिद्ध मिठाई है। दिवाली में सोनपापड़ी बाटी जाती है। इसको बनाना बहुत ही मुश्किल है। सोनपापड़ी बेसन, मैदा, घी और चीनी से बनती है।

आमरस शैली सिंघवी

आमरस आम और दुध से बनता है। मुझे आमरस पुड़ी के साथ खाना अच्छा लगता है। इसे बनाना बहुत आसान है।

गुलाब जामुन आर्या किणीकर

मुझे मिठाई में गुलाब जामुन बहोत पसंद है। मेरी मम्मी बहोत अच्छे गुलाब जामुन बनाती है। गुलाब जामुन मैदा और मावे से बनते है।

जलेबी धनन्जय

मेरी मनपसंद मिठाई जलेबी है। जलेबी नारंगी रंग की होती है। जलेबी शक्कर और मैदे से बनती है। जलेबी बहुत मीठी और रसभरी होती है।

लस्सी मेहेक दास

मुझे लस्सी बहुत पसंद है। जब मेरे घर मेहमान आते है तब मेरी मम्मी लस्सी बनाती है। पंजाब मे लस्सी प्रसिद्ध है।

मेरा नाम साइशा भीमजीयानी है। मैं ९ वर्ष की हूँ। मैं वुडब्रूक एलीमेंट्री स्कूल में चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है और खेलों में सॉकर और तैराकी पसंद है। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-१ की विद्यार्थी हूँ।

दिवाली - साएशा भिमजीयानी

दिवाली का पर्व "रोशनी का त्योहार" के नाम से भी जाना जाता है।

पौराणिक कथा के अनुसार दीपावली के दिन राजा राम चौदह वर्ष के वनवास के बाद वापस अयोध्या लौटे थे। उनकी वापसी की खुशी मे सारे नागरिको ने अंधेरा दूर करने के लिए चारों ओर दीपक जलाकर उनका स्वागत किया था।

आजकल दिवाली मे हम नए कपड़े पहनकर दोस्तो के सथ मिठाई खाते हैं। दिवाली मे हमे उपहार भी मिलते हैं।

दिवाली मेरा सबसे चहीता त्योहार हैं।

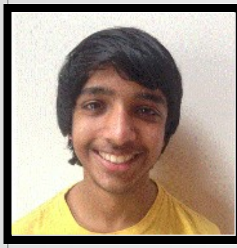

शिक्षक

शुभ जोशी

मध्यमा-३

चेस्टरफील्ड पाठशाला

"गुरु कुम्हार, शिष कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट
अंतर हाथ सहार देत, बाहर बाहय चोट"। अर्थात: गुरु कुम्हार के समान है व शिष्य घड़े के समान है जिस प्रकार कुम्हार घड़े की सुन्दरता को बनाए रखने के लिए उसे बाहर से चोट देता है किंतु भीतर से सहारा देता है ताकी वह टूट न जाए इसी प्रकार एक आदर्श अध्यापक अपने छात्रों को तराशता है और हीरे की तरह धारदार बनाता है। आदर्श अध्यापक के उचित उदाहरण मे डॉ॰ राधाकृष्णन का नाम अग्रणी है। एक आदर्श अध्यापक सैकड़ो गुणो का अनूठा मिश्रण होता है, जो की स्वावलंबी, स्वाध्यायी, अनुकूलनीय, करुणामय, समर्पित, सहयोगी, धैर्यशील, प्रेरणादायक आदि गुणो का संयोजन होता है।

आदर्श अध्यापक छात्रों को एकसमान दृष्टि से देखते हुए प्रत्येक विद्यार्थी की अपने ज्ञान के दीपक से अज्ञानता को दूर करता है। छात्रों में न केवल किताबी ज्ञान अपितु उन्हे जीवन भर के लिए अच्छे संस्कार देता है ताकि वे विकास कर सकें और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर एक सफल मनुष्य बन सके।

हमारी कलम से

होली

होली का त्योहार फागुन महीने की पूर्णमासी को मनाया जाता है। इसमें एक-दूसरे पर रंग डालते हैं, सूखा रंग मलते हैं। रंग पानी में घोलकर पिचकारी चलाने से बड़ा आनन्द आता है। सबके मन मस्त हो जाते हैं। लोग नाचते-गाते और गाना रचते हैं। आपस में गले मिलते हैं। कई बच्चे और कई बड़े भी, मिट्टी और, गुलाल उड़ाते हैं।

होली खुशी मनाने का पर्व है। इस दिन पुराना बैर भुलाना चाहिए। रूठे हुए को मनाना चाहिये।

इस समय चने के खेत लहलहा रहे होते हैं। होली के दिन चने की होला भी भूनते हैं। कहते हैं कि हिरण्यकश्यप की बहन होलिका थी। होली उस प्राचीन घटना की भी याद दिलाती है।

यश धवन
I-1

नमस्ते, मेरा नाम सानिका गोडबोले है। मैं मध्यमा दो मे पढ़ती हूँ। मैं दस साल की हूँ। मेरे पसंदीदा विषय गणित और कला हैं, पर सबसे पसंदीदा विषय हिन्दी है। मुझे हिन्दी पढ़ने मे बहुत मजा आता है।

क्या आप को पता हैं?

बाल पाइंट पेन

लेज़्लो बिरो नाम के हंगरी के निवासी ने १९३८ में बाल पाइंट पेन का आविष्कार किया था। इसमे एक विशेष प्रकार की स्याही भरी जाती थी जो बहुत जल्दी सूख जाती थी।

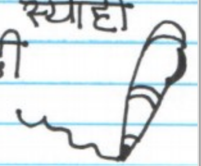

घड़ी

पहली यांत्रिक घड़ियों का निर्माण १३०० के आसपास हुआ। जेबी घड़ियों का आविष्कार १५०४ में जर्मनी में हुआ था।

पनडुब्बी

समुंदर में चलने वाली पहली पनडुब्बी का आविष्कार सन १९०० में जॉन हॉलैंड ने किया था। यह लंबे समय तक पानी के भीतर रह सकती थी और पानी के ऊपर भी तैर सकती थी।

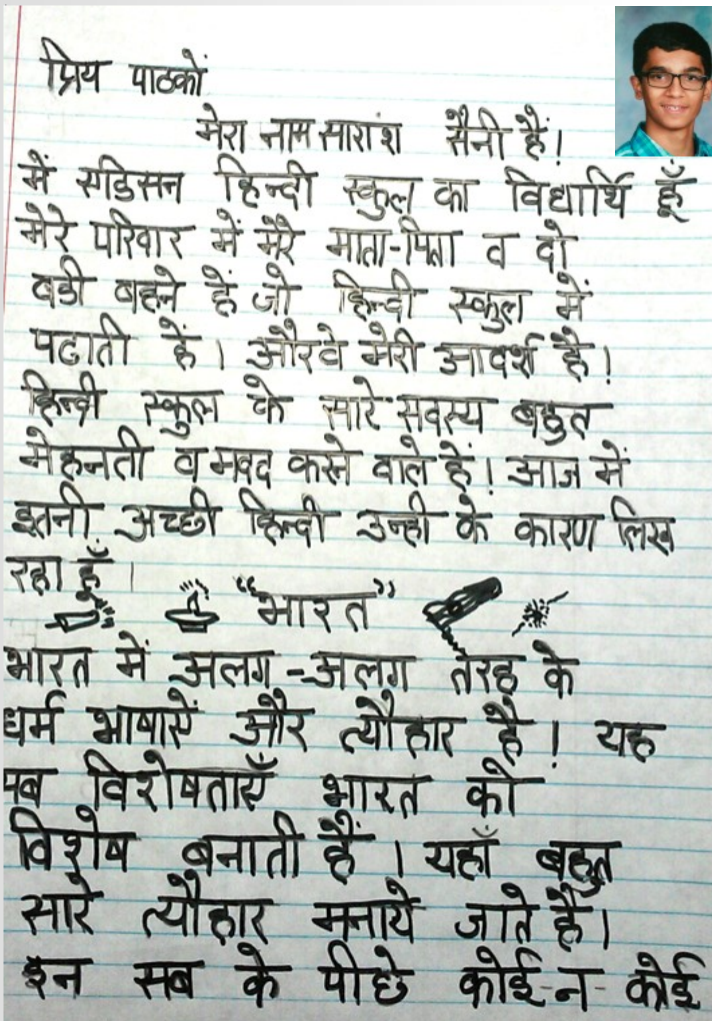

प्रिय पाठकों
मेरा नाम सारांश सैनी हैं।
मैं एडिसन हिन्दी स्कुल का विद्यार्थि हूँ
मेरे परिवार में मेरे माता-पिता व दो
बडी बहनें हैं जो हिन्दी स्कुल में
पढाती हैं। औरवे मेरी आदर्श हैं।
हिन्दी स्कुल के सारे सदस्य बहुत
मेहनती व मदद करने वाले हैं। आज मैं
इतनी अच्छी हिन्दी उन्हीं के कारण लिख
रहा हूँ।

"भारत"

भारत में अलग-अलग तरह के
धर्म भाषाऐं और त्यौहार है। यह
सब विशेषताएँ भारत को
विशेष बनाती हैं। यहाँ बहुत
सारे त्यौहार मनाये जाते हैं।
इन सब के पीछे कोई-न-कोई

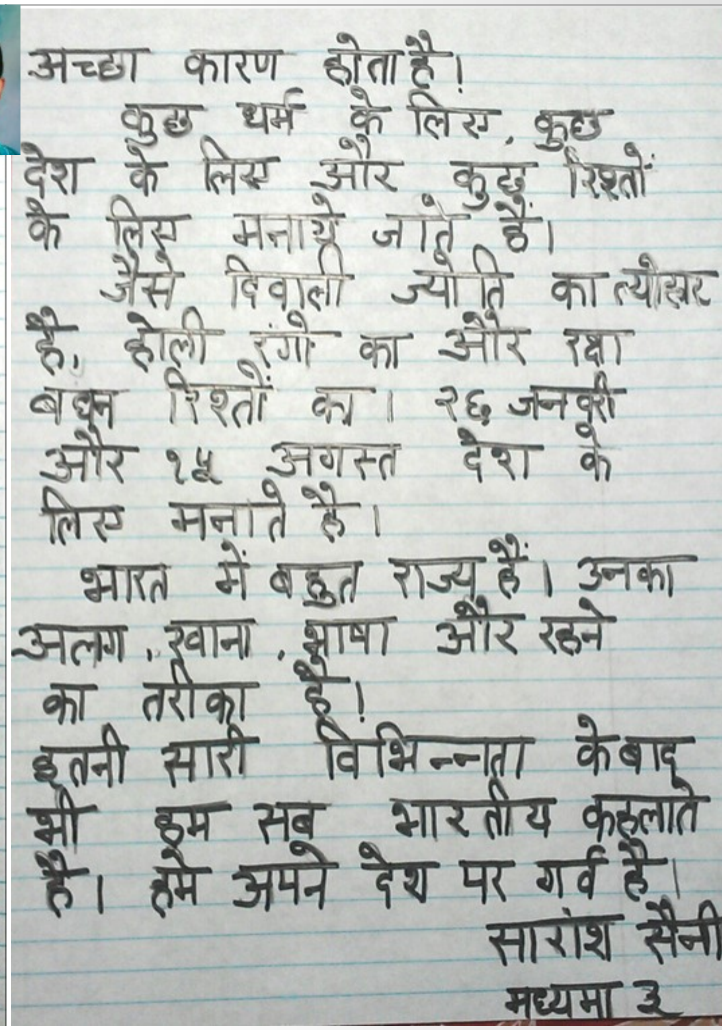

अच्छा कारण होता है।
कुछ धर्म के लिए, कुछ
देश के लिए और कुछ रिश्तों
के लिए मनाये जाते हैं।
जैसे दिवाली ज्योति का त्यौहार
है, होली रंगो का और रक्षा
बंधन रिश्तों का। २६ जनवरी
और १५ अगस्त देश के
लिए मनाते है।
भारत में बहुत राज्य हैं। उनका
अलग, खाना, भाषा और रहने
का तरीका है।
इतनी सारी विभिन्नता के बाद
भी हम सब भारतीय कहलाते
हैं। हमे अपने देश पर गर्व है।

सारांश सैनी
मध्यमा ३

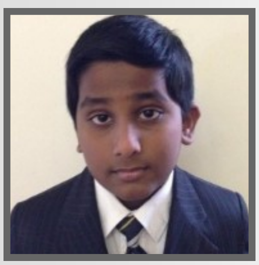

नितिन मारीपेडी हिन्दी यू.एस.ए. की एडिसन पाठशाला में प्रथमा-२ के विद्यार्थी हैं। नितिन नौ साल के हैं। इन्हें तैरना, आईस हाकी तथा टेनिस खेलना पसंद है।

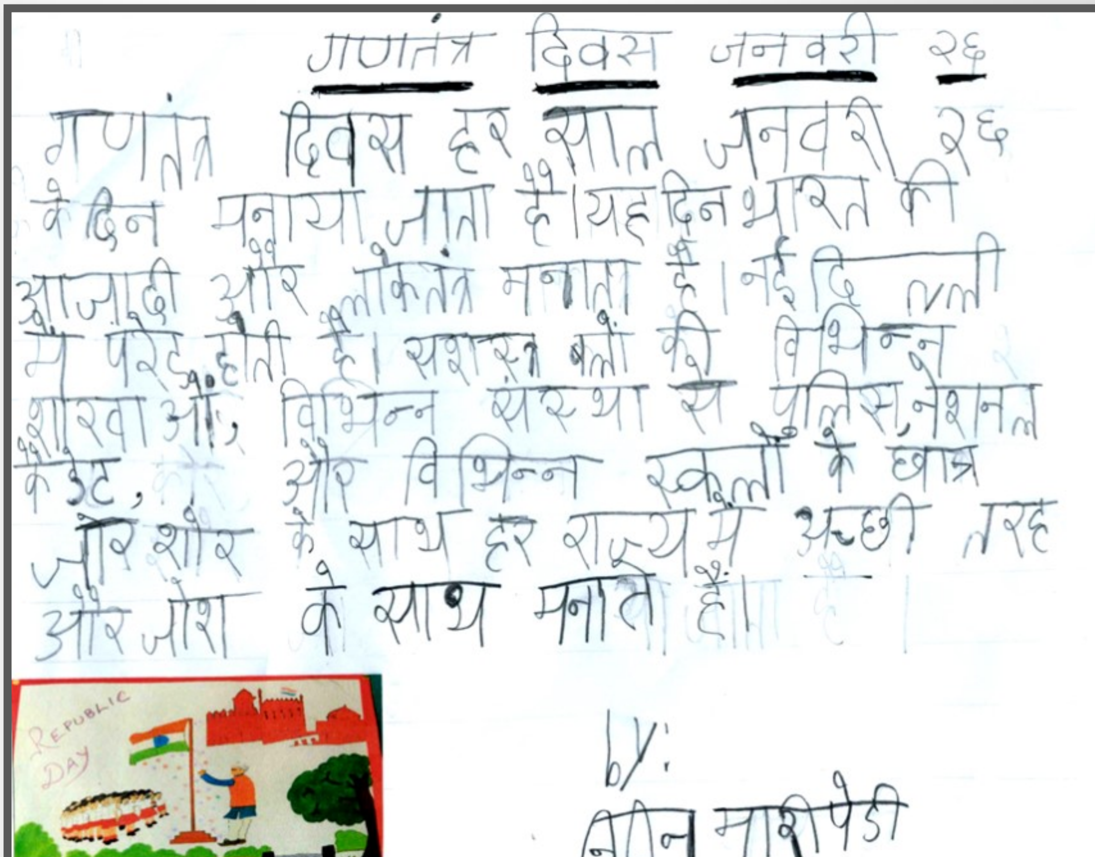

गणतंत्र दिवस जनवरी २६

गणतंत्र दिवस हर साल जनवरी २६
के दिन मनाया जाता है यह दिन भारत की
आजादी और लोकतंत्र मनाता है। नई दिल्ली
मे परेड होती है। सशस्त्र बलों की विभिन्न
शाखाओं, विभिन्न संस्था से पुलिस, नेशनल
कैडेट, और विभिन्न स्कूलों के छात्र
जोर शोर के साथ हर राज्य मे अच्छी तरह
और जोश के साथ मनाते हैं।

by:
नितिन मारीपेडी

मेरी हिन्दी कक्षा

मेरा नाम निखिल सिंह है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला में मध्यमा-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे चित्रकारी करना, ताइक्वांडो और बास्केटबाल खेलने में रुचि है। मैं हिन्दी कक्षा में जाना बहुत पसंद करता हूँ। मैंने हिन्दी कक्षा का एक चित्र बनाया है। आशा है कि आप सभी को मेरा चित्र पसंद आएगा।

Rita Dance Academy

A Premier Center of Excellence for Kathak Dance

Offers:

Kathak, Folk and Bollywood Dance Classes in your neighborhood

Artistic Director:

Rita Sharma from Jaipur gharana of Kathak has about 25 years of experience of teaching, performing and choreography. In last many years, her students have performed on several occasions in NJ, NY, PA, DE and VA. Her academy has got a wide appreciation in the field of Kathak and has won several Awards.

Classes offered in New Jersey and Pennsylvania

Main Studio:

1515 Finnegans Lane, North Brunswick, NJ 08902

Other Locations:

NJ: Marlboro and Edison Township

PA: Frazer / Malvern, and Horsham Township

For more information:

Visit: www.RitaDanceAcademy.com

Phone: 848-391-0518, 732-348-8805

e-mail: info@ritadanceacademy.com

RITA

Dance Academy

UNION COUNTY PEDIATRICS GROUP

817 RAHWAY AVE
ELIZABETH, NJ 07202
908-353-5750

102 JAMES STREET SUITE 303
EDISON, NJ 08820
732-662-3300

PEDIATRIC OFFICE

ACCEPTING PATIENTS FROM NEWBORN TO 21 YEARS

PROCEDURES DONE IN THE OFFICE

EKG, PFT, HEARING TEST, TYAMPOGRAM, BLOOD TEST

CALL FOR APPOINTMENT